श्री गुरु अंगद देव जी विशेषांक

 ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ 

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमति ज्ञान

पौष-माघ, संवत् नानकशाही ५४२
जनवरी 2011 वर्ष ४ अंक ५

संपादक — सिमरजीत सिंह — *एम. ए, एम. एस. सी.*

सहायक संपादक — सुरिंदर सिंह निमाणा — *एम. ए (हिंदी, पंजाबी, अंग्रेजी), बी. एड.*

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता

सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६

फोन: 0183-2553956-60, फैक्स: 0183-2553919



एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादकीय विभाग 304
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

सलोकु महला २ ॥
एह किनेही आसकी दूजै लगै जाइ ॥
नानक आसकु कांढीऐ सद ही रहै समाइ ॥
चंगै चंगा करि मंने मंदै मंदा होइ ॥
आसकु एहु न आखीऐ जि लेखै वरतै सोइ ॥१॥
महला २ ॥
सलामु जबाबु दोवै करे मुंढहु घुथा जाइ ॥
नानक दोवै कूड़ीआ थाइ न काई पाइ ॥२॥ *(पन्ना ४७४)*

'आसा की वार' में अंकित इन श्लोकों में दूसरे पातशाह श्री गुरु अंगद देव जी महाराज एक सच्चे सिक्ख सेवक का स्वभाव एवं आचरण बताते हुए गुरु के सम्मुख उसकी पूर्ण आज्ञाकारिता तथा उसके गुरु-हुक्मों को सत्य करके बिना किसी किंतु-परंतु के स्वीकारने तथा व्यवहार में लाने की निर्मल प्रेरणा बख्शिश करते हैं।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि यह प्यार कौन-सा प्यार हुआ जो अपने प्रियतम को छोड़कर किसी अन्य के साथ जा लगे? अर्थात् एक सच्चे सिक्ख या शिष्य अपने प्रियतम के साथ ही जुड़ा रहता है और किसी स्थिति में भी वह प्रियतम से अपनी सच्ची सांझ को टूटने नहीं देता। विचार को संपूर्णता प्रदान करते हुए गुरु जी कथन करते हैं कि प्रेमी उसी को कहते हैं जो सदैव प्रियतम के साथ समाया रहे, एक रूप हुआ रहे।

गुरु जी कहते हैं कि व्यक्त किये गए विचार-भाव के प्रतिकूल जाता हुआ प्रियतम के किये अच्छे काम को देखकर तो कहे कि यह अच्छा है और वह शिष्य स्वयं अपनी सांसारिक दृष्टि अथवा मनमति से प्रेरित होकर, प्रियतम द्वारा किये किसी अन्य काम को बुरा कह दे अर्थात् वह तो अच्छा काम था, परंतु यह मंदकार्य है जो ऐसे हिसाब-किताब में उलझ कर रह जाए अर्थात् गुरु-प्रियतम के द्वारा किये को अच्छा या बुरा होने की दलील में पड़ जाए वह प्रेमी नहीं कहलाता। विचार-भाव को और अधिक स्पष्ट करते हुए गुरु जी फरमान करते हैं कि जो शिष्य अपने गुरु को नमन करता है और उसके साथ जवाब भी करता है अर्थात् गुरु के द्वारा किये पर आशंका व्यक्त करता है वह शिष्य प्रारंभिक बिंदु से ही भूला-भटका हुआ है। ऐसे द्वंद के शिकार शिष्य के द्वारा गुरु के आगे किया नमन और की आशंका दोनों ही कर्म कूड़े अथवा झूठे हैं अर्थात् शिष्य का काम गुरु के निर्मल उपदेश को बिना रंचक मात्र आशंका के मानना तथा कमाना है। 



'गुरु-हुक्म' मानना तथा 'सेवा' करना ही जीवन का परम लक्ष्य हो!

किसी पदार्थक या आर्थिक लाभ की इच्छा से ऊपर उठकर मानवता के कल्याण के उद्देश्य को दृष्टि में रख कर किया जाने वाला कार्य 'सेवा' कहलाता है। सर्वप्रथम गुरु नानक पातशाह ने सच्चा आध्यात्मिक ज्ञान-अनुभव कई दशकों तक घर-परिवार की जरूरतों की पूर्ति से ऊपर उठकर मानवता की बेमिसाल सेवा कमाई, देश-विदेश में सिक्ख संगत और धर्मशालाओं का निर्माण अथवा संगठन करते हुए जन-साधारण को बहुत व्यापक स्तर पर मिल बैठने, नाम जपने, बांट कर छकने, दुख-सुख बांटने और सेवा-कार्य करने के लिए महान प्रयास किये। तत्पश्चात गुरु जी अपने द्वारा बसाये नगर करतारपुर में बस गए और यहां सिक्खी का एक महान प्रचार-केंद्र अस्तित्व में आया। यहां गुरु जी ने स्वयं कृषि का काम किया। गुरु-इतिहास बताता है कि गुरु जी द्वारा अपने हाथों से कृषि-कार्य मात्र परिवार की अन्न पूर्ति के लिए नहीं था, कृषि-कार्य में उपजाया अन्न-दाना और अन्य खाद्य-पदार्थ गुरु जी से भेंट-वार्ता करने आई संगत के लिए भी उपयोग में लाये जाते थे। गुरु जी की कीर्ति उस समय तक विस्तृत रूप में फैल चुकी थी। कुछ लोग उनको कृषि-कार्य करते हुए देखकर स्वेच्छा से इस सेवा-कार्य में लग जाते थे। भाई लहिणा जी ऐसे लोगों में से एक थे। गुरु-इतिहास में साखी प्रचलित है कि एक बार भाई लहिणा जी गुरु नानक साहिब के दर्शनार्थ करतारपुर आये और उन्होंने गुरु नानक साहिब तथा उनके साथ कुछ एक सिक्खों को धान के खेत में से खरपतवार निकालते हुए पाया। उस समय भाई लहिणा जी ने रेशमी वस्त्र पहने हुए थे। भाई लहिणा जी ने भी इस सेवा-कार्य में शामिल होने की इच्छा व्यक्त की तो इसका स्वागत करते हुए गुरु नानक साहिब द्वारा एक भारी गांठ उनके शीश पर रखवा दी गई। वे यह गांठ उठाकर जब गुरु जी के घर के आंगन में पहुंचे तो कीचड़ के छींटों से उनके रेशमी वस्त्रों की स्थिति अजीबो-गरीब थी। माता सुलक्खणी जी ने गुरु जी को उलाहना देते हुए कहा कि "यह आपने क्या किया? बेचारे के सिर पर कीचड़ भरी गांठ रखवा दी! देखिए, रेशमी वस्त्रों का क्या हाल हो गया है।" सतिगुरु ने वचन किया, "भलीए! ये कीचड़ नहीं, केसर के छींटे हैं।" समय पाकर ये वचन सत्य हुए। भाई लहिणा जी ने गुरु जी तथा गुरु-घर की ऐसी आदर्श सेवा कमाई कि आप सेवा का ही साकार रूप हो गए, सेवा की ऊंचाइयों को स्पर्श करते हुए आप गुरगद्दी के अधिकारी बन गए और भाई लहिणा जी श्री गुरु अंगद देव जी के नाम से सिक्ख पंथ के दूसरे गुरु के रूप में गुरगद्दी पर विराजमान हो गए। यह भी गुरु-घर की ही विशेषता है कि यहां निष्काम सेवा को सर्वाधिक सराहा जाता है और यह सेवा ही उत्तराधिकारी होने की सर्वप्रथम कसौटी बनती है।

श्री गुरु अंगद देव जी महाराज का गुरु-पदवी पाने से पहले का लगभग सात वर्ष का समय एक आदर्श सेवक के रूप में सेवा कमाने का समय है। भाई लहिणा जी ने इन सात वर्षों का एक-एक पल गुरु-हुक्मों की तामील करते हुए सफल किया। आप इस समय दिन-रात गुरु-सेवा में उपस्थित रहे। इतना समर्पण भाई लहिणा जी के ही हिस्से आ सका। यदि गुरु जी ने आधी रात को वस्त्र धोकर लाने का हुक्म किया तो भाई लहिणा जी ने तत्काल मैले वस्त्र उठा लिये,

नदी पर चले गए और धोकर उपस्थित कर दिये। यदि गुरु जी ने धर्मशाला की गिरी हुई दीवार का नव-निर्माण करने का हुक्म किया तो भी तत्काल गुरु-हुक्म को सिर-माथे पर माना और दीवार का नव-निर्माण कर दिया। यदि गुरु जी ने मृतक चूहिया को उठाकर बाहर फेंक आने का हुक्म किया तो भी रंचक-मात्र भी देरी न लगाई और चूहिया उठाकर ले गए। यदि कीचड़ में बर्तन फेंक कर उसे बाहर निकालने का हुक्म किया तो भी तत्काल कीचड़ में उतर गए और बर्तन निकाल कर जल से धोकर गुरु जी के सम्मुख कर दिया। अंतिम परीक्षायें तो बहुत ही कठिन हो गई थीं जिनके बारे में विवरण सिक्ख इतिहास के विस्मादी कांड हैं। भाई लहिणा जी ने गुरु जी के द्वारा धारण किये बाहरी क्रोध-आवेश को भी पूर्णत: शांत रहते हुए सहन् किया और गुरु-हुक्म अनुसार मुर्दा खाने के लिए भी तत्पर हो गए भले ही यह सतिगुरु द्वारा बरताई गई लीला मात्र थी।

एक और बेहद विस्मादी बात यह है कि भाई लहिणा जी गुरगद्दी पर विराजमान होकर जहां सिक्ख संगत को निर्मल उपदेश बख्शिश करते हैं वहां आपने सिक्ख-बच्चों को स्वयं गुरमुखी पढ़ाने-सिखाने का दायित्व भी अपने जिम्मे लिया और खडूर साहिब में यह सेवा-कार्य गुरु जी ने कई वर्षों तक निभाया। गुरमुखी लिपि के विकास द्वारा ही गुरु नानक नाम-लेवा सिक्ख पंथ गुरबाणी की महान धरोहर को पढ़ने और कमाने के योग्य हो सका। गुरु जी द्वारा मल्ल अखाड़े की स्थापना करके युवा सिक्खों की कुश्तियों की व्यवस्था करना और गुरु नानक पातशाह द्वारा चलाई लंगर-परंपरा का अधिक से अधिक विस्तार करना तथा इस प्रबंध में अपने महिल माता खीवी जी को इसकी निगरानी की सेवा प्रदान करके इसके स्तर तथा गुणवत्ता को ऊपर उठाना भी एक प्रकार की अद्वितीय कोटि की सेवा ही तो है।

मुख्यत: भाई लहिणा जी की ही मिसाल को सम्मुख रखकर धर्मशालाओं तथा गुरुद्वारों में सिक्ख संगत भांति-भांति की सेवा कमाती चली आ रही है। प्रत्येक युग में उस युग की जरूरतों के अनुसार सेवा के कई रूप दृश्टव्य होते हैं। कभी समय था जब पानी ढोने और लकड़ियां एकत्रित करके गुरु-घर में लाने की सेवा बहुत प्रचलित थी तथा भरे दीवान में हाथों से बड़े पंखों को झुलाते हुए संगत की सेवा करने के दृश्य प्राय: देखने को मिलते थे। गुरु-घर में तबेले भी होते थे और घोड़ों को घास-चारा आदि जुटाने तथा लीद उठाने की सेवाएं भी चलती थीं। आज वे अत्यंत दुर्लभ हैं। आज सेवा के अन्य कई रूप देखने में आते हैं। श्री हरिमंदर साहिब के गुरु रामदास लंगर में बहुत बड़ी संख्या में सिक्ख सेवक लंगर वितरित करने की सेवा के साथ-साथ जूठे बर्तनों को साफ करने, सब्जियां काटने आदि की सेवा जिस निष्ठा एवं समर्पण के साथ निभाते हैं उसकी झलक-मात्र दर्शनार्थ आए यात्रियों को निश्चय ही विस्माद में ले जाती है। जोड़ों (जूतों) की संभाल की सेवा का भी अपना ही नजारा है।

वस्तुत: सेवा ही वो दात है जो सिक्ख के हृदय में अहंकार को पूर्णत: मिटा सकती है, उसको उस हद तक नम्रता का धारक बना सकती है जिस हद तक गुरु पातशाहों ने उससे यह उम्मीद रखी थी। गुरु-घर में की सेवा हमको मानवता की सेवा करने का भी पाठ पढ़ाती है। यह सेवा अपने ही घर-परिवार में अपने सिर आती जिम्मेदारियां अच्छी तरह निभाने के लिए भी तैयार करती है, हमको अपने माता-पिता और बुजुर्गों की सेवा हेतु भी प्रेरित करती है। समस्त मानवता हमें सेवा के लिए बुलाती है। मानवता की सेवा करने के लिए भी हमें तत्पर रहना होगा, तभी हम श्री गुरु अंगद देव जी की शिक्षाओं को मानने वाले सच्चे सिक्ख हो सकते हैं। 

श्री गुरु अंगद देव जी सम्बंधी ग्रंथ व स्रोत-पुस्तकें

*-डॉ. गुरमेल सिंह**

उन्नीसवीं सदी के अंतिम दशक से लेकर वर्तमान समय तक श्री गुरु अंगद देव जी के जीवन, बाणी, विचारधारा या अन्य कई पक्षों पर अनेक विधायों--'काव्य, उपन्यास, खोज पेपर आदि' में काम हो चुका है। खडूर साहिब तथा अन्य स्थानों पर मनाई गई श्री गुरु अंगद देव जी की ५०० वर्षीय (१५०४-२००४) जन्म-शताब्दी को मुख्य रखकर अनेकों पुस्तकों, पेपर, ट्रेक्टस, खोज निबंधों आदि की रचना हुई है। गुरु जी से सम्बंधित हुए विशाल कार्य में से उन कुछ रचनाओं की जान-पहचान कराई जा रही है जो केवल श्री गुरु अंगद देव जी की बाणी, जीवन, विचारधारा या किसी अन्य पक्ष से सीधे तौर पर सम्बंधित हैं:-

(अ) ग्रंथ/पुस्तकें

१) जन्म-साखी श्री गुरु अंगद देव जी दी, ज्ञानी सरदूल सिंघ, धर्म प्रचार कमेटी (शिरोमणि गु: प्र: कमेटी), श्री अमृतसर, १९९९, दूसरी बार।

पहले यह पुस्तक अप्रैल १९१४ ई में खालसा कालेज कौंसिल, अमृतसर द्वारा प्रकाशित की गई थी। ज्ञानी सरदूल सिंघ ने दस गुरु साहिबान की दस छोटी जन्म-साखियों की श्रृंखला में इस ग्रंथ को रचा। कुल १४ कांडों/ अध्यायों की यह रचना ज्यादातर गुरमुखी स्रोतों पर आधारित है जिसे आधुनिक (१९१४ ई) शैली में सिक्ख संगत एवं विद्यार्थियों के स्तर पर रचना कर कथा-रस में पेश किया गया है।

२) गुरु अंगद देव जी, डॉ. तारन सिंघ, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला, १९७५

८ अध्यायों में बंटी इस महत्वपूर्ण रचना में डॉ. तारन सिंघ ने श्री गुरु अंगद देव जी के जीवन, समकालीन हालात/दशा, प्रतिभा-विकास, बाणी-सिद्धांत, रचना-सर्वेक्षण, विचारधारा, शैली आदि के बारे में भरपूर जान-पहचान दी है।

३) कुदरती नूर, प्रिं. सतिबीर सिंघ, न्यू बुक कंपनी, माई हीरां गेट, जलंधर, १९८१.

कुल ८ अध्यायों में बंटी इस पुस्तक में श्री गुरु अंगद देव जी की जीवनी रोचक शैली में पेश की गई है। श्री गुरु अंगद देव जी के जीवन से सम्बंधित घटनाओं/साखियों को तार्किक रूप देने की कोशिश भी की गई है।

४) जीवन श्री गुरु अंगद देव जी, बलजीत कौर तुलसी, श्री गुरु तेग बहादर चेरीटेबल ट्रस्ट, १००४, सेक्टर २१-बी, चंडीगढ़, जुलाई १९८२.

यह नाटक तथा कहानी-शैली में श्री गुरु अंगद देव जी का जीवन-वृत्तांत है।

५) जे सउ चंदा उगवहि, उपरोक्त, १९८३

श्री गुरु अंगद देव जी की बाणी (६३ श्लोक) का काव्य-भाष्य तथा अर्थ-विवरण है।

६) बैठि खडूरे जोति जगाई, डॉ. गुरचरन सिंघ जीरा, भाई चतर सिंघ-जीवन सिंघ, अमृतसर, २००१

२० अध्यायों में बंटी इस पुस्तक में गुरु साहिब की स्रोतों पर आधारित जीवनी, यात्रा (मालवे की) तथा विचारधारा के अलावा गुरु-शख्सियत की उपमा में उच्चारण किए गए बंद भी शामिल हैं। गुरु जी की यादगारें, कुछ प्रमुख

**श्री गुरु ग्रंथ साहिब अध्ययन विभाग, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला-१४७००२*

सिक्खों सहित अन्य घटनावली भी शामिल है।

७) *श्री गुरु अंगद देव जी,* महिंदर सिंघ जोश, सिक्ख मिशनरी कालेज, लुधियाना, सितंबर, २००३

इस रचना में गुरु साहिब की जीवन-गाथा तथा उनकी बाणी में से प्रकट होते सिद्धांतों का उल्लेख किया गया है।

८) *पारसु होआ पारसह्,* कुलवंत सिंघ, बाबा सेवा सिंघ, डेरा कार सेवा, खडूर साहिब, २००४

कहानीनुमा शैली में जीवन-वृत्तांत की पेशकारी है।

९) *गुरु अंगद सिधांत प्रकाश अते जीवन,* करमजीत सिंघ औजला, भाई चतर सिंघ-जीवन सिंघ, अमृतसर, मार्च २००४

जैसे कि पुस्तक के नाम से ही सांकेतिक है इस पुस्तक में श्री गुरु अंगद देव जी के जीवन, रचना एवं विचारों को साधारण शैली में पेश किया गया है।

१०) *गुरु अंगद देव साहिब जी : द्रिशटि-दरशन,* जोगिंदर सिंघ, गुरु गोबिंद सिंघ स्टडी सर्कल, लुधियाना, अप्रैल २००४

कर्त्ता ने गुरु साहिब का संक्षेप जीवन देकर उनके व्यक्तित्व को भट्ट-बाणी, रामकली की वार तथा भाई गुरदास जी की वारों में से सामने लाने की कोशिश की है। कुछ अध्यायों में गुरु, हउमै, नेहु आदि संकल्पों के अलावा बाणी के सार अथवा कला पक्ष को उद्घाटित करने का साधारण यत्न भी किया गया है।

११) *गुरु अंगद देव जी : संगीत दरपण,* प्रो करतार सिंघ, धर्म प्रचार कमेटी (शिरोमणि गु: प्र: कमेटी), श्री अमृतसर, जुलाई २००४

श्री गुरु अंगद देव जी की बाणी के अलग-अलग श्लोक, संबंधित रागों, लय, ताल आदि का ब्यौरा दिया गया है।

१२) *श्री गुरु अंगद देव जी : जीवन ते विचारधारा,* डॉ गोबिंद सिंघ लांबा, पंजाबी पब्लिकेशन, पटियाला, २००५

इस पुस्तक में गुरु साहिब की कहानीनुमा जीवन-गाथा देकर बाणी, विचारधारा के कुछ आम पहलू आरंभ किए गए हैं।

१३) *लहिणा नानक दा गहिणा,* डॉ सरूप सिंघ अलग्ग, अलग्ग शबद यग, लुधियाना, २००४

साधारण जीवन-गाथा के बिना इक्का-दुक्का विद्वानों के गुरु अंगद साहिब के बारे में विचारों का संग्रह किया गया है।

१४) *बाबाणै घरि चानण लहिणा,* ज्ञानी जसवंत सिंघ परवाना, न्यू बुक कंपनी, जलंधर, २००४

कथा-शैली में श्री गुरु अंगद देव जी की साखियां दी गई हैं।

१५) *जीवन-ब्रितांत श्री गुरु अंगद देव जी,* प्रो साहिब सिंघ, सिंघ ब्रादर्स, अमृतसर, १९६८

ऐतिहासिक पक्ष से गुरु साहिब का संक्षेप जीवन-वृत्तांत तथा विचारधारा पेश की गई है।

(आ) ट्रैक्टनुमा जीवनियां

१) *जीवन श्री गुरु अंगद साहिब जी,* ज्ञानी दित्त सिंघ, लाहौर बुक शाप, लाहौर, १९१४

यह दुर्लभ पुस्तक भाषा विभाग, पटियाला की सम्बंधित लायब्रेरी में ३८८ संख्या के अधीन सुरक्षित है।

२) *जीवन श्री गुरु अंगद देव जी,* धनवंत सिंघ सीतल, सीतल साहित भवन, अमृतसर, १९५३

यह दुर्लभ पुस्तक भाषा विभाग, पटियाला की सम्बंधित लायब्रेरी में २९७५ संख्या अधीन सुरक्षित है

३) *जीवन श्री गुरु अंगद देव जी,* गुरबखश सिंघ, अमृतसर, १९१४

यह दुर्लभ पुस्तक पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला की मुख्य लायब्रेरी में भाई मोहन सिंघ वैद्य कलेक्शन में सुरक्षित है। देखो 33W J04153C5.

४) *श्री गुरु अंगद दरशन,* तेजा सिंघ धूंदां, हरनाम सिंघ, खडूर साहिब, मार्च, १९३३
५) *पवित्र जीवन गुरु अंगद साहिब,* नरिंजन सिंघ, गुरु दशमेश सभा, मोहल्ला गुरु अंगदपुरा, रावलपिंडी (पाकिस्तान), १९४५
६) *श्री गुरु अंगद देव जी दा जीवन-ब्रितांत,* खालसा ट्रेक्ट सोसायटी, अमृतसर, १९१८
७) *जीवन श्री गुरु अंगद देव जी महाराज,* ज्ञानी नरैण सिंघ जी, भाई चतर सिंघ-जीवन सिंघ, अमृतसर।
८) *गुरु अंगद देव जी : जीवन अते संदेश,* डॉ. हरबंस सिंघ, धर्म प्रचार कमेटी, दिल्ली सिक्ख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, नई दिल्ली, अप्रैल, २००४
९) *धापिआ लहिणा जीवदै,* डॉ. जगजीत सिंघ, गुरमति प्रचार सेवा सोसायटी, चंडीगढ़, २००४
१०) *दीन दुनी दा साहिब : गुरु अंगद देव जी,* सिक्ख मिशनरी कालेज, लुधियाना, २००४
११) *बाबाणै घरि चानणु लहिणा,* गुरुद्वारा श्री गुरु सिंघ सभा, कपूरथला, २००४
१२) *फेरि वसाइआ फेरुआणि सतिगुरि खाडूरु,* रूप सिंघ, धर्म प्रचार कमेटी (शिरोमणि गु: प्र: कमेटी), श्री अमृतसर, २००४
१३) *श्री गुरु अंगद देव जी दा आतमक दरशन,* डॉ. तारन सिंघ, धर्म प्रचार कमेटी (शि: गु: प्र: कमेटी), श्री अमृतसर, २००४
१४) *श्री गुरु नानक देव जी दी दूजी जोति: श्री गुरु अंगद देव जी,* सुखदेव कौर (गिल), २५, अर्बन अस्टेट, फेस-१, पटियाला, २००४

(इ) अंग्रेजी पुस्तकें

१) *Guru Angad : The Second Nanak,* M.L. Peace, Ratan Kaur, 25, Rithriyan Lane, P.O. Basti Gujran, Jalandhar City, 1963.

Bharat's Heroes and Heroins Series No. 3 के अधीन रचित इस पुस्तक में उनकी जीवनी-देन के अलावा श्लोकों का अंग्रेजी अनुवाद भी है।

२) *The Liberated Soul : The Life and Bani of Guru Angad Dev,* Dr. Harbans Lal Agnihotri and Chand R. Agnihotri, Gopal Prakashan, 732/5, Bank Colony, Hisar (Hr.), 2002.

सिक्ख धर्म के प्रारंभिक नियमों के बारे में बताकर गुरु साहिब जी की जीवनी तथा श्लोकों का (अंग्रेजी में) साधारण टीका है।

३) *Spirituo-Ethical Philosophy of Guru Angad Dev,* Dr. Jodh Singh, Punjabi University, Patiala, 2004.

श्री गुरु अंगद देव जी का जीवन, बाणी-अनुवाद तथा भट्ट साहिबान, भाई सत्ता जी, भाई गुरदास जी, भाई नंद लाल जी, प्रो. पूरन सिंघ आदि के शब्दों द्वारा व्यक्तित्व का चित्रण किया गया है।

४) *Prophet of Devotion : Life and Teachings of Sri Guru Angad Dev,* Dr. Jaswant Singh Neki, Satnic Media Pvt. Ltd., City Centre, Amritsar, 2004

गुरु अंगद साहिब की सचित्र जीवनी तथा बाणी मूल-पाठ के अलावा हिंदी, अंग्रेजी, लिप्यांतरण तथा अनुवाद भी है और अंत में शेष बाणीकारों द्वारा व्यक्तित्व का चित्रण पेश किया गया है।

५) *Stories of Guru Angad,* Sikh Tract Society, Lahore, 1910

६) *Life of Sri Guru Angad Dev Ji,* Sikh Tract Society, Lahore, 1917

७) *The Life Story of Guru Angad Dev Ji (An Illustrated Spiritual Journey),* Dr. Raghbir Singh and Roop Singh, Baba Sewa

Singh Kar Sewa Wale, Khadoor Sahib, 2004

गुरु साहिब की जीवनी, बाणी-अनुवाद तथा लिप्यांतरण दिया गया है।

८) *The Life and Teachings of Guru Angad Dev Ji,* Dr. Mayherwaan Singh, International Supreme Council of Sikhs, U.K., 2004

जीवन, शिक्षा के बिना वंशावली भी दी गई है।

(ई) कुछ संपादित कार्य

१) *गुरु अंगद देव : जीवन ते बाणी,* (संपा.) बीरइंदर सिंघ, अमृत फाउंडेशन, नई दिल्ली, २००४

इसमें गुरु अंगद साहिब के जीवन, शख्सियत अथवा बाणी के बारे में १० संपादित पेपर हैं:

(१) गुरु अंगद देव : जीवन ते बाणी, डॉ. महिंदर कौर (गिल)
(२) गुरु अंगद देव जी दी शखसीअत, डॉ. हरपाल सिंघ (पंनू)
(३) झुलै सु छतु निरंजनी . . ., डॉ. सुरजीत कौर जौली
(४) गुरु अंगद देव जी दे समें सिक्ख लहर, डॉ. परमवीर सिंघ
(५) गुरु अंगद देव जी दी महानता, डॉ. वजीर सिंघ
(६) झुलै सु छतु निरंजनी, सरवंत सिंघ घुमाण
(७) सेवा ते निमरता दे पुंज गुरु अंगद देव जी
(८) माता खीवी जी दा लासानी जीवन ते घालणा, डॉ. महिंदर कौर (गिल)
(९) जीवन-साखीआं श्री गुरु अंगद देव जी, बीरइंदर सिंघ
(१०) फेरि वसाइआ फेरुआणि, गुरप्रीत सिंघ निआमीआं

२) *गुर अंगदु गुरु अंगु ते,* (संपा.) डॉ. कुलवंत कौर, वैलविश पब्लिशर्स, मौर्या एन्कलेव, दिल्ली, सितंबर, २००४

लगभग १९ लेखों/निबंधों के इस संपादित संग्रह में १४ निबंध गुरु अंगद साहिब से सम्बंधित हैं :

(१) भारतीय चिंतन-परंपरा ते गुरु अंगद - बाणी, डॉ. कुलदीप सिंघ धीर
(२) गुरु अंगद देव : उपमावाचक साहित्यक संदर्भ
(३) गुरु अंगद बाणी : दार्शनिक अध्ययन, डॉ. शमशेर सिंघ
(४) गुरु अंगद देव सरबांगी प्रतिभा, स. ओअंकार सिंघ
(५) बैठ खडूरे जोति जगाई, कुलवंत कौर
(६) लोक-मुहावरे राहीं उदात प्रगटावा, डॉ. तरलोक सिंघ आनंद
(७) मनुक्खी कदरां-कीमतां ते गुरु अंगद देव, डॉ. हुकम चंद राजपाल
(८) गुरु अंगद-दरबार दी कीरतन परंपरा, डॉ. जसबीर कौर
(९) गुरु अंगद बाणी दी कलातमकता, सतिंदर सिंघ नंदा
(१०) गुरु अंगद बाणी दी अजोकी सारथिकता, डॉ. गुरमुख सिंघ
(११) तीजा नेतर खोलण वाले गुरु अंगद देव, स. कुलदीप सिंघ उगाणी
(१२) उच्च प्रतिभा दा प्रकाश, स. कुलवंत सिंघ
(१३) गुरु अंगद देव दी अधिआतमिक यात्रा, डॉ. अमतजोत कौर
(१४) जिसु पिआरे सिउ नेहु . . ., प्रो. बलविंदर पाल सिंघ

३) *महिमा श्री गुरु अंगद देव जी,* (संपा.) डॉ. नवरत्न कपूर, प्रो. साहिब सिंघ गुरमति ट्रस्ट, पटियाला, २००४

गुरु साहिब का संक्षेप जीवन देकर भट्ट साहिबान के सवैये, भाई सत्ता-भाई बलवंड जी, श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी, भाई गुरदास जी, भाई नंद लाल जी गोया, कवि कंकण, कवि सैनापती, भाई केसर सिंघ छिब्बर, श्री सुखबसी राम बेदी, ज्ञानी गिआन सिंघ तथा कवि संतरेण प्रेम सिंघ आदि की लिखतों में से गुरु साहिब का जीवन/ व्यक्तित्व चित्रित किया गया है।

(उ) बाणी-सटीक

१) *सलोक गुरु अंगद साहिब सटीक,* प्रो. साहिब सिंघ, सिंघ ब्रदर्स, अमृतसर, १९४८

२) *श्री गुरु अंगद देव जी : बाणी सटीक,* गुरबाणी इसु जग महि चानणु प्रचार ते प्रसार संसथा, मोहाली, अप्रैल, २००४

३) *गुरु अंगद दीअउ निधानु,* ज्ञानी जोगिंदर सिंघ तलवाड़ा, सिंघ ब्रदर्स, अमृतसर, मार्च, २००४

४) *बाणी : साहिब श्री गुरु अंगद देव जी,* धर्म प्रचार कमेटी (दिल्ली सिक्ख गु: प्र: कमेटी), दिल्ली, २००४ (केवल मूल पाठ)

५) *बाणी गुरु अंगद देव जी (हिंदी),* भाषा विभाग, पटियाला (केवल मूल पाठ)

६) *बाणी गुरु अंगद देव जी,* (मूल पाठ), तुक ततकरा, अनुक्रमणिका तथा कोश, (संपा.) अमर सिंघ तथा दविंदर सिंघ राज, नानक प्रकाश पत्रिका, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला, दिसंबर, १९९५

७) *बाणी श्री गुरु अंगद देव जी,* लाल सिंघ, अमृतसर।

यह दुर्लभ पुस्तक पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला की मुख्य लायब्रेरी के दुर्लभ विभाग में २९४, ६६३२, LAB संख्या पर सुरक्षित है।

८) *बाणी श्री गुरु अंगद देव जी सटीक,* टीकाकार प्रीतम सिंघ, पंजाबी बुक शॉप, अमृतसर, १९४९

(उपरोक्त, संख्या २७४.६६३२ PRB)

९) *बाणी श्री गुरु अंगद देव जी,* (टीकाकार) स. निहाल सिंघ रस, भाई जवाहर सिंघ किरपाल सिंघ, बाजार माई सेवां, अमृतसर, १९५०

(ऊ) थीसिस (अप्रकाशित)

१) *गुरु अंगद देव जी दी बाणी विच प्रमुख सिधांत,* खोजार्थी गिआन सिंघ, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला, १९९८ (एम. ए के लिए)

२) *गुरु अंगद देव जी : जीवन ते रचना,* (उपरोक्त)

३) *गुरु अंगद देव : जीवन ते रचना : एक विशलेषणातमक अधिऐन,* खोजार्थी कवलजीत कौर, गुरु नानक देव यूनीवर्सिटी, अमृतसर, १९९७-९८, (एम. ए के लिए)

४) *श्री गुरु अंगद देव जी दी बाणी दी शाबदिक अनुप्रसंगिकता,* खोजार्थी कमलजीत कौर, गुरु नानक देव यूनीवर्सिटी, अमृतसर, १९९५ (एम. ए आनर्ज के लिए)

५) *गुरु अंगद देव जी दी बाणी दा विशा-विधान,* खोजार्थी हरवंत कौर, गुरु नानक देव यूनीवर्सिटी, अमृतसर, १९९५ (एम. फिल. के लिए)

६) *गुरु अंगद देव अते गुरु तेग बहादर जी दे सलोकां दा तुलनातमिक अधिऐन,* खोजार्थी कुलबीर सिंघ, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला, १९८९ (एम. फिल. के लिए)

७) *बाणी गुरु अंगद साहिब : साहितिक अधिऐन,* खोजार्थी नवजीत कौर रिंकू, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला, १९८७ (एम. फिल. के लिए)

८) *गुरु अंगद साहिब जी दा सिखिआ दरशन,* खोजार्थी रणजीत सिंघ, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला, १९७३ (एम. एड. के लिए)

(ए) पत्रिकाओं के विशेष अंक

यहां दिए जा रहे विशेषांकों में प्रकाशित पेपर गुरु अंगद साहिब के जीवन, व्यक्तित्व, प्रतिभा, देन, बाणी, रचना-सर्वेक्षण, सिद्धांत, कला पक्ष, तुलना

(शेष पृष्ठ १९ पर)

'तवारीख गुरू खालसा' में श्री गुरु अंगद देव जी का जीवन व व्यक्तित्व

*-डॉ. परमवीर सिंघ**

श्री गुरु अंगद देव जी ने परमात्मा का संदेश जनसाधारण तक पहुंचाने के लिए लम्बी प्रचार-यात्राएं कीं, बाणी की रचना कर 'धुर की बाणी' के संदेश को पोथी रूप में संभाला तथा इस संदेश के सदीवी रूप से प्रचार व प्रसार के लिए दूर-दूर तक जाकर संगत की स्थापना की और इस महान कार्य को सुचारू रूप से आगे बढ़ाने के लिए अपने उत्तराधिकारी की नियुक्ति की।

श्री गुरु नानक देव जी के उत्तराधिकारी श्री गुरु अंगद देव जी थे, जिनका पहला नाम भाई लहिणा जी था। भाई लहिणा जी का जन्म 'मत्ते दी सरां' (सराय नागा, जिला मुक्तसर, पंजाब) में हुआ था। बादशाह बाबर के आक्रमण के बाद यह गांव लूट लिया गया तथा यहां के निवासी अन्य जगहों पर जाने के लिए मजबूर हो गए। इस उजड़े हुए गांव को एक उदासी नांगा साधू ने पुन: बसाया, इसलिए इसे 'नागे की सराय' या 'सराय नागा' भी कहा जाता है। 'तवारीख गुरू खालसा' का लेखक ज्ञानी गिआन सिंघ बताता है कि "फेरूमल भी हरीके गांव जा बसा। फिर उसकी बहन बीबी फिराई, जो माझा देश में 'खहरिआं (खहरा-एक गोत्र) दी खडूर' में ब्याही हुई थी, उस कारण तथा यहीं पर भाई लहिणा जी का विवाह भी देवीचंद की बेटी बीबी खीवी के साथ १६ मार्गशीर्ष सं. १५७६ को हो चुका था, इसी कारण फेरूमल अपने बाल-बच्चे साथ लेकर वहीं जा बसा और किराने की दुकान करके शाही व्यापार करने लगा।" भाई लहिणा जी धर्म का उद्देश्य तथा मन की शांति देवी की पूजा में से ढूंढने का यत्न करते थे। उन्होंने यह संस्कार अपने पिता भाई फेरूमल से ग्रहण किए थे। लेखक बताता है कि "फेरूमल देवी का भक्त था। हर वर्ष परिवार को साथ लेकर वैष्णो देवी के दर्शन को जाता था। संवत् १५८३ को भाई फेरूमल के अकाल चलाणे के बाद भाई लहिणा जी भी देवी के दर्शनों को जाने लगे।

जिंदगी का कोई भी नियम धारण करते समय हठ करना पड़ता है, फिर उसकी आदत बन जाती है तथा वही आदत मानवी स्वभाव के रूप में उजागर होती है। धर्म के क्षेत्र में किये जाने वाले कार्य भी इसी लगन द्वारा किये जाते थे। सर्वप्रथम धर्म का कार्य करते समय हठ अवश्य करना पड़ता है लेकिन धीरे-धीरे वो जीवन में इस तरह बस जाता है कि उसके बिना जीवन अधूरा लगने लगता है। धर्म का जो भी कार्य मनुष्य करने लग जाता है, फिर उसे बदलना कठिन हो जाता है। बाबा फरीद जी की बाणी में से ऐसे अंश देखने को मिलते हैं जिनमें वे कहते हैं कि जवानी की आदतें बुढ़ापे में बदलनी कठिन होती हैं, इसलिए जिन्होंने जवानी में प्रभु-सिमरन नहीं किया, उम्र के एक पड़ाव में पहुंचने के बाद उसे जीवन में धारण करना कठिन हो जाता है:

फरीदा काली जिनी न राविआ धउली रावै कोइ ॥

**सिक्ख विश्वकोश विभाग, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला-१४७००२*

करि सांई सिउ पिरहड़ी रंगु नवेला होइ ॥
(पन्ना १३७८)

भाई लहिणा जी के मन में भी देवी-पूजा दृढ़ हो चुकी थी, मगर प्रभु की बख्शिश का सदका वो गुरु-घर के साथ जुड़कर अकाल पुरख के मार्ग के राही बने। भाई जोध जी उन्हें गुरु-घर के साथ जोड़ने का साधन बने। लेखक बताता है कि "एक जोधा (जोध) नामक जट्ट बाबे नानक जी का उपदेशी खडूर में बसता था। अमृत वेले स्नान कर आसा की वार का उच्चारण अति मीठी सुर के साथ किया करता था। (भाई) लहिणा जी का घर पास ही था, हमेशा सुनते-सुनते इन्हें भी पूर्व संस्कारों का सबब प्रेम जाग पड़ा।" भाई लहिणा जी के मन में गुरु नानक साहिब की बाणी ने प्रेम पैदा कर दिया।

भाई लहिणा जी के मन में गुरु-प्रेम की इच्छा इतनी ज्यादा प्रबल हो चुकी थी कि अब उनका मन किसी अन्य तरफ भटकने की बजाय गुरु-दर्शनों के लिए जागृत हो चुका था। इस बार जब वे साथियों समेत देवी-दर्शनों को गए तो राह में करतारपुर में चले गए। गांव के बाहर ही गुरु नानक साहिब उन्हें मिल गए। भाई लहिणा जी घोड़े पर थे। गुरु जी ने उन्हें अपने पीछे आने के लिए कहा। लेखक बताता है कि (भाई) लहिणा जी घोड़ी पर तथा बाबा जी पैदल, बातें करते हुए जब धर्मशाला के निकट पहुंचे तो (भाई) लहिणा जी घोड़ी बांधने व काठी उतारने लगे तो बाबा जी हाथ-पैर धोकर गुरगद्दी पर जा बैठे। जब (भाई) लहिणा जी ने चार-पांच साथियों के साथ परशादा छककर बाबा जी के दीदार पाए तो गुरु जी को पहचान कर (भाई) लहिणा जी बहुत लज्जित तथा विनम्र होकर हाथ जोड़कर बोले, "मैथों भारी अवज्ञा होई जो आप पैरीं (पैदल) ते मैं असवार, एह भुल्ल बख्शो।" गुरु जी बोले, "तैनूं करतार ने बखशिआ है।"

श्री गुरु नानक देव जी अलाही पुरुष थे जिसका प्रमाण उनकी अपनी बाणी में से मिल जाता है : *"अपरंपर पारब्रहमु परमेसरु नानक गुरु मिलिआ सोई जीउ ॥"* इसका तात्पर्य है कि गुरु जी ने कोई सांसारिक गुरु धारण नहीं किया बल्कि उन्हें अकाल पुरख की बख्शिश सीधे तौर पर प्राप्त थी। गुरु साहिब के जीवन से सम्बंधित जन्म-साखियां ऐसी घटनाओं से भरी हुई हैं जो कि उनकी शख्सियत को आम व्यक्ति से उच्च सिद्ध करती हैं। करतारपुर में पहले दर्शन से ही निहाल हो जाने वाले भाई लहिणा जी मन के सब विचारों को त्याग कर गुरु जी के चरणों के साथ जुड़ गए। गुरु जी के हर हुक्म को जीवन में धारण करने वाले भाई लहिणा जी को अनेक परीक्षाओं में से गुजरना पड़ा। कीचड़ से सनी चारे की गांठ उठाना, घोर सर्दी में धर्मसाल की गिरी दीवार को रात समय बनाना आदि साखियां उनकी गुरु-प्रति दृढ़ता एवं निष्ठा का प्रगटावा करती हैं।

गुरु नानक साहिब ने भाई लहिणा जी को गुरमति में पूरी तरह लीन जानकर उन्हें गुरगद्दी की बख्शिश कर दी। लेखक बताता है कि "जब गुरु नानक देव जी ने भाई लहिणा जी को सुध गुरिआई के लायक देख लीता तां बाबे जी ने बहुत खुश हो के भाई लहिणा जी नूं भुजा विच्च घुट्ट के गल नाल ला लीता अते बचन कीता अंगदा! तैं असानूं अंग दित्ता सी हुण असां तैनूं आपणा अंग दे के तेरा नां अंगद रखिआ तूं अज्ज तों अंगद होया ते सारे संसार समुंद्र थीं तारन दा मलाह होया।" इतने से ही (गुरु) अंगद देव जी के कपाट खुल गए,

ब्रह्म का ज्ञान सब साक्षात हो गया, गुर-मंत्र जपने की तथा उपदेश-कथन की सब रीति तो पहले ही समझा रखी थी, गुरु नानक साहिब द्वारा भाई लहिणा जी को गुरु अंगद देव जी के रूप में स्थापित करके उनके आगे माथा टेकना इस बात का प्रतीक था कि अब शबद श्री गुरु अंगद देव जी के द्वारा प्रकाशमान हुआ है। इस घटना को और अधिक स्पष्ट करते हुए गुरु-घर के रबाबी सिक्ख भाई सत्ता जी, भाई बलवंड जी कहते हैं :

लहणे दी फेराईऐ नानका दोही खटीऐ ॥
जोति ओहा जुगति साइ सहि काइआ फेरि पलटीऐ ॥ *(पन्ना ९६६)*

श्री गुरु अंगद देव जी को गुरगद्दी की बख्शिश होने पर वे खडूर साहिब आ गए। गुरु जी माई भिराई के घर एकांत में रहकर अकाल पुरख की बंदगी में लीन रहते। जब गुरु नानक साहिब ज्योति जोत समा गए तो संगत ने खडूर साहिब की तरफ रुख किया। बाबा बुड्ढा जी करतारपुर से आई संगत की अगुवाई कर रहे थे। वे सीधा माई भिराई के घर पहुंचे और गुरु जी के बारे में पूछा तो माई भिराई ने गुरु जी की बंदगी में विघ्न पड़ने के डर से उनके बारे में बताने से गुरेज किया। बाबा बुड्ढा जी ने अपनी सूझबूझ से एक कोठरी में जाकर संगत समेत गुरु जी के दर्शन किए। कुछ समय बाद बाबा बुड्ढा जी ने गुरु साहिब को खुले रूप में दर्शन देने की विनती की। गुरु साहिब ने संगत की विनती मान कर खडूर साहिब में वही नित्तनेम आरंभ कर दिया जो करतारपुर की धरती पर उन्होंने गुरु नानक साहिब के समय देखा था। लेखक बताता है कि "भाई सादू-बादू सजादे के बेटे (भाई मरदाना के पौत्र) श्री गुरु अंगद देव जी के समक्ष सिक्खों की सभा में अमृत वेले आसा दी वार तथा संध्या समय भी कीर्तन करके संगत को आनंदित करें।" अमृत वेले बाणी पढ़ने, आसा दी वार का गायन करने के बाद अरदास होती तथा लंगर-परशादा छक कर सब लोग अपने-अपने काम पर चले जाते और शाम समय फिर गुरु साहिब के पास आ जुड़ते। लेखक बताता है कि रात्रि समय श्री गुरु अंगद देव जी भाई बाला जी से गुरु नानक साहिब के जीवन से सम्बंधित साखियां सुनते। श्री गुरु अंगद देव जी ने श्री गुरु नानक देव जी द्वारा आरंभ की लंगर-प्रथा को जारी रखा। तवारीख का लेखक बताता है कि "दातू दासू दी हट्टी विच्चों जो कुझ पैदा होवे ओस विच गुजारा करन, जे कदे कुझ चाहुण तां गुरु जी आखण एह पूजा दा धान ग्रिसती नूं कच्चा पारा है। एह सुण के ओह चुप्प कर जाण। जो भुक्खा, पिआसा, बिहंगम, साधू, सिक्ख, लंगड़ा, लूला, अंधा, रोगी, ब्रिध अन्हां पास आवे ओस दी सेवा विशेष कराउण। अंन, बसत्र, कथा, कीरतन ते नाम दा भंडारा हर वेले खुल्हा ही रहे, कोई कदे निराश ना जावे।" बाणी पढ़ने के साथ-साथ गरीबों-जरूरतमंदों की मदद करनी चाहिए, के सिद्धांत को दृढ़ कराता लेखक बताता है कि एक बार फतेहाबाद के एक गुज्जर लोहार ने गुरु जी के पास विनती की कि "हम पारिवारिक कार्यों में व्यस्त रहे हैं, धर्म-कर्म का कोई काम नहीं करते, हमारा भला कैसे हो?" गुरु जी ने कहा कि "गरीब का काम धनी से पहले, अमीर से पहले कर, जपु जी का पाठ कर, धर्म की किरत कर, बांट कर खा, तेरा भला होगा।"

गुरु जी का प्रचार-केंद्र खडूर साहिब था। सिक्खों में मल्ल अखाड़े (कुश्ती अखाड़ा) स्थापित करने की रीति गुरु साहिब ने यहीं से आरंभ

की थी। गुरु साहिब ने सिक्खी के प्रचार व प्रसार के लिए कई कार्य किए। गुरमुखी लिपि का विकास बहुत महत्वपूर्ण कार्य है। लेखक बताता है कि श्री गुरु नानक देव जी के शबद नागरी, फारसी, तोरकी, टाकरे अक्षरों में लिखे हुए थे जिन्हें श्री गुरु अंगद देव जी ने गुरमुखी अक्षरों में लिखवाया। श्री गुरु अंगद देव जी का समय राजनैतिक उथल-पुथल का था। फौजों के सिपाही तथा जरनैल भी उनकी संगत में आते व शिक्षा प्राप्त करते थे। यहीं पर शेरशाह सूरी से हार खाकर हुमायूं गुरु साहिब के दर्शन के लिए आया। मिलने में देरी होने पर वो बहुत क्रोधित हुआ और उसने गुरु साहिब पर तलवार तान ली। गुरु जी ने कहा कि "जहां तलवार चलाने की जगह थी वहां से कायर बन कर भाग आए हो और अब हमारे पर तलवार उठा रहे हो।" यह सुनकर बादशाह शर्मिंदा हुआ और गुरु-चरणों पर गिर क्षमा मांगी।

श्री गुरु अंगद देव जी हमेशा अकाल पुरख की रजा में रहने की प्रेरणा करते थे। वे समझते थे कि रिद्धियों-सिद्धियों से कोई भी आवश्यक वस्तु प्राप्त कर लेना आसान कार्य है मगर प्रभु की रजा में रहकर उसकी बंदगी करना अधिक कठिन कार्य है। वे कहते कि सारी सृष्टि अकाल पुरख की रजा के अनुसार चलती है। मनुष्य इस सृष्टि का हिस्सा है, उसे भी प्रकृति की तरह विशाल हृदय धारण करना चाहिए। प्रकृति से संयम का गुण प्राप्त कर मनुष्य को प्रभु की रजा में रहकर अपने जीवन-उद्देश्य की तरफ बढ़ना चाहिए। लेखक गुरु साहिब की शिक्षा का प्रगटावा एक साखी के माध्यम से करता है।

खडूर साहिब में शिवनाथ नाम का एक तपा योगी रहता था जिसका इलाके में काफी प्रभाव था। कुदरत की करनी, एक बार वर्षा न हुई। उस योगी ने लोगों को इसलिए दोषी ठहराते हुए कहा कि उन्होंने एक गृहस्थी को 'गुरु' धारण किया है, इसलिए वर्षा नहीं होती। यदि वो गांव छोड़ जाए तो आठ पहरों के अंदर ही वर्षा हो सकती है। जब यह बात गुरु जी तक पहुंची तो लोगों को इस भ्रमजाल से मुक्त करने के लिए उन्होंने खुद ही वो गांव छोड़ दिया। कई दिन बीत गए मगर वर्षा न हुई। लोगों ने योगी को वर्षा कराने के लिए कहा मगर योगी के जंत्र-मंत्र के कारण वर्षा न हुई। (गुरु) अमरदास जी अपने गांव गए हुए थे। जब वे वापिस आए और उन्हें इस घटना का पता चला तो उन्होंने बेसमझ लोगों को समझाया और कहा कि आपने एक योगी के कहने पर गुरु जी का अपमान किया है। उन्होंने आगे कहा कि यदि आपको वर्षा की जरूरत है तो इस तपे को बैल के संग जुए में जोड़ कर खेतों में घुमाओ। जहां-जहां इसे ले जाओगे, वर्षा हो जाएगी। लोगों ने उसी तरह किया। रहमत परमात्मा की, कुछ समय बाद वर्षा होनी आरंभ हो गई। लोगों ने तपे को खेतों में घुमा-घुमा कर उसका बुरा हाल कर दिया। वर्षा होने पर लोग खुश हो गए और श्री गुरु अंगद देव जी से क्षमा-याचना कर वापिस गांव ले आए।

इसके अलावा लेखक ने श्री गुरु अंगद देव जी की शख्सियत के बारे में चर्चा करते हुए गुरु जी के महान उपदेशों का वर्णन किया है। आगे लेखक लिखता है कि खडूर साहिब में उनके पास भाई किदारी आया जो कि देवी का भक्त था। उसने गुरु जी के दर्शन करते समय कहा कि मैंने देवी की बहुत उपासना की है मगर तृष्णा की अग्नि शांत नहीं होती। गुरु जी ने कहा कि जब जंगल में आग लगी होती है तो वही जीव

बचते हैं जो वहां से बाहर निकल जाते हैं। जब वे नदी के किनारे आ बैठते हैं तो उन्हें अग्नि जला नहीं सकती। इसी तरह जो मनुष्य विकारों की अग्नि में जलता है उसे सतसंगत करनी चाहिए। सतसंगत से आनंद प्राप्त होता है।

श्री गुरु अंगद देव जी ने गुरु नानक साहिब की शिक्षा को लोक-मनों तक पहुंचाने तथा दृढ़ कराने का कार्य किया। जब उन्होंने अपना अंतिम समय नजदीक जाना तो (गुरु) अमरदास जी को सबसे योग्य जानकर उन्हें गुरगद्दी सौंप दी। लेखक बताता है कि चेत सुदी चौथ बुधवार सं. १६०९ वि. को चार घड़ी दिन चढ़े गुरु जी खडूर साहिब में ज्योति-जोत समा गए।

श्री गुरु अंगद देव जी की विचारधारा

श्री गुरु अंगद देव जी की समूची बाणी श्लोकों के रूप में मिलती है। उनके द्वारा रचित श्लोक, वारों की पउड़ियों के साथ दर्ज हैं। नौ रागों में उनके समूह श्लोक मिलते हैं--वार सिरीरागु, वार माझ, वार आसा, वार सोरठि, वार सूही, वार रामकली, वार मारू, वार सारंग, वार मलार। गुरु जी द्वारा उच्चरित श्लोकों की संख्या ६३ है। गुरु साहिब द्वारा उच्चरित श्लोक गिनती में चाहे कम हैं मगर ये बहुत ही भावपूर्ण हैं और ये सीधा मन पर प्रभाव डालते हैं। गुरु साहिब की समूची बाणी श्री गुरु नानक देव जी के जीवन-आदर्श का प्रगटावा करती है। उन्होंने गुरु नानक साहिब द्वारा दर्शाए दुनिया तथा दरगाह के रिश्ते को प्रचारित करने का कार्य किया। वे मानवता की सेवा को ही प्रभु की सेवा मानते हैं और इसलिए वे अलग-अलग मनुष्यों के विभिन्न धर्म न मानते हुए समूह मानवता का एक ही धर्म मानते हुए कहते हैं:

जोग सबदं गिआन सबदं बेद सबदं ब्राहमणह ॥
खत्री सबदं सूर सबदं सूद्र सबदं परा क्रितह ॥
सरब सबदं एक सबदं जे को जाणै भेउ ॥
नानकु ता का दासु है सोई निरंजन देउ ॥
(पन्ना ४६९)

श्री गुरु अंगद देव जी ने धर्म व ज्ञान को वर्ण-व्यवस्था के आधार पर बांटने का विरोध करते हुए स्पष्ट किया कि ब्राह्मण, खत्री, वैश्य एवं शूद्र के गुण प्रत्येक मनुष्य में विद्यमान हैं। जिस तरह के गुण मनुष्य धारण करता है उसी तरह की वृत्ति मनुष्य में उजागर होती है। प्रत्येक मनुष्य को ज्ञान, पूजा-पाठ, शूरवीरता एवं सेवा के गुण निभाने चाहिए। श्री गुरु अंगद देव जी गुरु के महत्व को उजागर करते हुए कहते हैं :

जे सउ चंदा उगवहि सूरज चड़हि हजार ॥
एते चानण होदिआं गुर बिनु घोर अंधार ॥
(पन्ना ४६३)

'गुरु' परमात्मा का राह दिखाता है और परम सत्य के गुणों के बारे में प्रकाश डालता है। जो मनुष्य गुरु की अगुवाई में परमात्मा के गुणों का संचार करता है वो आध्यात्मिक उच्चता ग्रहण करता है। सिक्ख धर्म में यह अवस्था 'गुरमुख' की है, जो मनुष्य से उलट, हर समय गुरु की अगुआई में चलता है।

श्री गुरु अंगद देव जी की समूची विचारधारा मनुष्य को सच के मार्ग से जोड़ती है। इस मार्ग पर चलने वाले मनुष्य 'महापुरुष' बन जाते हैं। दुनिया में जो भी मनुष्य सच के मार्ग पर चलता है वो गुरु साहिबान की बाणी के अनुसारी होता है।



मैकालिफ कृत श्री गुरु अंगद देव जी का जीवन-वृत्तांत एवं व्यक्तित्व

*-डॉ. राजेंद्र सिंह 'साहिल'**

गुरबाणी और सिक्ख इतिहास के महान अध्येता मैक्स आर्थर मैकालिफ ने अपने शोध-ग्रंथ 'द सिख रिलीजन' (छः भाग) के दूसरे भाग में दूसरे पातशाह साहिब श्री गुरु अंगद देव जी के जीवन का वृत्तांत प्रस्तुत किया है।

जन्म एवं प्रारंभिक जीवन : मैकालिफ के अनुसार श्री गुरु अंगद देव जी ने जिला फिरोजपुर (वर्तमान जिला मुकतसर) में मुकतसर से छः मील दूर स्थित 'मत्ते की सराय' में पिता फेरूमल जी और माता दया कौर जी के घर ११ वैसाख संवत् १५६१ वि. मुताबिक सन् १५०४ ई. को सवा पहर रात रहते जन्म लिया। बालक का नाम रखा गया 'लहिणा'। बड़े होकर भाई लहिणा जी का विवाह माता खीवी जी के साथ हुआ और आपके घर एक पुत्री बीबी अमरो और दो पुत्र दातू और दासू हुए। पिता बाबा फेरूमल जी सपरिवार कुछ समय गांव 'हरीके' में भी आकर रहे परंतु फिर ऊब कर वापस मत्ते की सराय चले गये।

जब मत्ते की सराय को मुगलों और बलोचों ने उजाड़ दिया तो यह सारा परिवार खडूर साहिब आ बसा। भाई लहिणा जी देवी के भक्त थे और हर वर्ष स्थानीय संगत के साथ ज्वाला जी के दर्शन करने जाते थे।

खडूर साहिब भाई जोधा (जोध) नाम का सिक्ख रहता था। भाई लहिणा जी अमृत वेला में उठकर 'जपु जी' साहिब और 'आसा की वार' का पाठ किया करते थे। एक बार भाई लहिणा जी ने यह पाठ सुना। भाई लहिणा जी अभिभूत हो गये। भाई जोध जी से पूछा-"यह किस महापुरुष की बाणी है?" भाई जोध जी ने बताया-"यह गुरु नानक साहिब की बाणी है और वे रावी के किनारे गांव करतारपुर में खेतीबाड़ी करते हैं।" भाई लहिणा जी का हृदय गुरु नानक साहिब के दर्शन करने के लिए बेचैन हो उठा।

प्रथम पातशाह से भेंट : एक बार ज्वाला जी के दर्शनों से लौटते समय भाई लहिणा जी करतारपुर जा पहुंचे और गुरु नानक साहिब के जा दर्शन किये। प्रथम पातशाह के विचारों एवं व्यक्तित्व ने भाई लहिणा जी पर गहरा प्रभाव डाला और वे गुरु के सिक्ख बन गये। गुरु नानक साहिब भी भाई लहिणा जी के दयालु, सुशील एवं विनम्र स्वभाव से अत्यंत प्रभावित हुए।

भाई लहिणा जी ने गुरु जी के चरणों में ही रहने की इच्छा प्रकट की तो गुरु जी ने फरमाया-"पहले जाकर घर के कार्य-व्यवहार समेट आओ . . . फिर तुम्हें सिक्ख बनायेंगे।"

भाई लहिणा जी खडूर साहिब आ तो गये किन्तु गुरु जी का बिछोह ज्यादा दिन बर्दाश्त न हुआ तो तुरंत करतारपुर जा पहुंचे। उस समय गुरु जी खेतों में काम कर रहे थे। प्रेम के वशीभूत भाई लहिणा जी खेतों में पहुंच कर गुरु जी से मिले।

गुरु जी ने खेतों में से घास-खरपतवार

*१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब। मो: ०९४१७२-७६२७१

चुनकर तीन गट्ठर बांधे हुए थे। गट्ठर कीचड़ से भरे हुए थे। कहीं इन्हें उठा कर घर न ले जाना पड़े, यह सोच कर 'मामूली सिक्ख' नजर बचा कर भाग गये थे। गुरु जी ने अपने पुत्रों को गट्ठर उठाने को कहा तो वे भी टाल गये। गुरु जी ने भाई लहिणा जी से कहा। भाई लहिणा जी ने उस समय सुंदर रेशमी वस्त्र पहने हुए थे परंतु उन्होंने परवाह किये बगैर टपकते कीचड़ वाले गट्ठर उठाये और घर ले आये। उनके सुंदर वस्त्र कीचड़ से गंदे हो गये। माता सुलक्खणी जी ने एतराज किया तो गुरु जी बोले- "लहिणे के वस्त्रों पर कीचड़ नहीं 'केसर' लगा है।" मैकालिफ के अनुसार भाई लहिणा जी के वस्त्रों पर लगा कीचड़ सचमुच केसर बन गया था।

भाई लहिणा जी की सेवा : मैकालिफ ने भाई लहिणा जी के सेवाभाव का बहुत सुंदर वर्णन किया है। उन्होंने इस जीवन-वृत्तांत में भाई लहिणा जी के सभी सेवा-कार्यों (यथा:- वर्षा की रात में गिरी दीवार की चार बार उसारी करना, आधी रात को नदी से कपड़े धो लाना, गंदे पानी के गड्ढे में से कटोरा निकाल कर लाना, मुर्दा खाने के लिए तत्पर होना आदि) का बड़ा भावपूर्ण वर्णन किया है।

भाई लहिणा जी गुरु-आज्ञा के पालन को इतने तत्पर रहते थे कि बिना सोच-विचार किये पलक झपकते गुरु-कार्य पूरा कर देते। वर्षा की रात में गिरी दीवार को कोई भी सिक्ख उसी समय बनाने के लिए तैयार न था। गुरु जी ने आज्ञा दी तो भाई लहिणा जी उसी समय दीवार बनाने में जुट गये। गुरु जी ने दीवार चार बार बनवाई और चार बार ढहवाई, परंतु भाई लहिणा जी शांत भाव से काम करते रहे।

मैकालिफ के अनुसार तब गुरु जी के पुत्रों ने भाई लहिणा जी से कहा, "तुम मूर्ख हो जो गुरु जी की अनुचित आज्ञा भी मानते हो . . .।" तब भाई लहिणा जी ने हाथ जोड़कर अर्ज की कि "सेवक का काम तो सिर्फ सेवा करना है . . . दीवार बनने या न बनने से उसका कोई मतलब नहीं।"

भाई लहिणा जी को गुरगद्दी : प्रथम पातशाह गुरु नानक साहिब जी ने भाई लहिणा जी की सभी परीक्षाएं लेने के उपरांत उन्हें गुरगद्दी सौंपने का निर्णय लिया। एक दिन सिक्ख संगत की उपस्थिति में गुरु जी ने भाई लहिणा जी को गुरगद्दी पर बिठाया और सारी रस्में पूरी कीं। मैकालिफ के अनुसार गुरु जी ने संगत को हुक्म दिया कि वो श्री गुरु अंगद देव जी की आज्ञा में रहे, उनकी सेवा करे, क्योंकि ये मेरा ही रूप हैं।

गुरु नानक साहिब के पुत्र गुरगद्दी से वंचित रह जाने के कारण बहुत नाराज हुए तो गुरु जी ने कहा कि इस पदवी का आधार 'आत्म-समर्पण' था। श्री गुरु अंगद देव जी ने समर्पण का गुण बहुत उत्तमता से प्रगट किया है, इसलिए वे गुरगद्दी हेतु पूर्ण योग्य हैं। प्रथम पातशाह ने गुरु अंगद साहिब को खडूर साहिब जाने की आज्ञा दी हालांकि वे तो सदैव गुरु-चरणों में ही रहना चाहते थे परंतु गुरु-आज्ञा शिरोधार्य करके खडूर साहिब आ गये। गुरिआई प्रदान करने के कुछ ही समय बाद प्रथम पातशाह ज्योति-जोत समा गये।

श्री गुरु अंगद देव जी का तप : गुरु नानक साहिब से वियोग का दुख श्री गुरु अंगद देव जी को बहुत दुखदायी लगा। दूसरे पातशाह एकांत में बैठ कर 'बिरती' लगाना चाहते थे। एक दिन खडूर साहिब की ही एक स्त्री बीबी निहाली*

**अधिकतर ऐतिहासिक स्रोतों में यह नाम 'भिराई' या 'विराई' आया है।*

उपले पाथ रही थी। गुरु जी को आता देख उसने दौड़ कर माथा टेका। गुरु जी ने बीबी निहाली से कहा कि वह उन्हें एक कोठड़ी दे जिसमें बैठकर वे एकांत में 'वाहिगुरु' का ध्यान कर सकें। तुम कोठड़ी को बाहर से ताला लगा देना और रोज एक 'छन्ना' (बड़ा प्याला) दूध का अंदर सरका दिया करना, और हमें कुछ नहीं चाहिए।

बीबी निहाली ने गुरु जी को लिए मन-वांछित प्रबंध कर दिया। मैकालिफ के अनुसार गुरु जी ने इस तरह छ: महीने तक तप किया। उधर गुरु जी के बिना सिक्खों की दशा खराब हो गई। तब बाबा बुड्ढा जी ने सूझबूझ से गुरु जी का पता लगाया और बीबी निहाली के घर जाकर गुरु जी के दर्शन किये। बाकी सिक्खों ने देखा कि गुरु अंगद साहिब के मुख-मंडल पर भी गुरु नानक साहिब के मुख-मंडल जैसा ही 'नूर' उत्पन्न हो गया था।

श्री गुरु अंगद देव जी की दिनचर्या : मैकालिफ ने गुरु अंगद साहिब जी की दिनचर्या का बड़ा सुंदर वर्णन किया। मैकालिफ लिखते हैं कि गुरु जी पहर रात बाकी रहते उठते, ठंडे जल से स्नान करते और बिरती को एकाग्र कर वाहिगुरु के ध्यान में जुड़ जाते। उस समय रबाबी 'आसा की वार' का गायन करते। वार का भोग पड़ने पर गुरु जी समाधि से उठते और रोगियों की दवा-दारू करने चले जाते। रोगी, खास कर कोढ़ी दूर-दूर से आते और गुरु जी से अरोग होकर गुरु-घर का यशगान करते हुए लौटते। इसके उपरांत गुरु जी गुरु नानक साहिब की बाणी की कथा करते और संगत को उपदेश देते।

सुबह लगभग नौ बजे सारी संगत ऊंच-नीच के भेदभाव से रहित होकर एक ही पंगत में बैठकर लंगर छकती। लंगर के बाद 'अरदासा' सोधा जाता।

इसके पश्चात् गुरु जी बच्चों को गुरमुखी एवं गुरबाणी पढ़ाते और फिर बच्चों को विभिन्न प्रकार के खेल-कूद खिलाते। संध्या समय में 'मल्ल अखाड़े' का आयोजन किया जाता जिसमें सिक्ख कुश्ती का अभ्यास करते।

फिर दीवान सजता और रबाबी भाई सत्ता-भाई बलवंड जी वार गायन करते। फिर 'सो दरु' का पाठ होता और लंगर बरताया जाता। इसके बाद शबद-कीर्तन होता और अंतत: गुरु जी विश्राम करने के लिए चले जाते।

विभिन्न साखियों का वर्णन : श्री गुरु अंगद देव जी के जीवन-वृत्तांत में मैकालिफ ने अनेक साखियों का वर्णन भी किया है जो गुरु जी के अद्‌भुत एवं आध्यात्मिक व्यक्तित्व को प्रकट करती हैं।

खडूर साहिब के चौधरी तखतमल को 'ब्रह्म-ज्ञान' का उपदेश देना, योगियों से विचार-विमर्श और उन्हें अकाल-पुरख की भक्ति का उपदेश; योगी हरीनाथ को धर्म का अर्थ समझाना, लंगर तैयार करने वाले भाई जीवा की चमत्कार दिखाने की जिद पर गुरु जी का उसे समझाना, गुजर-लौहार, भाई धींगा, भाई पारो जुलका, मूला शाह सिपाही और भाई किदारू को धर्म-उपदेश देने जैसी कई साखियों का वर्णन मैकालिफ ने किया है। भाई माणा को उसके अभिमान का दंड मिलना, खहरों के चौधरी की ईर्ष्या और गांव हरीके के चौधरी का सुधार जैसी साखियों का भी मैकालिफ ने वर्णन किया। इन साखियों में मुगल बादशाह हुमायूं का आगमन और भाई राय बलवंड-भाई सत्ता जी का अहंकार विशेष प्रसंग हैं।

हुमायूं को विनम्रता का उपदेश : शेरशाह सूरी से हार कर हुमायूं एक ऐसे पीर-फकीर की तलाश में था जिसका आशीर्वाद उसे उसका राज्य फिर से दिलवा सके। उसे गुरु नानक साहिब की महानता और उनके उत्तराधिकारी गुरु अंगद साहिब जी के विषय में बताया गया। सो, वह खडूर साहिब आया। जब वह आया उस समय गुरु जी समाधिस्थ थे और रबाबी गुरबाणी गायन कर रहे थे। हुमायूं को खड़े रहकर इंतजार करना पड़ा। क्रोध में आकर उसका हाथ तलवार की मुट्ठी पर चला गया। गुरु जी ने हुमायूं को कहा कि शेरशाह के सामने तो तेरी यह तलवार चली नहीं, अब इसे संतों पर इसे उठाने की मूर्खता करता है। गुरु जी ने उसे विनम्रता का उपदेश और आशीर्वाद दिया। पंद्रह वर्ष बाद जब हुमायूं ने फिर दिल्ली को जीता तो तत्कालीन गुरु जी श्री गुरु अमरदास जी को धन्यवाद का संदेश भेजा।

भाई राय बलवंड और भाई सत्ते का अभिमान : गुरु-दरबार के रबाबी भाई राय बलवंड और भाई सत्ता जी को यह अभिमान हो गया कि हमारे गायन के कारण संगत गुरु जी के दरबार में जुड़ती है, हम न गायें तो वहां कोई न आये। इसी घमंड में उन्होंने गुरु जी से लड़की की शादी के लिए पांच सौ रुपये तुरंत मांगे। गुरु जी ने दो महीने रुकने के लिए कहा तो दोनों नाराज हो गये और दीवान में आना बंद कर दिया। गुरु जी ने बुलाया तो भी न आये। गुरु जी जितना मनाते दोनों अभिमानी और अकड़ते जाते। अंततः गुरु जी ने उन्हें उनके हाल पर छोड़ दिया। इधर गुरु-दरबार में भाई रामू, भाई दीपा, भाई नगौरी, भाई उगरसैन जैसे सिक्ख कीर्तन करने लगे। भाई बलवंड और भाई सत्ता जी का काम बिलकुल बंद हो गया और रोटी तक के लाले पड़ गये। इसी दौरान दोनों ने गुरु नानक साहिब की भी निरादरी की।

आखिर हार कर भाई बलवंड और भाई सत्ता जी ने कुछ सिक्खों को मध्यस्थ बनाकर अपनी अर्ज गुरु जी तक पहुंचाई। गुरु नानक साहिब के अनादर से आहत गुरु जी ने कहा कि जो भी उनकी सिफारिश लेकर आएगा वह हमारे कोप का भागी बनेगा। अंततः भाई लद्धा ने भाई बलवंड और भाई सत्ता जी को गुरु जी से क्षमा दिलवाई और सजा भुगतने के लिए गुरु जी के चरणों में आ गिरे। दयालु पातशाह ने उनको क्षमा कर दिया।

श्री गुरु अमरदास जी का आगमन एवं सेवा: मैकालिफ ने गुरु अंगद साहिब के जीवन-वृत्तांत के पांचवें, छठे एवं सातवें कांड में बीबी अमरो जी से प्रेरित हो बाबा (गुरु) अमरदास जी के खडूर साहिब गुरु-चरणों में आने और बारह वर्ष की दीर्घ अवधि तक सेवा करने का वर्णन किया है।

बाबा अमरदास जी मुंह-अंधेरे उठते और ब्यास नदी से गुरु अंगद साहिब के स्नान के लिए जल लाते, फिर लंगर में सारा दिन सेवा करते। इन्हीं दिनों गुरु अंगद साहिब की आज्ञा से बाबा अमरदास जी ने गोइंदवाल नगर भी बसाया।

श्री गुरु अमरदास जी को गुरगद्दी एवं दूजे पातशाह का ज्योति-जोत समाना : दूसरे पातशाह ने श्री गुरु अमरदास जी को सभी प्रकार से योग्य जानकर गुरगद्दी सौंपने का निश्चय किया। श्री गुरु अमरदास जी को स्नान करा, नये वस्त्र पहना गुरगद्दी पर बैठाया और सारी रस्में गुरु-मर्यादा अनुसार निभा उन्हें माथा टेका। बाबा बुड्ढा जी ने 'गुरिआई-

तिलक' लगाया। फिर दूसरे पातशाह ने अपने पुत्रों बाबा दातू और बाबा दासू को बुलाया और कहा कि गुरगद्दी विनम्रता, प्रेम और सेवा का फल है। श्री गुरु अमरदास जी ने यह पदवी अपने अथक परिश्रम एवं सेवा से प्राप्त की है। जब गुरु जी ने पुत्रों को श्री गुरु अमरदास जी को प्रणाम करने के लिए कहा तो वे बड़े संकोच में आकर नमस्कार करके चले गये। दूसरे पातशाह ने श्री गुरु अमरदास जी को गोइंदवाल साहिब में रहकर धर्म-प्रचार करने की आज्ञा दी।

इसके बाद श्री गुरु अंगद देव जी ने अपना ध्यान वाहिगुरु की ओर लगाया और संवत् १६०९ वि. (सन् १५५२ ई) में ज्योति-जोत समा गये। श्री गुरु अमरदास जी ने दुखी हृदय सिक्खों को प्रभु-ज्ञान की शिक्षा दी।

निष्कर्ष : इस प्रकार मैकालिफ ने बहुत ही सुंदर ढंग से श्री गुरु अंगद देव जी के जीवन-वृत्तांत एवं व्यक्तित्व का वर्णन किया है। वृत्तांत के अंत में मैकालिफ ने लिखा है-"गुरु की सेवा और उनसे प्रेम तथा वाहिगुरु की भक्ति गुरु अंगद देव जी के जीवन की दो बड़ी बातें हैं। गुरु नानक देव जी ने भी सेवा के कारण ही पुत्रों के स्थान पर गुरु अंगद देव जी को गुरगद्दी सौंपी और गुरु अंगद देव जी ने भी सेवा-भाव के ही कारण गुरगद्दी पुत्रों के बजाय श्री बाबा अमरदास जी को दी।"



श्री गुरु अंगद देव जी सम्बंधी ग्रंथ व स्रोत-पुस्तकें

(पृष्ठ ९ का शेष)

आदि विभिन्न पक्षों से सम्बंधित हैं :

१) नानक प्रकाश पत्रिका, जून २००३, अंक-१, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला

२) गुरमति प्रकाश, अप्रैल २००४, धर्म प्रचार कमेटी (शि: गु: प्र: कमेटी), श्री अमृतसर।

३) गुरदुआरा गजट, (उपरोक्त)

४) पंजाबी दुनीआं, मार्च-अक्तूबर, भाषा विभाग, पटियाला।

५) सिक्ख फुलवाड़ी, अप्रैल २००४ सिक्ख मिशनरी कालेज, लुधियाना।

६) सीस गंज, अप्रैल २००४, दिल्ली सिक्ख गु: प्र: कमेटी, गुरुद्वारा रकाबगंज साहिब, नई दिल्ली।

७) साडा विरसा साडा गौरव, अप्रैल २००४, गुरु गोबिंद सिंघ स्टडी सर्कल, लुधियाना।

८) पंखड़ीआं, मार्च-अप्रैल २००४, पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड, मोहाली।

९) जन साहित, जून-सितंबर २००४, भाषा विभाग, पटियाला।

१०) सोवीनर, अप्रैल २००४, धर्म प्रचार कमेटी (शिरोमणि गु: प्र: कमेटी), श्री अमृतसर।

११) कौमी दरपण, अप्रैल २००४, गुरु नानक नगर, पटियाला।

१२) जागृती, अप्रैल २००४, जिल्द-५१, अंक-४, सूचना व लोक संपर्क विभाग, चंडीगढ़, पंजाब।

१३) गुरमति ज्ञान, अप्रैल-मई-जून २००४, धर्म प्रचार कमेटी (शि: गु: प्र: कमेटी), श्री अमृतसर।

14) Sikh Courier, Autumn Winter, 1987

15) Journal of Sikh Studies, Vol. XXVI, Nos. 1-2, 2002, Guru Nanak Dev University, Amritsar.



डॉ. हरि राम गुप्ता कृत 'सिक्ख इतिहास' में श्री गुरु अंगद देव जी

*-डॉ. नवरत्न कपूर**

लेखक एवं ग्रंथ परिचय : डॉ. हरि राम गुप्ता पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ के इतिहास विभाग के अध्यक्ष पद पर आरूढ़ रहे। उन्होंने पांच भागों में 'सिक्ख इतिहास' पर प्रकाश डाला है। इन ग्रंथों में उन्होंने सिक्ख गुरु साहिबान के जीवन-वृत्तांत संबंधी 'जन्म-साखियों' और तत्व संबंधी अंग्रेजी, उर्दू एवं फारसी मूल स्रोतों का आलोड़न-विलोड़न करके मिसलों तथा शेर-ए-पंजाब महाराजा रणजीत सिंघ तक ऐतिहासिक तथ्य प्रस्तुत किए हैं। इस पुस्तक माला के पहले भाग 'सिक्ख इतिहास भाग १' में दस गुरु साहिबान का जीवन-चरित्र प्रस्तुत करते हुए उनकी सामाजिक उत्थान एवं धार्मिक रुचियों का यथातथ्य विश्लेषण किया है।

दूसरे सिक्ख गुरु साहिब के बारे में लेखक लिखता है कि श्री गुरु अंगद देव जी (सन् १५३९-१५५२) का जन्म पंजाब के फिरोजपुर जिले में स्थित 'मत्ते दी सराय' नामक स्थान पर ३१ मार्च, १५०४ को हुआ था। यह गांव आजकल 'सराय नागा' नाम से जिला मुक्तसर (पंजाब) में स्थित है। उनका जन्मगत नाम 'लहिणा' था। भाई लहिणा जी ने अपनी धार्मिक यात्रा के दौरान श्री गुरु नानक देव जी का नाम सुना। वे अपने किसी कार्यवश करतारपुर आए और अपना सर्वस्व उनको अर्पित कर दिया। लगभग एक दशक से अधिक भाई लहिणा जी का परीक्षण करने के बाद श्री गुरु नानक देव जी ने उन्हें अपना उत्तराधिकारी मनोनीत कर दिया। श्री गुरु अंगद देव जी करतारपुर में रहने के बाद ब्यास नदी से पांच किलोमीटर दूरी पर विद्यमान 'खडूर' नामक स्थान पर चले गए ताकि गुरगद्दी से वंचित अपने गुरुदेव के बेटों से संभावित टकराव से बचा जा सके। पहले छ: महीने श्री गुरु अंगद देव जी इसी कारण अपने एक श्रद्धालु के मकान में रहे। फिर बाबा बुड्ढा जी की प्रार्थना स्वीकार करके उन्होंने गुरगद्दी की जिम्मेदारियां निभानी शुरू कीं।

गुरमुखी लिपि तथा गुरु नानक साहिब की बाणी का संग्रह : श्री गुरु नानक देव जी की मौलिक बाणी 'लंडे' अथवा 'महाजनी' (व्यापारियों की लिपि) में लिखी हुई थी। उनके पद गुरु साहिब के परम शिष्य भाई बाला जी को भी स्मरण थे। एक ग्रामीण दुकानदार का पुत्र होने के कारण वे इस लिपि के ज्ञाता थे। इसमें स्वरों का प्रयोग नहीं होता इसलिए कई बार भ्रामकता हो जाती है, जैसे 'लाला जी अजमेर गए हैं।' किन्तु लंडे (महाजनी) में लिखे इस वाक्य को कई बार 'लाला जी अज्ज मर गए हैं' हो जाता है। श्री गुरु अंगद देव जी को डर था कि श्री गुरु नानक देव जी की बाणी 'लंडे' में लिखित होने के कारण अर्थों का अनर्थ कर सकती है, अत: उन्होंने 'लंडे' वर्णमाला को उत्तम रूप प्रदान किया; ठीक उसी तरह जैसे कि संस्कृत के लिए प्रयुक्त होने वाली 'देवनागरी' लिपि। उन्होंने 'लंडे' की वर्णमाला के अक्षरों का क्रम भी बदल दिया। यह नई लिपि 'गुरमुखी' कहलाने

**१६९७, जीवन संत कॉटेज, देवान मूल चंद स्ट्रीट, नजदीक आर्य समाज, पटियाला-१४७००१ (पंजाब)*

लगी, जिसका अर्थ है 'गुरु के मुख से निकली हुई'। इसी गुरमुखी लिपि में श्री गुरु अंगद देव जी ने अपने गुरदेव श्री गुरु नानक देव जी की पदावली को लिखा। यही नहीं, उन्होंने अपने गांव के बच्चों को भी यह लिपि सिखाई और अपनी पद-रचना भी गुरमुखी लिपि में की।

पहले तीन गुरु साहिबान की बाणी को तीसरे गुरु श्री गुरु अमरदास जी के पोते सहंसर राम ने दो जिल्दों में संकलित किया था। इसकी दूसरी जिल्द के पृष्ठ २१६ पर हाशिए में यह टिप्पणी लिखी हुई है : "गुरु अंगद ने गुरमुखी अक्षरों को स्वरूप प्रदान किया और इसी में अपनी पद-रचना प्रस्तुत की।" -Teja Singh : The Editing of the Holy Granth by Guru Arjan; The Sikh Review, June 1978; p. 16-19

लंगर की प्रथा : लंगर का रिवाज श्री गुरु नानक देव जी ने चलाया था। उनके बहुत-से श्रद्धालु उनके दर्शन के समय चढ़ावे के रूप में अन्न तथा दालें ले आते थे। आरंभ में तो गुरु साहिब यह सारी सामग्री गरीबों को बांट देते थे, कालांतर में वे ये सभी चीजें हाथ लगा कर लाने वाले को लौटा देते थे और सभी को मिल-बैठ कर इन्हें भोजन के रूप में तैयार करके छकने के लिए प्रेरित करने लगे। गुरु साहिब के उपदेशों में एकत्रित लोगों को 'संगत' (सतसंग) कहा जाता था और जमीन पर कतार बांधकर एक साथ भोजन करने को 'पंगत' कहा जाता था। अत: सिक्ख धर्म का आपसी भाईचारे का यह संदेश 'संगत और पंगत' लोकोक्ति के रूप में प्रचलित हो गया। इस बारे में लेखक की टिप्पणी है : Langar became a symbol of equality and fraternity among his disciples who came to be called Shishya or Sikhs, page 60.

श्री गुरु अंगद देव जी ने इस परंपरा को दृढ़मूल किया और इसका प्रबंधक अपनी धर्म-पत्नी माता खीवी जी को बना दिया। गुरु साहिब अपने श्रद्धालु द्वारा लाया हुआ अन्न अथवा धन अपने परिवार के पालन में कदापि प्रयुक्त नहीं करते थे। वे अपने परिवार का लालन-पालन मुंज की रस्सियां बनाकर करते थे। हिंदी में 'बान' कहलाने वाली ये रस्सियां खाट बनाने वालों को बेचकर ही वे आजीविकार्जन करते थे।

धर्म-प्रचारक : श्री गुरु अंगद देव जी के पास बहुत-से धर्म-प्रचारक थे, जो कि आस-पास के इलाकों में सिक्ख धर्म का प्रचार करते थे। उनमें से एक पारो जुल्का था, जिसके उत्साहवर्धक कार्यों को देखकर गुरु साहिब उसे 'परमहंस सिक्ख' पुकारने लगे। इनके अतिरिक्त जग्गा, महिया और नारायण दास भी थे।

गुरु साहिब की बाणी : श्री गुरु अंगद देव जी ने बहुत-से पदों की रचना की। एक में वे कहते हैं कि जब एक आदमी का केवल एक मित्र हो तो उसे वह कैसे भूले? मैकालिफ का संदर्भ देकर गुप्ता जी ने इसे इस प्रकार प्रकट किया है : Different people have different friends; I unhonoured have only thee. O God! why I do not die of weeping when I bear thee not in mind?

वस्तुत: यह श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज श्री गुरु अंगद देव जी का पहला 'शबद' है, जिसका मूल पाठ इस प्रकार है :

जिसु पिआरे सिउ नेहु तिसु आगै मरि चलीऐ ॥
ध्रिगु जीवणु संसारि ता कै पाछै जीवणा ॥

(पन्ना ८३)

श्री गुरु अंगद देव जी के साथ हुमायूं : सिक्ख जनश्रुतियों के अनुसार ईरान की ओर भागते हुए (मुगल बादशाह) हुमायूं खडूर साहिब

में रुका और उसने गुरु साहिब से यह वरदान मांगा कि उसे राज-सत्ता पुन: प्राप्त हो जाए। गुरु साहिब को श्री गुरु नानक देव जी का पद स्मरण आया, जिसका अर्थ मैकालिफ ने इस प्रकार किया है : "They shall come in seventy eight (1521 A. D.), depart in ninety seven (1540 A. D.), and then shall rise another disciple of a hero."

गुरु साहिब के मौन के कारण बादशाह ने तलवार खींच ली। इस पर गुरु अंगद साहिब जी ने टिप्पणी की कि "अच्छा होता, इस तलवार का प्रयोग अपने विरोधी शेरशाह सूरी के विरुद्ध किया जाता, न कि उस पर जो कि प्रभु-भक्त एक निर्दोष व्यक्ति है।" भाई काहन सिंघ का कथन है कि इतना कहने से हुमायूं का क्रोध शांत हो गया और उसने अपने कठोर व्यवहार के लिए क्षमा-याचना की और गुरु साहिब ने उसे आशीर्वाद दे दिया।

गुरु साहिब भले ही हुमायूं के व्यवहार से रुष्ट हुए हों किन्तु उनके मन में बादशाह के प्रति कोई दुर्भाव नहीं था। गुरु साहिब वस्तुत: क्षमा-पुंज थे। उन्होंने इस घटना को कोई महत्व नहीं दिया और इसे एकदम भुला दिया।

श्री गुरु अंगद देव जी २९ मार्च, १५५२ को परलोक सिधारे। उस समय उनकी अवस्था कुल ४८ वर्ष थी।

इस प्रकार गुप्ता साहिब ने सभी तथ्यों का निरीक्षण-परीक्षण करके अपने विचार प्रकट किए हैं। गुरमति व सिक्ख इतिहास के विद्यार्थियों के लिए अंग्रेजी में प्रकाशित डॉ हरि राम गुप्ता की 'सिक्ख इतिहास' पुस्तक काफी लाभदायक सिद्ध हो सकती है।

'अंगद' शब्द की अर्थवत्ता

जन्म और पारिवारिक परिचय : सौर वर्ष संवत् १५६१ वि. (सन् १५०४ ई) के वैसाख मास की पांचवीं तारीख को 'मत्ते की सराय' (जिला श्री मुक्तसर, पंजाब) के निवासी श्री फेरूमल की धर्मपत्नी माता दया कौर जी ने एक पुत्र को जन्म दिया। उसका नाम 'लहिणा' रखा गया, जिसका अर्थ है : 'प्राप्त कर लेना'। पंजाबी में इसके दो अन्य अर्थ भाई काहन सिंघ ने दिए हैं। एक है 'ढूंढना' और दूसरा है 'उतरना'।[१] हिन्दी के प्रसिद्ध कोशकार बाबू रामचंद्र वर्मा ने इस शब्द के कई एक अर्थ दिए हैं, यथा:

(१) लहना-पुलिंग (संस्कृत 'लभन') : उधार दिया हुआ या बाकी रुपया जो मिलने को हो
(२) संज्ञा (संस्कृत 'लसन') प्राप्त करना
(३) अव्यय (संस्कृत 'लसन') कही हुई बात ठीक मौके पर बैठ कर अभिप्राय की सिद्धि में सहायक होना।[२]

भाई लहिणा जी का विवाह खडूर साहिब (जिला तरनतारन, पंजाब) के संघर गांव के निवासी श्री देवीचंद की सुपुत्री माता खीवी जी के साथ सन् १५१९ में हुआ, जिन्होंने बाबा दासू जी व बाबा दातू जी नामक दो पुत्रों तथा बीबी अमरो जी व बीबी अनोखी जी नामक दो पुत्रियों को जन्म दिया।

श्री गुरु नानक देव जी का शिष्यत्व : आरंभ में भाई लहिणा जी देवी के उपासक थे। वे हर वर्ष अपनी मित्र-मंडली के साथ आश्विन के नवरात्रों में दुर्गा देवी के मंदिरों में दर्शनार्थ जाया करते थे। संयोगवश ऐसी ही यात्रा के दौरान भाई लहिणा जी की भेंट प्रथम पातशाह श्री गुरु नानक देव जी से हो गई और प्रथम दर्शन में ही उनकी विचारधारा में परिवर्तन हो गया। हर साल देवी-यज्ञों में भाग लेने वाले भाई लहिणा जी गुरु-दर्शन के उपरांत निराकार

भक्ति की ओर उन्मुख हो गए। मानो निराकार भक्ति का रंग चढ़ने और सगुण-भक्ति का रंग उतरने वाला भाई काहन सिंघ वाला अर्थ सही सिद्ध हुआ। उनकी निर्गुणमार्गी साधना में अटूट निष्ठा एवं सेवा-भाव को परख कर ही श्री गुरु नानक देव जी ने उन्हें 'लहिणा' की बजाय 'अंगद' पुकारना शुरू किया और उन्हें सिक्ख गुरु-परंपरा में अपना उत्तराधिकारी बनाने का निश्चय कर लिया।

'अंगद' शब्द की अर्थावली : 'अंगद' शब्द की व्याख्या का सूत्रपात श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित भट्ट साहिबान के सवैयों से हुआ। कल सहार नामक भट्ट ने इस शब्द का अर्थ किया है- "अपने अंग (शरीर) जैसी शोभा प्रदान करके (अंगरउ) राज-योग देना, यथा:

गुरु जगत फिरणसीह अंगरउ राजु जोगु लहणा करै ॥ (पन्ना १३९१)

अन्य भट्ट कवियों ने उनके सद्गुणों की चर्चा बड़ी भाव-भीनी शब्दावली में की है। भाई केसर सिंघ छिब्बर ने अपनी पंजाबी रचना में 'अंगद' शब्द की व्याख्या बड़ी विलक्षण रीति से इस प्रकार की है :

गुरू नानक जी पुत पोते डिठे अजमाए।
लाइक गुरिआई दी अंगद ठहिराए।
नाउं सी लहिणा गुरू नानक अंगद नाउं धरिआ।
जगतु गुरू अंगदु जी नूं करिआ।
पिछला अंगु पछान के नाउं सी कीता ॥३५॥
(बंसावलीनामा दसां पातशाहीआं का, चरण २)

गुरु साहिब के जन्मगत नाम 'लहिणा' और गुरु नानक साहिब द्वारा प्रदत्त 'अंगद' नाम की ओर संकेत करते हुए कवि सुखबासी राम बेदी ने भगवान् स्वरूप गुरु नानक साहिब के उनके मित्रवत संबंधों को चित्रित करते हुए गुरु अंगद साहिब की सेवा और भक्ति का उल्लेख इन शब्दों में किया है :

गुर सेवा ते परम पद अंगद मन अनुराग। . . .
लहिणा मन तन प्रेम जुति कही न जाइ बिबेक।[३]

केवल नामों या पौराणिक कथाओं के सामान्य एवं प्रतीकात्मक अर्थों के माध्यम से ही नहीं, बल्कि निराकार भक्तिपरक बिंबों का सहारा लेकर भी सभी कविगण ने गुरु (नानक देव जी) एवं उनके शिष्य (गुरु अंगद देव जी) की एकरूपता दर्शाने का प्रतिभापूर्ण प्रयास किया है, यथा :

जोति रूपि हरि आपि गुरू नानकु कहायउ ॥
ता ते अंगदु भयउ तत सिउ ततु मिलायउ ॥
(पन्ना १४०८)

देहधारी सिक्ख गुरु साहिबान में निर्गुण ब्रह्म के साक्षात् प्रकाश की व्याख्या का प्रयास भी बहुविध शब्दावली में अग्रसर हुआ। भाई सत्ता-भाई बलवंड जी द्वारा रचित 'रामकली की वार' में इसका उल्लेख निम्नांकित शबदों में हुआ है :

लहणे दी फेराईऐ नानका दोही खटीऐ ॥
जोति ओहा जुगति साइ सहि काइआ फेरि पलटीऐ ॥ *(पन्ना ९६६)*

भावार्थ : (जब गुरु नानक साहिब जी ने भाई लहिणा जी को गुरु-पदवी सौंप दी तो) गुरु नानक साहिब के बढ़प्पन की धूम के प्रभावस्वरूप भाई लहिणा जी की ख्याति भी उसी तरह फैल गई, क्योंकि (भाई लहिणा जी के भीतर) वही (गुरु नानक साहिब वाली) ज्ञान-ज्योति विद्यमान थी। जीवन-शैली भी वही (गुरु नानक साहिब वाली) थी, गुरु (नानक देव) जी ने तो केवल दोबारा शरीर ही बदला था।[४]

सिक्ख विद्वान् भाई गुरदास जी ने तो

पूर्ववर्ती कवियों की भांति गुरु नानक साहिब एवं गुरु अंगद साहिब के संबंधों की प्रगाढ़ता दर्शाने के लिए मुहावरों की झड़ी ही लगा दी है, यथा:

(क) मारिआ सिका जगति विचि नानक निरमल पंथु चलाइआ।
थापिआ लहिणा जींवदे गुरिआई सिरि छत्रु फिराइआ। *(वार १:४५)*

अर्थात् श्री गुरु नानक देव जी ने निर्गुणमार्गी संप्रदाय (मूर्ति-पूजा रहित निर्मल पंथ) चलाकर संसार में अपनी धाक जमा दी *(मारिआ सिका जगति विचि)*। उन्होंने अपने जीवन-काल में ही भाई लहिणा जी को गुरु-पदवी प्रदान करके सिक्ख धर्म को अग्रसर करने का उत्तरदायित्व सौंप दिया *(सिरि छत्रु फिराइआ)*।

इस प्रकार *'मारिआ सिका'* और *'सिरि छत्रु फिराइआ'* दो मुहावरे उपर्युक्त उद्धरण में दृश्यमान हैं।[५]

(ख) सो टिका सो छत्रु सिरि सोई सचा तखतु टिकाई।
गुर नानक हंदी मुहरि हथि गुर अंगद दी दोही फिराई। *(वार १:४६)*

भाई सत्ता-भाई बलवंड जी की शब्दावली से मिलते-जुलते भाव को लेकर राजाओं-महाराजाओं के समान (छत्र, तख्त और मोहर का) उल्लेख करके राज-सिंघासन रूपी गुरगद्दी श्री गुरु नानक देव जी द्वारा श्री गुरु अंगद देव जी को सौंपने पर उनकी ख्याति फैलाने की बात (*'अंगद दी दोही फिराई'* मुहावरे द्वारा) कवि महोदय ने व्यक्त की है। गंगा नदी और उसके जल में उठने वाली लहर में समानता दिखाकर बड़ी प्रतीकात्मक भाषा में भाई गुरदास जी ने फिर गुरु अंगद साहिब की शरण में आने *(बाबाणे गुर अंगदु आइआ)* वाले गुरु अंगद साहिब की महिमा का बखान इस प्रकार किया है:

अंगहु अंगु ओपाइओनु गंगहु जाणु तरंगु उठाइआ।
गहिर गंभीरु गहीरु गुणु गुरमुखि गुरु गोबिंदु सदाइआ। . . .
बाबाणे गुर अंगदु आइआ ॥ *(वार २४:५)*

इसी परंपरा में दसवें स्थान में दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भी इसी तथ्य को इन शब्दों में प्रस्तुत किया है :

नानक अंगद को बपु धरा ॥
धरम प्रचुर इह जग मो करा ॥
अमरदास पुनि नामु कहायो ॥
जन दीपक ते दीप जगायो ॥७॥७॥
(बचित्र नाटक)

पाद टिप्पणियां

१. भाई काहन सिंघ : महान कोश, पृष्ठ ७८९, भाषा विभाग, पंजाब, पटियाला, १९६०

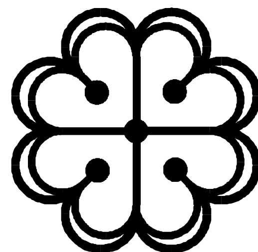
२. बाबू रामचंद्र वर्मा : प्रमाणिक हिन्दी शब्द कोश, पृष्ठ ११२५, साहित्य रत्न प्रकाशन, वाराणसी; संवत् २००६ वि.

३. डॉ. गुरमुख सिंघ (संपा.) : गुरू नानक बंस प्रकाश, पद संख्या २५६५-२५६६, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला।

४. प्रो. साहिब सिंघ (संपा.) : स्री गुरू ग्रंथ साहिब, पोथी सत्तवीं, पन्ना २३०, राज पब्लिशर्ज, जलंधर।

५. डॉ. नवरत्न कपूर : महिमा स्री गुरू अंगद देव जी, पन्ना ५, प्रो. साहिब सिंघ गुरमति ट्रस्ट, पटियाला, सन् २००४





प्रिं तेजा सिंघ-डॉ गंडा सिंघ की नजर में
श्री गुरु अंगद देव जी का संक्षिप्त जीवन-इतिहास

*-बीबी रजवंत कौर**

श्री गुरु अंगद देव जी का जन्म ३१ मार्च, १५०४ ई को गांव मत्ते दी सरां, जिला मुक्तसर (पंजाब) में हुआ। आपके पिता भाई फेरूमल जी थे, जो एक साधारण व्यापारी थे। श्री गुरु अंगद देव जी का प्रथम नाम भाई लहिणा जी था और आप जीवन के पहले पड़ाव देवी के उपासक थे। आप प्रत्येक वर्ष संग लेकर देवी के दर्शनों के लिए जाया करते थे। यह स्थान शिवालिक की पहाड़ियों के निम्न स्थित है।

किसी कारणवश भाई लहिणा जी के पिता भाई फेरूमल जी मत्ते दी सरां से गांव हरीके आ गए और यहीं से फिर खडूर साहिब प्रस्थान किया। यहां ही भाई लहिणा जी का विवाह माता खीवी जी के साथ हुआ। आपके घर दो पुत्र-बाबा दातू जी और बाबा दासू जी एवं दो पुत्रियां-बीबी अमरो जी और बीबी अनोखी जी पैदा हुईं।

खडूर साहिब में रहते हुए भाई लहिणा जी ने गुरु नानक साहिब के सिक्ख भाई जोध से गुरु जी की बाणी सुनी। बाणी सुन कर उनके मन में गुरु जी के दर्शनों की जिज्ञासा पैदा हुई। नियमानुसार जब भाई लहिणा जी देवी के दर्शनों को जा रहे थे तो वे करतारपुर गुरु जी के दर्शन करने के लिए रुक गए। गुरु जी के दर्शन करके वे उनकी रूहानी शख्सियत से अत्यंत प्रभावित हुए। भाई लहिणा जी को देवी-दर्शन, संगी-साथी व परिवार आदि सब भूल गया एवं वहीं गुरु जी के पास रहकर सेवा करने लगे। भाई लहिणा जी गुरु नानक साहिब जी की प्रत्येक आज्ञा को खुशीपूर्वक मानते। भाई लहिणा जी में आज्ञाकारी होने का एक महत्वपूर्ण गुण था। परिणामस्वरूप आप जी गुरगद्दी पर विराजमान हुए और यह गुण आपने सिक्खों में भी दृढ़ करवाया।

श्री गुरु नानक देव जी ने गुरगद्दी का कार्यभार सौंपने से पहले विशेष ध्यान से ऐसे उत्तराधिकारी की परख करके नियुक्ति की जो उनके बाद भी योग्य नेतृत्व कर सके।

श्री गुरु नानक देव जी भाई लहिणा जी को "अंगद" भाव "अपने शरीर का हिस्सा" समझते हुए अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर २२ सितंबर, १५३९ को ज्योति-जोत समा गए।

भाई गुरदास जी गुरु नानक साहिब की रूहानी ज्योति भाई लहिणा जी में प्रवेश करने संबंधी जिक्र करते हैं :

थापिआ लहिणा जींवदे गुरिआई सिरि छत्रु फिराइआ।
जोती जोति मिलाइ कै सतिगुर नानकि रूपु वटाइआ।
लखि न कोई सकई आचरजे आचरजु दिखाइआ।
काइआ पलटि सरूपु बनाइआ ॥ (वार १:४५)

श्री गुरु अंगद देव जी पहले पातशाह के मिशन को पूरा करने के लिए खडूर साहिब में रोजाना सिक्ख संगत को एकत्र करके कथा द्वारा बाणी से जोड़ते एवं कीर्तन करवाते। उन्होंने श्री गुरु नानक देव जी द्वारा चलाई लंगर-प्रथा

**गुरमति लेक्चरार, शहीद सिक्ख मिशनरी कॉलेज, पुतलीघर, श्री अमृतसर।*

को निरंतर जारी रखा। माता खीवी जी लंगर की देखभाल करते थे। लंगर में दूध तथा देसी घी की खीर बनती थी।

श्री गुरु अंगद देव जी अपने हाथों से कार्य करते थे और पटसन की रस्सियां बनाकर घर का गुजारा करते थे। इस तरह आपने सिक्खों को अपने हाथों से कार्य करने का उपदेश दिया। आपने नौजवानों में खेलों के प्रति उत्साह उत्पन्न किया। जिस स्थान पर प्रत्येक दिन युवकों की कुश्तियां करवाते थे उस स्थान पर अब "गुरुद्वारा मल्ल अखाड़ा साहिब" सुशोभित है। आपने सिक्खों को आज्ञाकारी रहने का गुण प्रदान किया। गुरु-घर में कीर्तन करने वाले भाई सत्ता एवं भाई बलवंड जी को जब अहंकार हो गया तो उन्होंने कीर्तन करना बंद कर दिया। गुरु जी ने उनको आज्ञाकारी बनने की शिक्षा प्रदान की।

एक तपा नाम के योगी ने, जो खडूर साहिब में रहता था, उसने लोगों को गुरु जी के खिलाफ भड़काया और अपने चंगुल में फंसा कर गुरु जी को गांव छोड़ जाने के लिए कहा तो बाबा अमरदास जी के सुझाव से गांव के लोगों ने तपे को उसके किए की सजा दी। तब गुरु अंगद साहिब ने बाबा अमरदास जी को कहा कि आपको इस तरह दुखी नहीं होना चाहिए था। आपको धरती जैसे सहनशीलता तथा दुख-सुख में पर्वत जैसे स्थिर रहना चाहिए था। इस प्रकार गुरु साहिब जी ने गुरु नानक साहिब के आदर्शों को विशेषता प्रदान की।

श्री गुरु अंगद देव जी ने श्री गुरु नानक देव जी की बाणी को विशेष लिपि 'गुरमुखी' में लिखवाया। गुरु नानक साहिब ने पंजाबी भाषा को विशेष सम्मान प्रदान किया। इससे पहले संस्कृत को देव-भाषा माना जाता था जो कि लिखने-पढ़ने में बहुत कठिन थी और हमारे देश के जनसाधारण के लिए कठिन फारसी को भी विशेष स्थान प्राप्त था, परंतु गुरु साहिब ने पंजाबी भाषा को प्राथमिकता दी। श्री गुरु अंगद देव जी ने प्रचलित लिपि को सुधारा एवं उसे विशेष सम्मान तथा नाम प्रदान किया। इस लिपि का नाम गुरमुखी पड़ा भाव 'गुरु के मुख' से निकले अक्षर। इस तरह श्री गुरु अंगद देव जी के बाणी लिख कर संभालने से श्री गुरु ग्रंथ साहिब का आधार बनना शुरू हो गया एवं जिन्होंने भी इस बाणी को पढ़ा उन्होंने विशेष प्रकार का मार्गदर्शन पाया कि गुरु के प्रति उनके क्या फर्ज हैं।

श्री गुरु अंगद देव जी ने उपरोक्त यत्नों के फलस्वरूप सिक्ख धर्म की आधारशिलाओं को मजबूत करने में महत्वपूर्ण एवं अकथनीय योगदान प्रदान किया। आपने अपना उत्तराधिकारी नियुक्त करने के लिए अपने पुत्रों तथा सिक्खों की विशेष परख की जिनमें श्री (गुरु) अमरदास जी सफल हुए। इन्हें योग्य समझ कर गुरगद्दी प्रदान कर आप ४८ वर्ष की आयु के बाद २९ मार्च, १५५२ ई को ज्योति-जोत समा गए।

इस प्रकार प्रिं. तेजा सिंघ-डॉ. गंडा सिंघ द्वारा द्वितीय पातशाह श्री गुरु अंगद देव जी के जीवन को भले ही संक्षिप्त रूप से उल्लेख किया है मगर दी गई जानकारी महत्वपूर्ण होने के कारण सिक्ख इतिहास की स्रोत पुस्तकों में इस 'सिक्ख इतिहास' नामक पुस्तक का उल्लेखनीय स्थान है।



प्रिं सतिबीर सिंघ द्वारा लिखित पुस्तक 'कुदरती नूर' में श्री गुरु अंगद देव जी सम्बंधी ऐतिहासिक विवरण

*-प्रिं अमरजीत कौर**

'कुदरती नूर' नामक पुस्तक प्रिं सतिबीर सिंघ की एक ऐतिहासिक पुस्तक कही जा सकती है जिसमें उन्होंने पुरातन ऐतिहासिक ग्रंथों में से हवाले देकर श्री गुरु अंगद देव जी के जन्म से ज्योति-जोत समाने तक का जिक्र बहुत ही खूबसूरती से किया है।

प्रिंसीपल सतिबीर सिंघ ने सबसे पहले श्री गुरु अंगद देव जी के जन्म-स्थान मत्ते दी सरां का जिक्र किया है कि यह पुरातन ऐतिहासिक गांव तैमूर के हमले के दौरान उजड़ गया और फिर बसता रहा। यहां के लोग बहुत धनी थे। इसी कारण ये मुगलों के हमलों का शिकार बना। लेखक ने यह भी लिखा है कि यह सरां (सराय) किसी नांगे साधू द्वारा बसाई हुई नहीं थी, बल्कि यह नगीने और हीरे-मोतियों की सरां थी जो मुगलों के हमलों का शिकार बनी।

श्री गुरु अंगद देव जी के पिता श्री फेरूमल जी की मत्ते दी सरां में ननिहाल थी। श्री फेरूमल जी का विवाह बीबी सभराई (रामो) जी से हुआ और इसी गांव में माता सभराई जी की कोख से श्री गुरु अंगद देव जी का जन्म ३१ मार्च, १५०४ ई. को हुआ। श्री गुरु अंगद देव जी का पहला नाम 'लहिणा' था। श्री फेरूमल जी अच्छे पढ़े-लिखे फारसी विद्या के माहिर थे, इसी कारण उन्होंने अपने सपुत्र श्री लहिणा जी की पढ़ाई का विशेष प्रबंध किया। बचपन में भी गुरु जी अपने साथियों के साथ खेलते समय उनको गलत कामों से रोकते। गुरु जी शुरू से ही शांत और सब्र-संतोष की मूरत थे। इसी वर्ष बाबर ने फिर हमला कर दिया और सरां उजाड़ दी। श्री फेरूमल जी का व्यापार खत्म हो गया। फिर वे गांव हरीके आ गए और यहां आकर शाहूकारा और दुकान आरंभ की। श्री फेरूमल जी वहां से हर साल संगत लेकर ज्वालामुखी जाते और बाद में उनकी दुकान और शाहूकारा भाई लहिणा जी संभालते। वे कुछ समय बाद हरीके से संघर गांव में आ बसे। यहां आकर फिर वही कारोबार आरंभ किया। १५२६ में बाबा फेरूमल जी अकाल चलाणा कर गए और घर की सारी जिम्मेवारी भाई लहिणा जी पर आ गई।

भाई लहिणा जी के घर दो सपुत्रों--बाबा दासू जी और बाबा दातू जी तथा दो सपुत्रियों--बीबी अमरो जी और बीबी अनोखी जी का जन्म हुआ। फिर भाई लहिणा जी संघर से खडूर आ बसे। गुरु नानक साहिब ने उन्हें संघर और खडूर में दर्शन दिए थे। आप ने यहां एक दुकान खोल ली और शाहूकारा करने लगे। दिनों में ही आपका तेज प्रताप बढ़ गया और आप अगुआ के रूप में परिचय पाने लगे। जो भी लड़ाई-झगड़ा होता लोग उसका निपटारा आप जी से करवाते। आप दान-पुन्य में भी बहुत रुचि रखते। जब कामकाज से कुछ निजात मिलती तो ऊंची-ऊंची आवाज मे माता के गीत गाते और ज्वालामुखी के दर्शनों को जाते।

प्रिंसीपल सतिबीर सिंघ ने लिखा है कि एक समय जब भाई लहिणा जी ज्वालामुखी के दर्शनों

*न्यू अमृतसर मॉडल स्कूल, गोबिंद नगर, भुल्लर रोड, बटाला (गुरदासपुर)-१४३५०५

को गए तो योगियों और फकीरों के मुख से गुरु नानक साहिब के गुण सुने तो मन में ठंडक पहुंची और दिल में उनके दर्शनों की चाह पैदा होने लगी। जब घर आए तो फिर व्यापार में फंस गए। फिर एक समय जब गुरु नानक साहिब के सिक्ख भाई जोध जी से गुरु साहिब की बाणी का पाठ सुना तो मन में फिर गुरु साहिब के दर्शनों की चाहत पैदा हुई। मिलने की चाहत के साथ अगली बार ज्वालामुखी के दर्शनों को जाते समय करतारपुर रुकने का मन बनाया। उस समय करतारपुर में काफी चहल-पहल हो गई थी। लेखक ने यहां पर "सेवा राम कीआं परचीआं" और 'महिमा प्रकाश' वारतक में से हवाले भी दिए हैं।

भाई लहिणा जी घोड़ी पर सवार करतारपुर पहुंच गुरु नानक साहिब के दर्शनों को निकल पड़े और उधर गुरु नानक साहिब आगे से भाई लहिणा जी को लेने चल पड़े। राह में मेल हुआ। भाई लहिणा जी घोड़ी रोक कर गुरु नानक देव जी के घर का पता पूछने लगे। गुरु जी ने कहा, "पुरखा! मेरे पीछे घोड़ी ले आओ।" धर्मशाल पहुंच गुरु जी ने कहा, "घोड़ी खूंटे के साथ बांध कर अंदर चले आओ।" अंदर कीर्तन हो रहा था। अंदर जाकर भाई साहिब ने गुरु जी को माथा टेका और गुरु साहिब ने हाथों से आशीष देते हुए ऊपर उठाया तो भाई लहिणा जी शर्मिंदा हुए। गुरु जी ने पूछा, "तेरा नाम क्या है?" जब उत्तर मिला 'लहिणा' तो गुरु जी कहने लगे, "लहणेदार घोड़ियों पर चढ़कर ही आते हैं।" भाई जी का मन कीर्तन सुनकर टिक गया। भाई लहिणा जी ने रात सपने में देखा कि जिस देवी के दर्शनों को वे जा रहे थे वो तो इस द्वार पर झाड़ू दे रही है :

--लहणे को तहां, दरशन देवी का भइआ।
लहणा जी रहे साथ, संग उठ गिआ ।२३।
(बंसावलीनामा)

--तब देवी मुक्ख बचन प्रकासी।
गुरू नानक की मैं हों दासी।
जिह दरशन चालै तुम सो मम इहा बुहार।१४८।
(गुर बिलास पातशाही छेवीं)

संग के साथ न जाकर चार दिन भाई लहिणा जी करतारपुर में संगत का रस मानते रहे। फिर गांव वापिस जाकर कामकाज को समेट दोबारा करतारपुर आए। माता खीवी जी को घर-गृहस्थी सौंप घर से चलते समय नमक की बोरी और चटाई ले करतारपुर की ओर चल पड़े।

गुरु नानक साहिब की प्रत्येक परीक्षा में से अकेले भाई लहिणा जी ही पास होते रहे। आखिरी परीक्षा में जब गुरु साहिब ने भयंकर रूप धारण किया तो सभी सिक्ख-सेवक डर और लालच के कारण पीछे मुड़ गए। जब गुरु जी ने देखा कि सिर्फ भाई लहिणा जी ही उनके पीछे हैं तो गुरु जी ने कहा कि "सब चले गए, तू क्यों नहीं जाता?" तो भाई लहिणा जी ने कहा, "सभी का कोई न कोई ठिकाना होगा, मेरा आपके बगैर कोई नहीं।" तब गुरु साहिब कह उठे, "लहिणा जी! आपके बगैर मेरा भी कोई नहीं। मैं भी ज्योति टिकाने के लिये ठिकाना ढूंढ रहा था, आज मिला है।" ये वचन कह कर कहा, "मुर्दा पड़ा है, खाओ।" आप जी ने कहा, "किस तरफ से खाऊं?" गुरु साहिब जान रहे थे कि बगैर नम्रता के इस नाशवान शरीर का ध्यान नहीं मिट सकता। यह नम्रता को ही फल लगा है कि गुरु नानक साहिब ने भाई लहिणा जी को गुरगद्दी की जिम्मेवारी बख्शी।

यह दुनिया में आए इंकलाबों में से एक अनोखी तरह का इंकलाब था, जिसमें गुरगद्दी

पर बैठने वाले का गुरगद्दी देने वाले से दूर का रिश्ता भी नहीं था। रिश्ता था सिर्फ भक्ति-भाव का। भाई गुरदास जी ने इस इंकलाब की व्याख्या बड़े सुंदर ढंग से की है कि किसी तरफ से देखें तो यह निराली चाल थी, नई बात थी, युग पलटाऊ और शानदार इंकलाब था।

सन् १५३९ सितंबर माह में गुरु नानक साहिब ज्योति-जोत समा गए। ज्योति-जोत समाने से पहले आपने गुरु अंगद साहिब को खडूर साहिब चले जाने का हुक्म कर दिया।

संघर आकर गुरु अंगद साहिब माता भिराई के घर रहने लगे और उसे हुक्म किया कि किसी को बताना मत। गुरु साहिब सादा भोजन छककर परमात्मा की बंदगी करते। संगत व्याकुल होकर गुरु साहिब के न मिलने पर बाबा बुड्ढा जी के पास गई और बाबा जी संगत के साथ संघर पहुंचे और माता भिराई से गुरु साहिब के बारे में पूछने लगे। गुरु-हुक्म में बंधी माता के 'मुझे मालूम नहीं' कहने पर बाबा जी वहीं भाई बलवंड जी के साथ मिलकर शबद-कीर्तन करने लगे। गुरु जी कीर्तन सुनकर बाहर आए, संगत को दर्शन दिए और खडूर साहिब आकर ठिकाना किया। संगत भी खडूर साहिब पहुंचने लगी।

गुरु अंगद साहिब पहर रात रहते उठते, स्नान करते, फिर परामत्मा का ध्यान करते, प्रभात समय धर्मशाल पहुंच जाते। गुरु साहिब का तेज प्रताप इतना था कि जिस पर भी गुरु साहिब की दृष्टि पड़ती उसके दुख, दर्द, आलस, रोग, संताप सब दूर हो जाते। खडूर साहिब में सारा दिन लंगर चलता। लंगर में वर्ण-भेद, ऊंच-नीच की भावना खत्म कर सभी को एक साथ लंगर छकने का आदेश किया। लंगर छकने के बाद जो कुछ बचता उसे पशु-पक्षियों को डालते। गुरु साहिब खुद बान बटते और अपनी किरत-कार करते।

बान बटते समय खडूर साहिब के बालकों को बुलाकर खुद पढ़ाते, शिक्षा देते, बाल-बोध के कायदे लिखकर देते, उनके साथ ही खेलते। फिर तीसरे पहर अखाड़ा बनाकर पहलवानों की कुश्ती करवाते और हार-जीत को एक जैसा जानने का उपदेश देते। फिर शाम को भाई बलवंड रबाबी के साथ शबद की चौंकी भरते, सिक्खों को उपदेश देते।

प्रिं सतिबीर सिंघ ने हुमायूं बादशाह के गुरु जी से हुए वचन-बिलास को भी तिथियों सहित और ग्रंथों में से हवाले देकर बड़े सुंदर ढंग से वर्णन किया है। इस समय गुरु जी की निडरता का प्रमाण भी मिलता है।

प्रिं सतिबीर सिंघ ने खडूर साहिब में गुरु साहिब द्वारा वहां पर आए सिक्खों की आशंकाओं का निवारण कर उनको सिक्खी धारण करने और परमात्मा का नाम जपने के उपदेश को बहुत खूबसूरती से बयान किया है। जो लोग गुरु साहिब के हजूर आते वे झोलियां भर कर ले जाते।

लेखक ने गुरु अंगद साहिब की प्रचार-यात्राओं का वर्णन भी इस पुस्तक में किया है। गुरु साहिब संगत की विनती मान उनके इलाके में प्रचार और परमात्मा का उपदेश देने गए। सबसे पहले गुरु साहिब मालवे की संगत को निहाल करते हुए सुलतानपुर, मखू, जीरा, मत्ते दी सरां से होते हरीके पहुंचे। वहां से फिर कोट ईसे खान, पंजतूर होते ब्यास पार कर खडूर साहिब जा विराजे।

प्रिं सतिबीर सिंघ ने यहां एक और हवाला दिया है कि गुरु अंगद साहिब ने श्री गुरु नानक देव जी से सिर्फ तीन वस्तुएं ही मांगी थीं, एक कमरकस्सा, दूसरी पोथी और तीसरे रबाबी,

(शेष पृष्ठ ४८ पर)

"सिक्ख इतिहास" कृत प्रो. करतार सिंघ में श्री गुरु अंगद देव जी का जीवन-वर्णन

*-स. ऊधम सिंघ**

प्रो. करतार सिंघ द्वारा लिखित पुस्तक 'सिक्ख इतिहास' गुरु साहिबान के जीवन-चरित्र को दर्शाती बहुत ही विलक्षण पुस्तक है। इसमें प्रो. करतार सिंघ ने दस गुरु साहिबान के जीवन को बहुत ही खूबसूरती से वर्णित किया है।

प्रो. करतार सिंघ ने श्री गुरु अंगद देव जी की जीवनी को इस पुस्तक में पन्ना ११५ से १३८ तक वर्णित किया है। पहले कांड में गुरु साहिब के श्री गुरु नानक देव जी के साथ मिलाप से पहले का जीवन वर्णित किया है। इसमें लेखक ने बहुत ही बुद्धिमानता से गुरु अंगद साहिब के जन्म के बारे में विद्वानों में पाए जाते मतभेदों को दूर करते हुए गुरु साहिब का जन्म वैसाख वदी १ (५ वैसाख, सं. १५६१), ३१ मार्च, १५०४ को हुआ प्रमाणित किया है। इसमें गुरु साहिब की जन्म-नगरी, माता-पिता, संघर में निवास और गुरु-दर्शन के लिए विह्वलता आदि का वर्णन किया है।

श्री गुरु अंगद देव जी का जन्म गांव 'मत्ते दी सरां' (सराय नागा, श्री मुकतसर) में बाबा फेरूमल जी के घर माता सभराई जी की कोख से हुआ। बाबा फेरूमल जी एक बहुत ही धनाढ्य और महान पुरुष थे। वे दुकानदारी करते और देवी-भक्त थे। वे हर साल जत्था बनाकर माता ज्वालामुखी के दर्शनों के लिए जाते थे।

श्री गुरु अंगद देव जी का विवाह श्री देवीचंद की सपुत्री खीवी जी के साथ हुआ। उनके घर दो बेटे--बाबा दातू जी तथा बाबा दासू जी और दो बेटियां--बीबी अमरो जी तथा बीबी अनोखी जी पैदा हुईं। गुरु अंगद साहिब की शादी के बाद उनके पिता बाबा फेरूमल जी ने मत्ते दी सरां छोड़ संघर गांव में निवास कर लिया, क्योंकि वहां के इलाके का चौधरी बाबा फेरूमल जी से बेवजह ही लड़ाई-झगड़ा करता था। बाबा फेरूमल जी के अकाल चलाणे के बाद श्री गुरु अंगद देव जी, जिनका नाम पहले भाई लहिणा जी था, खुद जत्था लेकर ज्वालामुखी के दर्शनों के लिए जाते, परंतु मन फिर भी उदास रहता।

एक समय श्री गुरु नानक देव जी के सिक्ख भाई जोध जी द्वारा 'जपु जी' और 'आसा की वार' का पाठ करने की आवाज भाई लहिणा जी को सुनाई पड़ी। भाई लहिणा जी रात भर माता का जागरण कर सुबह एक स्थान पर पहुंचे जहां भाई जोध जी पाठ कर रहे थे। पाठ को सुनते ही मन में एक लहर-सी उठी और भाई लहिणा जी भाई जोध जी के पास जा बैठे। भाई जोध जी पाठ करते गए और भाई लहिणा जी आंखें मुंदे पाठ सुनते गए। पाठ सुनते ही भाई लहिणा जी के मन को ऐसी शांति प्राप्त हुई जो पहले कभी नहीं हुई। पाठ करने के बाद जब भाई लहिणा जी ने आंखें खोलीं तो भाई लहिणा जी ने पूछा कि आप किसकी बाणी पढ़ते-गाते थे? भाई जी ने उत्तर दिया कि यह 'धुर की बाणी' श्री गुरु नानक देव जी की है जो जगत का उद्धार करने निरंकार की हजूरी में से आए हैं और वे इस समय करतारपुर में

**VPO : चविंडा देवी, श्री अमृतसर। मो. : ९८५५५-९६९२२*

लोगों के जीवन का उद्धार कर रहे हैं।

कांड २ में प्रो करतार सिंघ ने गुरु नानक साहिब और भाई लहिणा जी के मिलाप को बहुत ही अच्छे ढंग से वर्णन किया है। इस कांड में गुरु साहिब और भाई लहिणा जी के बीच हुई वार्तालाप को भी लेखक ने बड़ी खूबसूरती से बयान किया है।

संवत् १५८९ में भाई लहिणा जी हर साल की तरह संग लेकर माता ज्वालमुखी की यात्रा के लिए निकल पड़े, लेकिन इस बार भाई लहिणा जी का लक्ष्य और था। उन्होंने पक्का मन बना लिया कि इस बार करतारपुर होकर जाना है। वे पहले करतारपुर पहुंचे और अपना पड़ाव गांव के बाहर कर लिया। सारी रात संग में माता की भेटें गूंजती रहीं। सुबह होते ही भाई लहिणा जी गुरु साहिब के दर्शन करने घोड़ी पर चढ़ कर चल पड़े। कुछ दूर ही गए तो रास्ते में आपको गुरु साहिब मिल गए, लेकिन भाई लहिणा जी को कुछ पता न चला। भाई जी ने उनसे पूछा कि "मैंने गुरु नानक साहिब के दर्शन करने हैं, मुझे रास्ता बताएं।" गुरु जी ने कहा, "पुरखा! मेरे पीछे-पीछे चले आओ।" भाई लहिणा जी घोड़ी पर चढ़े हुए और गुरु जी पैदल चल पड़े। अपनी धर्मशाल के बाहर पहुंच कर गुरु जी ने भाई लहिणा जी से कहा कि घोड़े को वृक्ष से बांध उस दरवाजे से अंदर चले आओ। गुरु जी धर्मशाल के अंदर जाकर अपने आसन पर विराज गए। जब भाई लहिणा जी अंदर गए और जल्दी से माथा टेक कर ऊपर देखा तो गद्दी पर वही पुरख विराजमान थे जो भाई लहिणा जी को यहां लेकर आए थे। यह देख भाई जी का सिर शर्म से झुक गया और अश्रु बहाते हुए कहने लगे, "मुझे क्षमा कर दीजिए, मेरे से बहुत बड़ी भूल हो गई। मैं घोड़ी पर चढ़ा और आप पैदल थे। मुझे बख्शो।" यह कहते हुए वे गुरु-चरणों पर गिर पड़े। गुरु जी ने उन्हें उठाकर कहा, "उठो, तुमसे कोई भूल नहीं हुई, तुम मेरे अतिथि हो। तुम्हारा आदर करना मेरा फर्ज है। परमात्मा भली करेगा।" गुरु जी ने फिर पूछा, "तुम्हारा नाम क्या है और तुम कहां से आए हो?" भाई जी ने कहा, "मेरा नाम लहिणा है और मैं खडूर से आया हूं।" गुरु जी हंस पड़े और कहा, "वाह पुरखा! तूं लहिणा हैं ते असीं तेरा देणा है।" (अर्थात् तूने लेना है और हमने देना है।)

फिर गुरु जी ने हालचाल पूछ सिक्खी रहित के बारे में वचन किए। भाई लहिणा जी का मन शांत होकर सरूर से भर गया। उन्होंने वहीं टिकने का मन बना लिया। भाई जी के संगी उनकी प्रतीक्षा कर उनके पास आए और साथ चलने को कहा परंतु भाई लहिणा जी ने इंकार कर दिया और कहा, "मुझे अब देवी के दर्शनों की आवश्यकता नहीं, मुझे पूरा गुरु मिल गया है।" भाई लहिणा जी करतारपुर में टिक गए और नाम जपते हुए सेवा करते रहे। फिर गुरु जी के कहने पर भाई जी कुछ दिनों के लिए खडूर चले आए और अपना सारा प्रबंध करके करतारपुर वापस आ गए।

खडूर से जब भाई लहिणा जी करतारपुर जाने लगे तो अपने साथ गुरु जी के लंगर के लिए नमक की गठरी सिर पर उठाकर चल पड़े। गुरु जी के डेरे पहुंच जब गुरु जी के बारे में पूछा तो माता जी द्वारा खेतों में होने का पता लगने पर जल्दी से खेतों की ओर चल पड़े। खेतों में पहुंच गुरु जी के साथ खरपतवार निकालने लगे। गुरु जी द्वारा काम खत्म कर घर वापिस आते समय और खेतों में से निकाले खरपतवार की गांठ भाई लहिणा जी ने अपने सिर पर उठा ली। घर पहुंचते कीचड़ के छींटे भाई लहिणा जी के रेशमी कपड़ों पर पड़ गए।

माता जी द्वारा पूछने पर कि "सिक्ख को यह कीचड़ भरी गांठ क्यों उठवाई", तो गुरु साहिब ने कहा कि "इसके सिर पर घास की गठरी नहीं, दीन-दुनी का छतर है, जो इस नौजवान सिक्ख ने उठाना है अपने सिर पर। ये 'कीचड़' के छींटे नहीं 'केसर' के छींटे हैं। देखो करतार के रंग।"

भाई लहिणा जी करतारपुर में गुरु साहिब के चरणों में सेवा करने लगे और हर समय परमात्मा का नाम जपते रहते। इस तरह सेवा करते तीन साल बीत गए। भाई लहिणा जी को गुरु जी के इतना नजदीक होता देख उनके सपुत्र बाबा सिरीचंद जी और बाबा लखमीदास जी भाई लहिणा जी से ईर्ष्या करने लगे। गुरु साहिब द्वारा इस ईर्ष्या को शांत करने के लिए गुरु नानक साहिब ने भाई साहिब जी को आज्ञा की कि "कुछ समय खडूर जा आओ, फिर बुला लेंगे।" आज्ञा पाकर भाई लहिणा जी खडूर चले गए।

इसके बाद प्रो. करतार सिंघ द्वारा भाई लहिणा जी का फिर करतारपुर जाना और गुरु नानक साहिब द्वारा भाई साहिब की ली परीक्षाओं का वर्णन किया मिलता है। गुरु साहिब द्वारा भाई साहिब की ली गई परीक्षओं में सबसे पहले सर्दी की रात में गुरु जी का रावी दरिया पर स्नान करने जाना और ओलावृष्टि में भी भाई लहिणा जी द्वारा गुरु जी का दामन थामे रहना तथा बाकी के सिक्खों का वापस चले आना; फिर सर्दी की एक रात में वर्षा के कारण दीवार का कुछ भाग गिर जाना और गुरु जी के हुक्म से दीवार को बार-बार बनाना, फिर एक बार गुरु जी के कहने पर आधी रात को ही गुरु जी के कपड़े दरिया में से धोकर लाना; फिर नाले में से गुरु जी का कटोरा निकालना और आखिरी परीक्षा में गुरु जी द्वारा भयंकर रूप बनाकर जंगल में शिकार खेलने जाना और लालच, डर देकर अपने सिक्खों को डराना और फिर भाई लहिणा जी के साथ होने पर उनको एक मुर्दा खाने को कहना; इन सब कड़ी परीक्षाओं में भाई लहिणा जी का सफल होना और गुरु जी के पुत्रों और दूसरे सिक्खों का गुरु जी का हुक्म न मानना ही भाई साहिब को गुरगद्दी का हकदार बनाता है। गुरु नानक साहिब ने अपनी सचखंड वापसी से बहुत समय पहले ही भाई लहिणा जी को गुरगद्दी सौंपने का फैसला कर लिया। १७ आषाढ़ संवत् १५९६ (१४ जून, १५३९) को भाई जी को गुरगद्दी पर विराजमान कर 'भाई लहिणा जी' से 'गुरु अंगद देव जी' बनाकर अपने अनोखे और अद्भुत मिशन को पूरा करने की रीति चलाई। फिर गुरु नानक साहिब ने गुरु अंगद साहिब को खडूर में जाकर रहने का हुक्म किया।

खडूर साहिब पहुंच कर श्री गुरु अंगद देव जी माता सभराई जी के घर गुप्तवास का समय व्यतीत करने लगे और माता को हुक्म किया कि इस बात का पता किसी को नहीं लगना चाहिए। गुरु जी उस घर में सादी रोटी खाकर भजन-बंदगी में लीन रहने लगे। कुछ समय बाद गुरु अंगद साहिब को गुरु नानक साहिब के ज्योति-जोत समाने की खबर मिली जिससे उनके मन को बहुत दुख हुआ। संगत करतारपुर से खडूर साहिब गुरु साहिब के दर्शनों को आने लगी परंतु गुरु जी के दर्शन न होने के कारण निराश वापस लौटती। कुछ सिक्ख संगत बाबा बुड्ढा जी की अगुवाई में आई और बाबा जी ने अपनी सूझबूझ से गुरु अंगद साहिब का माता सभराई के घर में होने का पता चला। सारी संगत वहां पहुंची और गुरु जी को सामने आकर दर्शन देने की विनती की। विनती मान कर गुरु जी ने गुप्तवास त्याग दिया और गुरगद्दी

की कार तथा जिम्मेदारी संभाली।

लेखक लिखता है कि गुरु अंगद साहिब ने गुरगद्दी के समय के दौरान सबसे पहला काम गुरु नानक साहिब की बाणी को इकट्ठा करने और उनकी जीवनी को लिखित रूप देने का किया। गुरु अंगद साहिब ने गुरु नानक साहिब के जन्म-स्थान, सुलतानपुर लोधी और करतारपुर निवास-समय के सभी जीवन-समाचारों को इकट्ठा किया और उसे एक तरतीब देकर जन्म-साखी तैयार करवाई।

प्रो. करतार सिंघ ने इसमें हवाला देकर शोक (दुख) जताया है कि इस जन्म-साखी का पहले और प्रमाणिक खरड़े का कोई भी ठीक उतारा नहीं मिलता। इस जन्म-साखी में पहले प्रिथिये और उसके पुत्र मेहरबान ने, फिर हिंदालियों ने मिलावट कर इसे गुम कर दिया तथा इसकी जगह और कोई जन्म-साखी लिखी एवं लिखने का संवत् भी गलत छापा। इनमें से एक जन्म-साखी 'भाई बाले वाली जन्म-साखी' के नाम से प्रसिद्ध हुई।

श्री गुरु अंगद साहिब खडूर में दरबार लगाते और संगत को परमात्मा का उपदेश देकर जीवन-मुक्त करते। गुरु साहिब बच्चों में गुरमुखी लिपि का प्रचार करते और सिखाते। गुरु साहिब ने सिक्खों को मन और आत्मा से मजबूत व बलवान बनाने के लिए शारीरिक कसरतें करने और मल्ल अखाड़ा में आने का उपदेश दिया और कहा कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन और आत्मा निवास कर सकती है। गुरु साहिब ने संगत को परमात्मा के हुक्म में रहने का उपदेश दिया।

प्रो. करतार सिंघ के अनुसार गुरु अंगद साहिब सच और धर्म-न्याय का उपदेश देने वाले, ईर्ष्या-द्वेष को मन से निकाल क्षमा करने वाले, बुरों से अच्छा व्यवहार करने वाले, परमात्मा की आज्ञा का पालन करने वाले, साहसी व सहनशीलता की मूर्ति थे। गुरु जी की निडरता का सबूत इस बात से भी मिलता है कि संवत् १५९७ (सन् १५४०) को शेरशाह सूरी से हार खाकर बादशाह हुमायूं लाहौर की तरफ जा रहा था। वो पीरों-फकीरों की दुआएं और आशीष प्राप्त करने का चाहवान था। जाते-जाते वो ब्यास दरिया लांघा तो उसे पता चला कि उसके पिता बाबर को वर और उपदेश देने वाले गुरु नानक साहिब की गद्दी पर इस समय बैठे खडूर में दरबार लगाते हैं, वो वहां पहुंच गया। जब वो पहुंचा तो गुरु साहिब बालकों के करतब देख रहे थे। गुरु जी ने उसकी ओर ध्यान न दिया। उसे गुस्सा आ गया और घोड़े पर बैठे ही तलवार निकाल कर गुरु जी की तरफ बढ़ा। गुरु जी ने हंसकर कहा, "बादशाह! जो तलवार तुम फकीरों पर निकाल रहे हो वो शेरशाह सूरी के समय कहां थी?"

हुमायूं शर्मिंदा हुआ, घोड़े से उतर कर नमस्कार की और गुरु जी से क्षमा मांगी। गुरु नानक साहिब के उपदेश से शरण आए को माफ करना तो गुरु साहिब का धर्म था। गुरु जी ने उसे सच, धर्म व न्याय का उपदेश एवं आशीर्वाद देकर विदा किया।

गुरु अंगद साहिब 'करतार के भाणे' को सदा मीठा करके मानने का उपदेश देते और परमात्मा के कार्य में विघ्न डालने के सख्त खिलाफ थे। शिवनाथ तपे द्वारा गुरु साहिब से ईर्ष्या और वैर-भावना करते लोगों को अपनी ओर खींचने का उदाहरण देते हुए प्रो. करतार सिंघ लिखते हैं कि शिवनाथ अपने अंदर से गुरु साहिब से ईर्ष्या करता था। वो गुरु साहिब की संगत में बढ़ रहे प्यार को सहन नहीं कर पाया। कुदरत के रंग, उस साल वर्षा न होने के कारण धरती में सूखा पड़ गया। उसे लोगों

को भड़काने का मौका मिल गया और कहने लगा कि तुम्हारा गुरु 'गृहस्थी' है। इसने इंद्र देवते को नाराज किया है। इसे गांव से बाहर निकाल दो तो वर्षा हो जाएगी। कुछ लोग तपे की बातों में आकर ऐसा ही कहने लगे तो गुरु जी ने कहा, "ठीक है, अगर मेरे यहां से चले जाने से बारिश हो जाएगी तो मैं तैयार हूं। आपका भला हो!"

गुरु जी संगत समेत खडूर साहिब से चले गए और खान रजादे के क्षेत्र में बैठ गए। उधर कुछ दिन बीते तो लोग तपे के पास गए कि अब वर्षा कराओ। तपा लगा जादू-मंत्र करने, लेकिन बारिश कैसे होती? थोड़े समय के पश्चात श्री (गुरु) अमरदास जी भी बासरके से खडूर साहिब आ गए। उन्हें सारी बात का पता चला। उन्होंने लोगों को समझाया कि सारी शक्तियों के मालिक तो परमात्मा खुद हैं, उनको एक मन से याद करेंगे तो बारिश हो जाएगी। लोगों ने ऐसा ही किया तो वर्षा होनी शुरू हो गई। लोग तपे के पास जा इकट्ठे होने लगे और उसे पकड़कर खेतों में घसीटने लगे, घसीटते-घसीटते तपे की मृत्यु हो गई।

श्री (गुरु) अमरदास जी गुरु साहिब के पास खान रजादे गए। गुरु जी उनसे नाराज होकर पीठ दिखा कर बैठ गए। श्री (गुरु) अमरदास जी ने विनती की कि अगर कोई भूल हो गई हो तो माफ करना। गुरु जी बोले, "आपने करामात क्यों दिखाई? परमात्मा की रजा से ही हम खडूर से यहां आए हैं। बुरे का भी भला करो, अपराधी को माफ करना सीखो, सिक्खी यही सिखाती है।"

इस प्रकार गुरु जी ने लोगों को समझाया कि परमात्मा की रजा में रहना चाहिए। परमात्मा जो करता है वो सब लोगों के भले के लिए ही होता है। इस प्रकार की एक और घटना को प्रो करतार सिंघ ने गुरु अंगद साहिब के गुरगद्दी-समय के दौरान घटित होने पर उसे इस प्रकार अंकित किया है कि खडूर से तीन कोस दूरी पर एक गुरसिक्ख रहता था। वो रोजाना गुरु के लंगर के लिए दहीं और खिचड़ी लेकर आता था। उसके बाद इस सेवा को उसकी लड़की जिवाई ने निभाया। एक दिन जब वो दहीं-खिचड़ी लेकर जाने लगी तो जोर से आंधी चलने लगी। जिवाई ने अरदास की कि आंधी रुक जाए ताकि मैं इसे गुरु के लंगर तक पहुंचा सकूं। कुछ देर बाद आंधी रुक गई और वो दहीं-खिचड़ी लेकर खडूर पहुंच गई। उस दिन गुरु जी ने दहीं-खिचड़ी खाने से इंकार कर दिया। जिवाई ने कारण पूछा तो गुरु जी ने कहा, "पुत्री! तुमने परमात्मा की रजा में खलल डाला है। यह तुमने ठीक नहीं किया। हमें परमात्मा की आज्ञा में रहना चाहिए। इस आंधी ने कई जीवों का भला करना था। गुरसिक्ख परमात्मा की रजा में ही राजी रहते हैं।"

प्रो करतार सिंघ ने बहुत खूबसूरती से गुरु अंगद साहिब के जीवन पर रोशनी डाली है। गुरु अंगद साहिब सेवा की मूरत, बुरे का भला करने वाले, क्षमादानी, गुरु-हुक्म का पालन करने वाले, परमात्मा की रजा में राजी रहने का संदेश देने वाले, गुरसिक्खी जीवन जीने वाले, गुरु-ज्योति थे। उन्होंने लोगों को मन और आत्मा को स्वस्थ रखने के लिए सबसे पहले शरीर को स्वस्थ रखने पर बल दिया कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन और आत्मा निवास करती है। यही गुरु अंगद साहिब के सिद्धांत थे।

अपनी सचखंड वापसी निकट जान गुरु अंगद साहिब ३ वैसाख, संवत् १६०९ (२९ मार्च, १५५२) को श्री (गुरु) अमरदास जी को गुरगद्दी बख्श कर ज्योति-जोत समा गए।



श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ में
श्री गुरु अंगद देव जी का जीवन तथा महिमा

*-स. जसविंदर सिंघ**

सिक्ख इतिहास और विशेषत: गुरु साहिबान के इतिहास की सृजना करने में लोक-कथाओं तथा रीतियों का विशेष योगदान है। जन्म-साखियां और गुर बिलास तो मात्र सिक्ख परंपराओं के ही लिखित रूप हैं। इनका मुख्य आधार पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही परंपराएं हैं। इसी प्रकार 'गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' ने स्पष्ट रूप में अंकित किया है कि इस ग्रंथ का आधार भाई राम कुइर की बतायीं तथा अन्य प्रचलित भाई मनी सिंघ जी द्वारा बतायीं रिवायतों पर निर्भर है। भाई राम कुइर के पूर्वज बाबा बुड्ढा जी श्री गुरु नानक देव जी से लेकर छठे पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के समय तक गुरु-घर के साथ जुड़े रहे। वे हरेक योग्य उत्तराधिकारी को गुरगद्दी देने के समय की रस्में अदा करते रहे। आगे उनकी संतान यह फर्ज निभाती रही। भाई राम कुइर जी दसवें पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के समकालीन थे। बाद में अमृत छककर ये भाई गुरबखश सिंघ बन गए थे।

भाई कान्ह सिंघ नाभा लिखते हैं कि इन्होंने दसवें पातशाह को अत्यधिक प्रश्न करके पूर्बले गुरु साहिबान का जीवन ज्ञात किया। फिर वह भाई साहिब सिंघ से लिखवाया गया था। वह पोथी बाद में भाई संतोख सिंघ की रचना 'श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' का आधार बनी। भाई राम कुइर (भाई गुरबखश सिंघ) की लिखवाई पोथी भाई संतोख सिंघ के हाथ लग गई। उसी को आधार मानकर उन्होंने गुरु साहिबान का इतिहास लिखा। आप स्वयं बताते हैं :

भयो अचानक संचै आई।
सरब गुरनि को जस समुदाई।
चाहति भए आप गुर जबहूं।
भा संचै दस गुर जसु सभि हूं ॥१५॥
हेर उमंग मोहि मन आई।
करन लगयो इह ग्रंथ सुहाई।
राम कुइर के मुख ते कथा।
बरनों सभि मैं होई जथा ॥१६॥ (अध्याय ५, रास १)

भाई संतोख सिंघ द्वारा यह बात दृढ़ कराई गई है कि 'श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' भाई राम कुइर और भाई मनी सिंघ जी द्वारा बताई रिवायतों के अनुरूप लिखा गया है।

भाई कान्ह सिंघ नाभा के अनुसार भाई राम कुइर ने गुरु साहिबान के प्रसंग भाई साहिब सिंघ को लिखवाये थे मगर वो पोथी आज नहीं मिलती।

भाई संतोख सिंघ ने 'श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' में गुरु साहिबान के जीवन की विभिन्न घटनायें विस्तृत रूप में प्रस्तुत की हैं। बहुत ही विस्तृत रूप में पहले पातशाह श्री गुरु नानक देव जी का लगभग ७० वर्ष में फैला जीवन अंकित करने के अंतिम भाग में भाई लहिणा जी का प्रसंग आरंभ होता है।

श्री गुरु नानक देव जी के पावन चरणों में रहकर भाई लहिणा जी गुरु जी तथा सिक्ख संगत की सेवा किया करते थे। अपने पुत्रों को छोड़कर आपने मात्र सेवा तथा सिदक को देखते-जांचते हुए गुरगद्दी अपने परम सेवक

**परूफ रीडर, गुरुद्वारा गज़ट (मासिक), शिरोमणि गु: प्र: कमेटी, श्री अमृतसर।*

भाई लहिणा जी को बख्शिश की। भाई लहिणा जी गुरु नानक साहिब के अंग-संग रहे। सेवा-सिमरन करते हुए वे श्री गुरु अंगद देव जी बन गए। गुरु साहिब ने ऐसे उत्तराधिकारी का चयन किया जो उनके बाद उनके द्वारा आरंभ किये महान कार्य को निरंतर जारी रख सके। योग्य उत्तराधिकारी का चयन परख करने के उपरांत किया गया।

भाई लहिणा जी ने गुरु पातशाह की तन-मन से ऐसी सेवा कमाई कि आप गुरु नानक साहिब का रूप बन श्री गुरु अंगद देव जी के रूप में प्रकट हुए। श्री गुरु अंगद देव जी के बारे में ऐसी भावना दृढ़ करने के उपरांत ही उनकी महानता समझी जा सकती है। 'श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' में लिखा है :

जनम हरीके ग्राम भयो है।
आन थान पुन बसन कियो है।
पंद्रहि सत सताहठा संमत।
फेरू सुत जनमयो गुरु संमत ॥८॥

अर्थात् भाई लहिणा जी का जन्म संवत् १५६७ वि: को 'हरीके' गांव में पिता भाई फेरूमल जी के घर माता दया कौर जी की कोख से हुआ।

यहां यह स्पष्ट किया जाना उचित होगा कि सिक्ख इतिहास के अधिकतर स्रोत भाई लहिणा जी का जन्म १५६१ वि. (सन् १५०४ ई) को मत्ते की सरां (वर्तमान जिला मुकतसर में स्थित) में हुआ मानते हैं।

बाबा फेरूमल जी स्वभाव और व्यवहार-पक्ष से बहुत ही प्यार-अनुराग वाले, मिष्ठभाषी, मिलनसार, सच्चे एवं निर्मल थे। उनका कारोबार काफी अच्छा था। फिर परिस्थितियां बदल जाने से बाबा फेरूमल जी ने परिवार सहित गांव हरी के पत्तण के स्थान पर निवास कर लिया।

बाबा फेरूमल की बहिन सभराई जी खडूर गांव के नजदीक तरनतारन में ब्याही हुई थी। खडूर साहिब के नजदीक ही गांव संघर था जहां भाई लहिणा जी का विवाह श्री देवीचंद की सपुत्री बीबी खीवी जी के साथ हुआ। भाई संतोख सिंघ लिखते हैं :

खीवी सती भारता होई।
भए आजमत तिस ते दोई ॥११॥

(अध्याय ७, रास पहली)

ससुराल घर की प्रेरणा से विवाह के पश्चात जल्दी भाई लहिणा जी गांव संघर चले गए। वहां पिता फेरूमल जी के परलोक गमन कर जाने के बाद दुकानदारी का कार-विहार करने लग गए। कार-विहार अच्छा चल निकला।

भाई लहिणा जी के घर उनकी सुपत्नी माता खीवी जी की कोख से दो पुत्रों--दासू जी तथा दातू जी और दो पुत्रियां--बीबी अमरो जी तथा बीबी अनोखी जी ने जन्म लिया। भाई संतोख सिंघ जी की विचाराधीन रचना में इस प्रकार जिक्र मिलता है:

नाम दासु अर दाता दूवा।
जिन के रिदै गयान दिढ हूवा ॥१२॥

(अध्याय ७, रास पहली)

खडूर साहिब में जहां भाई लहिणा जी कार-विहार करते थे वहां श्री गुरु नानक देव जी का एक सिक्ख भाई जोध जी रहता था। दोनों का प्राय: परस्पर मेल-मिलाप होता रहता था। भाई लहिणा जी के मन में भाई जोध जी से श्रवण किये गुरु नानक साहिब द्वारा उच्चासरत पावन गुरबाणी के शबदों ने ऐसा आकर्षण उत्पन्न किया कि भाई लहिणा जी देवी के दर्शन करने जाते हुए, रास्ते में पड़ते गांव करतारपुर में श्री गुरु नानक देव जी के चरणों में जा ठहरे। भाई जी वहां ऐसे ठहरे कि बस वहां ही ठहर गए।

भाई लहिणा जी ने सच्चे दिल से गुरु तथा

संगत की सेवा कमाई। सिक्ख की परख के लिए अथवा सिक्ख को सिक्खी में परिपक्व करने के लिए श्री गुरु नानक देव जी ने भाई लहिणा जी को कई कठिन परीक्षाओं में डाला। भाई जी हरेक परीक्षा में अच्छी प्रकार से उत्तीर्ण हुए। भाई संतोख सिंघ लिखते हैं:

प्रभु के पद पंकज पर परयो।
देखी करुणां द्रिशटि बिसाला।
कहयो जु मेरो अहै सरूपा।
सो तुम ह्वै हैं परम अनूपा ॥८५॥

(उत्तराद्ध भाग दूसरा, अध्याय ५०)

भाई लहिणा जी के मीठे वचन सुनकर दयालु श्री गुरु नानक देव जी ने मेहर की दृष्टि से भाई जी की ओर देखा, वचन किया:

तेरो रूप होहिगो मोरी।
ऐसी अब अभेदता होही।

भाव अब तू मेरा ही स्वरूप होगा, तेरे-मेरे में कोई अंतर नहीं होगा।

इस प्रकार भाई लहिणा जी गुरु नानक साहिब के उद्देश्यों के अनुरूप पूरे उतरे। आत्मिक तौर पर दोनों में कोई भेद न रहा। जब परख हुई तो सोना कसौटी पर खरा सिद्ध हुआ।

कीर्तन और लंगर का प्रवाह दरिया रावी के किनारे करतारपुर में चलता था। अब यह खडूर साहिब की पावन धरती पर चलने लगा।

खडूर साहिब की पावन धरती पर नेक-जन माता खीवी जी अपने हाथों से घी वाली खीर वितरित किया करते थे। यह पौष्टिक खुराक थी। श्री गुरु अंगद देव जी यहां नवयुवकों को स्वयं अपनी निगरानी में व्यायाम कराया करते थे जिसका साक्षी यहां विद्यमान गुरुद्वारा मल अखाड़ा साहिब है। लंगर की प्रथा श्री गुरु नानक देव जी ने चलाई थी। श्री गुरु अंगद देव जी ने इसका और अधिक विस्तार किया और अच्छा प्रबंध चलाया। लंगर का प्रबंध सिक्खों की ओर से भेंट किये दसवंध के साथ किया जाता था। गुरु पातशाह अपने घर का व्यय मूंज की रस्सियां बनाकर चलाया करते थे। पातशाह जी ने इस प्रकार संगत को भली प्रकार से स्पष्ट कर दिया कि गुरु का लंगर निर्धनों, असहायों तथा अतिथियों के लिए था।

श्री गुरु नानक देव जी ने पंजाब के लोगों की मातृ-भाषा पंजाबी को अपने प्रचार का माध्यम बनाया। श्री गुरु अंगद देव जी ने गुरमुखी लिपि को नया रूप देने और इसका प्रचार-प्रसार करने का प्रशंसनीय कार्य किया। इस लिपि के प्रचार-प्रसार के लिए गुरु पातशाह जी ने गुरमुखी पाठशाला भी चलाई, जिसमें गुरु जी स्वयं भी पढ़ाया करते थे, जिससे सिक्खी का और अधिक प्रचार संभव हुआ।

श्री गुरु नानक देव जी भाई लहिणा जी को गुरगद्दी प्रदान करते समय अपनी उच्चारण की हुई बाणी और विभिन्न स्थानों से उदासियों के दौरान विभिन्न भक्त साहिबान द्वारा उच्चारण की बाणी का हस्तलिखित मसौदा एकत्रित करके सौंप गए थे। आपने उस बाणी को एक पोथी के रूप में संकलित किया। यह पोथी श्री गुरु ग्रंथ साहिब के संपादन-कार्य के समय सहायक सिद्ध हुई।

श्री गुरु अंगद देव जी ने समूची मानवता को जात-पात, फोकट कर्मों तथा वहमों-भ्रमों से दूर रहने का संदेश दिया। आपने लंगर की प्रथा जारी रखी, जहां हर कोई बिना किसी जात-पात के भेदभाव के पंगत में बैठकर लंगर छक सकता था। इस प्रकार मानवी समाज में भेदभाव और दूरियां कम हुईं।

दिल्ली का बादशाह रह चुका हुमायूं श्री गुरु अंगद देव जी के पास खडूर साहिब उनके दर्शन करने की इच्छा लेकर आया। वह गुरु जी से आशीर्वाद चाहता था। उसके मन में था कि उसको गुरु जी से आशीर्वाद मिल जाए तो

उसको उसका खोया हुआ राजपाट मिल सकता था। उसने बाकी संगत के साथ पंगत में बैठ कर परशादा छका था।

बाबा श्री (गुरु) अमरदास जी वृद्ध अवस्था में श्री गुरु अंगद देव जी की सेवा में आये। बाबा जी ने वृद्ध आयु में श्री गुरु अंगद देव जी की सच्चे दिल और जी-जान से सेवा की। उन्होंने लगभग बारह वर्ष सेवा कमाई। श्री गुरु अंगद देव जी ने बाबा अमरदास जी को गुरगद्दी पर विराजमान करने का निश्चय किया। घट-घट की जानने वाले श्री गुरु अंगद देव जी ने एक सिक्ख को बाबा अमरदास जी को बुलाने के लिए भेजा :

स्री अंगद लख अंतरजामी।
पठयो हकारन सिख तबि स्वामी।
(रास पहली, अध्याय २६)

फिर सिक्खों को कहा कि जल की गागर भर कर लाओ और बाबा अमरदास जी को स्नान कराओ। दोनों पुत्रों को बुलाओ। हमारी ज्योति जोत समाने की तैयारी है। श्री गुरु अंगद देव जी ने बाबा अमरदास जी को गुरगद्दी पर बैठाया। बाबा बुड्ढा जी सहित अन्य सिक्ख संगत ने श्री गुरु अमरदास जी को माथा टेका:

पुन सिक्खन सों गिरा उचारी।
उठ आनहु गागर भर बारी।
अमरदास इशनान करावहु।
सभि संगति को मेल करावहु ॥४१॥
दोनहु पुत्र हकारन करो।
मम त्यारी है देर न धरो।
ससकारन की सौज बिसाला।
करहु इकत्र सकल ततकाला ॥४२॥

दूसरे स्रोतों की भांति भाई संतोख सिंघ श्री गुरु अंगद देव जी के ज्योति जोत समाने का संवत् १६०९ विक्रमी (सन् १५५२ ई) चेत सुदी की चौथ को मानते हैं, जैसे कि :

सोलह सै संमत हुतो नौ ऊपर तिस जान।
चेत सुदी तिथि चौथ तबि स्री अंगद प्रसथान ॥५०॥
(रास पहली, अध्याय २८)

ऐसे सतिगुरु पातशाह जी की शरण में जाना हमारे लिए कल्याणकारी है। आप विघ्नों का नाश करने वाले हैं। आपका मुखारबिंद मंगलों का घर है :

दोहरा- स्री अंगद कंदन बिघन बदन सु मंगल साल।
पन शरन कर चरन को नमसकार धरि भाल ॥७॥
(श्री गुर नानक प्रकाश, पूरबार्द्ध, अध्याय ९)

श्री गुरु अंगद देव जी का उपदेश सुनने से सबसे ऊंची पदवी प्राप्त होने में कोई बाधा नहीं पड़ती। उनके उपदेश हृदय के भीतर बस जाने से खुशी की प्राप्ति होती है। वे श्री फेरू जी के पुत्र किसी के अधीन नहीं है भाव स्वतंत्र हैं। वे रुतबे में ऊंचे हैं। उनके नयनों की सुंदरता की बराबरी कमल फूल भी नहीं कर सकते। वे नयनों के साथ जिधर भी देखते हैं वहां रंचक मात्र नीचता, मूर्खता तथा विषय-विकार नहीं ठहरते अथवा उनके दर्शन मात्र करने से दर्शन पाने वाले में ऊंचापन, बुद्धिमता एवं निर्मलता का संचार हो जाता है। अज्ञान ऐसे दूर होता है जैसे सूर्य के प्रकट होने से अंधकार दूर हो जाता है। गुरु जी आनंद के बादल तथा मुक्ति के दाते हैं। उनको सदा नमन करो :

बेद न होत सुने उपदेश रिदे बस जाहि करे अभिनंदन।
नंदन फेरु सुछंद बिलंद बिलोचन सुंदरता अर बिंदन।
बिंदु न मंद बिकार रहै तग ब्रिंद दिनिंद मनिंद निकंदन।
कंद अनंद मुकंद भजो गुर अंगद चंद सदा कर बंदन ॥९॥ (अध्याय १, रास पहली)

'पंथ प्रकाश' कृत ज्ञानी गिआन सिंघ में श्री गुरु अंगद देव जी का जीवन-चित्रण

*-स. सतविंदर सिंघ**

श्री गुरु अंगद देव जी के जीवन की जानकारी देने वाले स्रोतों में से ज्ञानी गिआन सिंघ रचित 'पंथ प्रकाश' एक प्रमुख स्रोत है। श्री गुरु अंगद देव जी के बारे में ज्ञानी गिआन सिंघ का नजरिया जानने से पहले ज्ञानी गिआन सिंघ और 'पंथ प्रकाश' के बारे में संक्षिप्त विचार करेंगे।

ज्ञानी गिआन सिंघ का जन्म १५ अप्रैल, १८२२ ई को पंजाब के जिला संगरूर के कसबा लौंगोवाल में पिता स. भान सिंघ के घर माता देसां के उदर से हुआ।

संस्कृत, हिंदी, उर्दू तथा ब्रज भाषाओं के ज्ञाता ज्ञानी जी ने समस्त भारत का भ्रमण करके भारतीय इतिहास, मिथिहास और दर्शन का दीर्घ दृष्टि से अध्ययन किया।

ज्ञानी जी ने निर्मल संप्रदाय के प्रचंड विद्वान पंडित तारा सिंघ नरोत्तम की प्रेरणा से सन् १८८० ई में 'पंथ प्रकाश' की रचना की। छंद, अलंकार और रस-प्रशस्त ब्रज भाषा की मनोहर शैली में रची गई ज्ञानी जी की यह शाहकार रचना है।

इस रचना में ज्ञानी जी ने गुरु नानक साहिब से लेकर महाराजा दलीप सिंघ के देहांत तक के इतिहास-काल को सम्मिलित किया है। गुरु साहिबान के जीवन को विस्तृत रूप से पेश किया गया है। इस आलेख में हम 'पंथ प्रकाश' के आधार पर गुरु अंगद साहिब के जीवन-चरित्र को चित्रित करने का प्रयास करेंगे।

जन्म : ज्ञानी गिआन सिंघ के अनुसार गुरु अंगद साहिब जी का जन्म मत्ते (नांगे) की सरां (मालवा) में श्री फेरू जी के घर माता सभराई के उदर से सं. १५६१ में हुआ :

देस मालवे नगर सरां मते की जाणो।
आहि थेह सो परो सरां नागे ढिग मांनो।
तेहण खत्तरी बसत तहां फेरू बड धनीआं।
सभराई जिस तीय पतीब्रता सुखसनीआं।
पंदरां सै इक साठ विखे तिन के सुत थाइओ।
(पृष्ठ ७७)

बचपन : उत्तम गुणों से भरपूर आपका नाम 'लहिणा' रखा गया। बचपन में ही आप जी की रुचि धर्म-कर्म में अधिक थी :

सद गुणगण भरपूर नाम लहिणा परगटाइओ।
बालकपन तै धरम करम मै रति अति जांकी।

शादी : गुरु जी की शादी श्री देवी चंद की पुत्री खीवी जी के साथ हुई।

शादी भई खंडूर नगर खीवी संग तांकी।

देवी-भक्त : गुरु नानक साहिब के साथ भेंट होने से पहले भाई लहिणा जी देवी की भक्ति करते थे। वे हर साल इलाके की संगत को अपने साथ लेकर देवी के दर्शन को जाते थे और देवी के भक्तों जैसा लिबास धारण करते थे। वे हरि की भक्ति और संत-जनों की सेवा में हर समय लगे रहते थे।

लहणा तिस की ठौर भगत देवी का थीओ।
लै संगत निज संग जाइ हर साले जीओ।
खूंडी खमणी आदि रखत देवी का बाना।
पर हरि भगती संत सेव मैं रहित लगाना।
(पन्ना ७८)

**सहायक रीसर्च स्कालर, सिक्ख इतिहास रीसर्च बोर्ड, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर।*

गुरु नानक साहिब से भेंट : जब भाई लहिणा जी ने गुरु नानक साहिब का अपार यश सुना, उनके भाग्य जाग उठे और मन में गुरु जी के दर्शन की चाहत पैदा होने लगी। एक बार भाई लहिणा जी जब अपनी संगत के साथ देवी के दर्शन के लिए जा रहे थे तो मन में गुरु जी के दर्शन की भी इच्छा पैदा हो रही थी। जब वे करतारपुर पहुंचे तो गुरु जी से उनका मिलाप हो गया। गुरु जी के सुहावने वचन सुनकर वे अपने साथियों के संग आगे देवी के दर्शन को नहीं गये, गुरु जी के पास ही रह गये। वहां भाई लहिणा जी ने सोने के समय सपने में देवी को गुरु-दरबार में झाड़ू लगाते देखा और उन्होंने उससे मुक्ति की कामना की। तब देवी ने कहा, "हे प्यारे! मैं मुक्ति कैसे दे सकती हूं? मैं तो सत्यम गुरु जी के चरणों की दासी हूं।" भाई लहिणा जी गुरु जी के पास रहने लगे। गुरु जी की कृपा से उनका हृदय शुद्ध हो गया और अंतर-आत्मा में सत्य का प्रकाश होने लगा:

संमत पंदरां सै नमासीए दै निज संगत।
देवी परसन चलिओ चाहि गुर दरस उमंगत।
पहुंचयो पुर करतार गुरू करतार मिलाए।
स्री गुरु नानक देव केर सुन बचन सुहाए।
रहिओ साथीअन संग गुरू ढिग गइओ न आगे।
(पन्ना ७८)

सेवा : ज्ञानी गिआन सिंघ के अनुसार श्री गुरु अंगद देव जी सेवा की मूर्ती थे। उन्होंने गुरु नानक साहिब की तन-मन से बहुत सेवा की और सेवा की कसौटी पर पूरे उतर कर उच्च पदवी हासिल की।

तन मन धन कर सेव गुरू की इन बहु कीनी।
कसट कसौटी बहु सहार पदवी बड लीनी।
(पन्ना ७८)

परीक्षा में पास हुए : भाई लहिणा जी रात-दिन गुरु जी की सेवा में उपस्थित रहते थे। वे बिना किंतु-परंतु किये बड़े विनम्र भाव से गुरु जी की हर आज्ञा का पालन करते थे। एक बार गुरु जी ने आधी रात को कहा, "कितना दिन उदय हुआ है?" गुरु जी ने सपुत्रों और सिक्खों ने कहा, "अभी तो आधी रात हुई है।" फिर गुरु जी ने भाई लहिणा जी से पूछा। उन्होंने कहा, "गुरु जी, जितना दिन आपने उदय किया है उतना उदय हो गया है।" गुरु जी ने आधी रात को ही कहा कि हमारे वस्त्र धो लाओ। भाई लहिणा जी तुरंत आज्ञा का पालन करते हुए वस्त्र लेकर धोने चले गये। वस्त्र धो, सुखा कर गुरु जी को पहना दिए:

अरध निसा मै एक दिवस गुरु इह फुरमाइओ।
कितक दिवस है चढयो बसन हमरे धो लियाइओ।
पूतन सिखन कहयो अरध निस आहि पछानो।
फिर लहिणे दिस पिखयो ओन इस भांत बखानो।
जितक चढायो आप तितक है दिन चढ आयो।
कहयो गुरू मम बसन धोइ मुसकाइ लिआइओ।
मांन बचन लै चीर गयो लहिणा जब धोवन।
सिखर दुपहिरा भयो लगयो बिसमैं मन होवन।
(पृष्ठ ७८)

भाई लहिणा जी दूसरी परीक्षा में भी पास हो गये। एक बार सात दिन लगातार बहुत वर्षा होती रही जिस कारण लंगर तैयार नहीं हो पाया। जब वर्षा रुकी तो गुरु जी बाहर जा बैठे। अपने सपुत्रों और सिक्खों को परखने के लिए कहा कि "इस कीकर (बबूल) के पेड़ को हिलाओ, इससे मिठाई गिरेगी।" सबने सुन कर मन में हंस दिया कि कीकर के पेड़ से भी कभी मिठाई गिरती है? भाई लहिणा जी झट-से जाकर पेड़ को हिलाने लग गए। उनको पता था कि सेवक को गुरु के हुक्म के आगे कोई किंतु-परंतु नहीं करना चाहिए।

गुरु नानक साहिब ने तीसरी परीक्षा डाली। इसमें भी सिर्फ भाई लहिणा जी ही पास

हुए। एक बार बिल्ली ने पखाने में से चूहे को पकड़ कर मार डाला जिससे सारा फरश खराब हो गया। गुरु जी ने चूहे को उठाकर फेंकने को कहा। पुत्रों ने नहीं उठाया। भाई लहिणा जी ने झट से उठाकर फेंक दिया:

फिर इक औरैं दिवस फरस पर आइ बिलाई।
पाखाने फिर मूस मार उन फरस बिगारिओ।
सुतन उठाइओ नाहि झटा पट लहिणे डारिओ।

गुरिआई की बख्शिश : गुरु नानक साहिब ने जिस निर्मल पंथ की नींव रखी थी उसको आगे बढ़ाने के लिए किसी योग्य पुरुष की जरूरत थी। गुरु जी इतनी बड़ी जिम्मेदारी किसी अनजान को नहीं सौंपना चाहते थे, इसलिए गुरु नानक साहिब ने जब सेवा, नम्रता, आज्ञाकारिता आदि सद्‌गुणों की कसौटी पर अपने सिक्खों और पुत्रों को परख कर देखा तो केवल भाई लहिणा जी ही शुद्ध कुंदन की भांति खरे उतरे। सभी प्रकार से योग्य समझकर उन्हें गुरतागद्‌दी बख्शिश की। गुरु जी ने भाई लहिणा जी को अपने अंग (गले) से लगाकर 'अंगद' नाम रख दिया। फिर गुरगद्‌दी पर बैठाया। जैसे एक दीप से दूसरा दीप जलता है, उसी तरह गुरु नानक साहिब जी ने अपना ज्ञान-रूपी दीप श्री गुरु अंगद देव जी के हृदय में जगा दिया:

ताउ कसौटी लाइ परख कुंदन जब लीओ।
लाइक सब बिधि पेख तबै गुरु ता पद दीओ।
लाइ अंग सों अंग नाम तब अंगद रखयो।
जयों पारस छुहि लोह कनक हुइ तयो इहु लखिओ।
गादी पर बैठाइ स्री अंगद के तांई।
पैसे पांच नलेर अगर धर माथ झुकाई।

खडूर नगर बसाना : गुरगद्‌दी को लेकर गुरु नानक साहिब के सपुत्र गुरु अंगद साहिब से ईर्ष्या करने लगे। गुरु नानक साहिब की आज्ञा मानकर गुरु अंगद साहिब करतारपुर छोड़कर खडूर साहिब आ गये :

मतसर लागे रखन गुरू के सुत पुन भारी।
मान हुकम गुरु केर अयो खंडूर मझारी।

जब गुरु नानक साहिब ज्योति-जोत समा गए तो श्री गुरु अंगद देव जी सिक्खों को उपदेश दृढ़ कराने लगे :

जब गुरु नानक आप जोति मे जोत मिलाने।
फिर गुरु अंगद लगे सिखन उपदेस दिढाने।

(पृष्ठ ७९)

देश-विदेश में शोभा : ज्ञानी गिआन सिंघ के अनुसार गुरगद्‌दी पर विराजमान होने के बाद गुरु अंगद साहिब की शोभा सुनकर देश-विदेश से संगत दर्शन के लिए आने लगी। गुरु जी सबके मन की इच्छा पूरी करके उनको प्रसन्न करते:

संगत देस बदेस तै आवन लगी खडूर।
स्री अंगद जी कलपतर पूरत इछ्या भूर।

गुरु-दरबार की परंपरा : श्री गुरु अंगद देव जी गुरिआई पाकर गुरु-दरबार की सभी परंपराएं उसी प्रकार निभाने लगे। वे ढलती रात जागकर प्रभु-भक्ति में लीन हो जाते। सुबह अमृत वेले दीवान में आकर बड़े प्रेम के साथ 'आसा की वार' का कीर्तन श्रवण करते। कीर्तन की समाप्ति के उपरांत गुरु जी और सारी संगत मिलकर भाई बाला जी से गुरु नानक साहिब की जीवन-गाथा सुनती :

ढरी निसा तै जाग के ला बैठैं तारी।
अंम्रत वेले आइके फिर सभा मझारे।
आसावार प्रेम से सुनही मुद धारे।
भाई बाले ते सुने फिर गुर की गाथा।
सिख साधु औरैं घने सुन ही हित साथा।

(पृष्ठ ८०)

गुरमुखी लिपि की रचना : ज्ञानी गिआन सिंघ के अनुसार गुरु अंगद साहिब ने गुरमुखी अक्षरों की रचना की और अपने सिक्खों को पढ़ाया।

गुरु जी की बाणी और कथा इन्हीं गुरमुखी अक्षरों में लिखवाई :

अखर रच के गुरमुखी फिर सिखन पड़ाए।
गुरु की बाणी अर कथा इन मै लिखवाए।

हुमायूं को उपदेश : एक बार दिल्ली का बादशाह हुमायूं, शेर खान (शेरशाह सूरी) से हार खाकर भागता हुआ ब्यास दरिया के पास आ पहुंचा। उसने सोचा कि गुरु नानक साहिब ने बाबर को सात पातशाहियों का वरदान दिया था, वो अब झूठा क्यों हो गया? यह बात मैं गुरु अंगद साहिब से जाकर पूछता हूं। जब वो गुरु जी के दरबार में पहुंचा तो गुरु जी समाधि में लीन थे। दो घड़ी (४८ मिनट) गुरु जी के पास खड़ा रहने पर भी जब उनकी समाधि न खुली तो हुमायूं गुस्से में आकर गुरु जी पर म्यान में से अपनी तलवार निकालने के लिए हथा म्यान पर रखा तो 'पंथ प्रकाश' के कर्त्ता अनुसार तलवार निकल न सकी। इतने में गुरु जी ने आंखें खोलीं और बोले, "हे बादशाह! हम जैसे पीरों-फकीरों पर तलवार निकालना चाहते हो? शेरशाह के सामने तेरी तलवार कहां चली गई थी? उसको पीठ दिखाकर भागते हुए तुमको जरा-भी लज्जा नहीं आई?" इतनी बात सुनकर हुमायूं गुरु जी के चरणों पर गिर पड़ा। कहने लगा, "गुरु जी! आप समर्थ हो। कृप्या मुझे क्षमा कर दो। हम भूलनहार हैं, आप बख्शनहार हो।" हुमायूं की अधीनगी देखकर गुरु जी ने कहा, "बारह वर्ष बाद तुमको बादशाही मिलेगी। गुरु नानक साहिब ने जो वर दिया था वह सच्चा होगा। आपके घर एक बड़े प्रताप वाला पुत्र पैदा होगा।" यह वरदान लेकर बादशाह अत्यंत खुश हुआ और गुरु जी के चरण चूम कर चला गया:

तिसी समै इक बारता सुनीओ जो होई।
हिमायूं पतसाहि था दिल्ली का जोई।
सेर खान पाठान था सूबा बंगाले।
संग हिमायूं के करे उन संग बिसाले।
हार मान कर ओड़कै हिमायूं भागा।
तज दिल्ली कंधार को चालिओ दुख पागा।
तीर बिआसा उतर कै सो बात चितारी।
जो बाबर ने ताहि पैथी उचरी सारी।
बखसी नानक पीर नै हम को सत साही।
सो अब झूठी किउ भई चल बूझो ताही।
इउ विचार सो आइओ गुर अंगद पासैं।
गुर की लगी समाध थी ठांडा रहिओ खासैं।
खड़ा रहयो दो घड़ी लौ मन मै रिस भारा।
परिहारन हित गुरू पै चहि खड़ग निकारा।
खड़ग ना निकसयो मिआन तै सो बल कर हारिओ।
हस बोले तब गुरू जी सुनसाहि पिआरिओ।
शेर शाहि के सामणे बल गइओ किथांए।
पीर फकीरन पर चहैं खड़ग चलाए।
आवत जात न तोहि को पिठ दिखर आइओ।
बचन गुरू के सुनत ही चरनी लपटाइओ।
कहिओ पीर जी बखशीए तुम सम्रथ जाने।
भूलन हारे हम सदा बखसिंद तुम दाने।
पिख अधीनगी शाह की गुरु कहयो इदाही।
बाद द्वादस बरख के मिलहै पातसाही। . . .
बड प्रतापी आप के घर थैहै बच्चा।
इहु बर लै सो गुरू तै खुशि होइ अपारे।
चरन चूंम के चल परिओ सहि कशट करारे।

(पृष्ठ ८१)

दुखों के हर्त्ता : खडूर साहिब में एक चौधरी रहता था, जिसको मिरगी का दौरा पड़ता था। बहुत सारे उपाय करने पर भी यह रोग खत्म न हो सका। गुरु अंगद साहिब के अमृत-वचनों से चौधरी का मिरगी का रोग दूर हो गया:

थां खडूर इक चौधरी मिरगी ऊठत जांहि।
गुरु अंगद के बचन तै रोग मिटयो सभ तांहि।

तपे के भ्रम से लोगों को निजात : जिस

समय गुरु जी खडूर साहिब रह रहे थे उन दिनों वहां कनफटे योगियों की बहुत मान्यता थी। गुरु जी के यहां आने पर यह मान्यता कम होने लगी। इसी समय वर्षा न होने के कारण सूखा पड़ गया। गांव वाले योगियों के मुखी तपे के पास गये। उसने कहा, "तुम लोगों ने एक गृहस्थी गुरु की पूजा करके अनर्थ कर डाला है, इसी कारण वर्षा नहीं हो रही। अगर तुम उस (गुरु अंगद साहिब) को गांव से बाहर निकाल दो तो मैं वर्षा करवा दूंगा।" अंतरयामी गुरु जी तपे द्वारा लोगों में फैलाई जा रही यह धारणा कि गृहस्थी गुरु नहीं हो सकता, को खंडित करना चाहते थे। वे गांव छोड़कर चले गये। तपे ने बहुत जंत्र-मंत्र पढ़े, मगर वर्षा नहीं हुई। ज्ञानी गिआन सिंघ के अनुसार श्री गुरु अमरदास जी ने कहा कि "जहां-जहां योगी तपे का शरीर जाएगा वहां-वहां वर्षा होगी।" यह सुनकर गांव वालों ने तपे को बैलों के पीछे बांध कर घसीटा। जहां-जहां तपे का शरीर जाता वहां-वहां वर्षा होने लगती। फिर गांव वाले जाकर गुरु जी को वापिस खडूर साहिब ले आये और गुरु जी से क्षमा मांगी :

जाइ पैंच फिर गुरू को खंडूर लिआए।
जोगी को जट निंद कै सिख गुर के थाए।

श्री गुरु अमरदास जी को गुरिआई : श्री गुरु नानक देव जी की भांति श्री गुरु अंगद देव जी ने भी जब श्री (गुरु) अमरदास जी को गुरगद्दी के लायक समझा तो पूर्ण मर्यादा से गुरगद्दी बख्श दी:

अमरदास जी के तईं सब बिधि लाइक हेर।
गुरु गादी अरपन करी म्रयादा युत फेर।

ज्ञानी गिआन सिंघ ने अपनी रचना 'पंथ प्रकाश' में श्री गुरु अंगद देव जी के विस्तृत जीवन में से कुछेक पक्षों को आधार बनाकर संक्षिप्त रूप में वर्णन किया है। वे लिखते हैं कि गुरु जी के जीवन की और भी अनेक गाथाएं हैं। ग्रंथ का आकार बड़ा हो जाने के डर से ये नहीं लिखी गईं। वे कहते हैं कि जो विस्थार सहित श्री गुरु अंगद देव जी के जीवन को पढ़ना चाहता है वो हमारी दूसरी रचना 'सूरज प्रकाश वारतक' में से पढ़ ले :

गाथा और अनेक हैं गुरु अंगद केरी।
ग्रंथ बढन डर कै तजी जो चहि सब हेरी।
बारतक सूरज प्रकाश है जो क्रित हमारी।
उस मै से पड़ लीजीए भलि भांति अपारी।

(पृष्ठ ८२)



लेखकों की अनथक मेहनत की मुंह बोलती तस्वीर

नवंबर २०१० का गुरमति ज्ञान "श्री गुरु नानक देव जी विशेषांक-१" प्राप्त हुआ। बहुत ही गहन अनछुए व गूढ़ तथ्य तथा गुरु पातशाह के आध्यात्मिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक पहलू, कृतित्व एवं जीवन से संबंधित बहुत-से गूढ़ रहस्यों को उजागर किया गया है जो पाठकों-जिज्ञासुओं को नवीनतम जानकारी देने में सक्षम है। यह विशेषांक आप जी की पूरी टीम तथा लेखकों की अनथक मेहनत की मुंह बोलती तस्वीर प्रस्तुत करता है। वाहिगुरु अपनी कृपा-दृष्टि सदैव आप पर तथा गुरमति ज्ञान के समस्त लेखकों पर बनाए रखें ताकि गुरमति का ज्ञान हर घर, हर हृदय में पहुच सके।

-डॉ. मनजीत कौर, जयपुर। मो: ९९२९७-६२५२३

'दस गुर कथा' कृत कवि कंकण में श्री गुरु अंगद देव जी का जीवन-बिंब

*-बीबी रविंदर कौर**

कवि कंकण द्वारा रचित 'दस गुर कथा' अधिकांशत: उपमामयी काव्य-रचना है फिर भी ऐतिहासिक पक्ष से यह रचना गुरु-इतिहास तथा सिक्ख इतिहास के बारे में जानकारी प्रदान करती है। श्री गुरु नानक देव जी ने सिक्ख धर्म की स्थापना की तथा नया जीवन-मार्ग चलाया। इस मार्ग की सम्पूर्णता के लिए गुरु नानक साहिब के बाद अन्य नौ गुरु साहिबान के लिए गुरिआई की स्थापना की रीति चलती रही। 'दस गुर कथा' में कवि कंकण ने गुरु अंगद साहिब की उपमा में ६ बंद दर्ज किए हैं।

कवि कंकण ने भाई सत्ता-भाई बलवंड जी, भट्ट कीरत जी, भाई गुरदास जी तथा बाबा सुंदर जी द्वारा श्री गुरु अंगद देव जी के बारे में दिए गए उपमामयी व ऐतिहासिक विचारों की रोशनी में श्री गुरु अंगद देव जी को गुरगद्दी देने के बारे में उल्लेख किया है। श्री गुरु अंगद देव जी सम्बंधी पहले बंद में उल्लेख करते हुए कवि कहता है कि श्री गुरु नानक देव जी ने अपनी ज्योति भाई लहिणा जी में स्थापित कर गुरु अंगद साहिब बनाया तथा स्थापना कर एक दीप से दूसरा दीप जला दिया:

सोरठा।

जोतहि जोति मिलाइ नानक गुर अंगद कीआ।
दई थापना तांहि दीप जगायो दीप सों ॥७॥

श्री गुरु नानक देव जी ने भाई लहिणा जी को अपने अंग लगाकर गुरु अंगद साहिब बनाया तथा गुरिआई दी। यह इस प्रकार था जैसे रूप तो दो थे मगर एक दीये से दूसरा दीया ही जलाया था। ज्ञान की ज्योति तीन लोकों के लिए जला दी ताकि जगत में से अज्ञान-अंधेरा दूर किया जा सके और लोग सतिगुरु से ज्ञान प्राप्त कर सकें। काव्य-कल्पना की उड़ानें भरते हुए कवि कंकण ने श्री गुरु अंगद देव जी की तुलना श्री कृष्ण जी के साथ की है :

सवैया।

थाप कीआ लहिणा गुरु अंगद अंग सों लाइ दई गुरिआई।
रूप भए बिब जोति वही जैसे दीप की जोति सों दीप जगाई।
ऐसे जी रूप भए गुर अंगद तीन हूं लोक मै दीप जगाई।
मानहु फेर लिया अवतार सु कलिजुग मे निज आन कन्हाई ॥८॥

कवि कंकण के अनुसार श्री गुरु अंगद देव जी की इतनी महिमा हुई है कि सिक्ख तो गुरु जी के चरणों में लगे ही थे सब देवता, राक्षस, योगी, जंगम, शेख, मशाइख, पीर, फकीर आदि मिलकर सतिगुरु की महिमा-उपमा करने लगे। क्या अमीर, क्या गरीब सब ने श्री गुरु अंगद देव जी के चरणों पर अपना शीश श्रद्धा से झुका दिया। सिध, साध आदि श्री गुरु अंगद देव जी का जाप कर रहे थे ताकि वे जन्म-मरण के चक्र से बच सकें :

सिख भए गुर अंगद के सभ देव औ दैंत मनुक्ख

**क्राऊन इन्क्लेव, जी. टी. रोड, श्री अमृतसर।*

सबाए।
जोगी औ जंगम शेख मशाइख पीर फकीर सभै मिलि आए।
राइ औ रंग सभै मिलि कै गुर चरनन उपर सीस निवाए।
सिद्ध और साध जपैं गुर को तां ते काल के जाल के बीच ना पाए ॥९॥

आगे कवि कंकण श्री गुरु अंगद देव जी की बख्शिशों के बारे में विश्वास प्रकट करता हुआ लिखता है कि हे भाई! श्री गुरु अंगद देव जी से मन करके प्रीति करोगे तो तुम्हारा जन्म-मरण से छुटकारा होगा। अन्य कर्मकांडी उपायों से काल के चक्कर से मुक्ति नहीं मिलेगी। चार युगों में चार ही अक्षरों अर्थात् 'वाहिगुरु' का पसारा है। कलयुग में वाहिगुरु के समान कोई नहीं और सारा जहां वाहिगुरु का नाम जपता है:

प्रीत करो गुर अंगद सों, मन! माही ते छूटन होइ तुमारा।
और उपाव न छूटन पावैंगो काल है सीस पै देखनहारा।
चार ही जुग्ग सों चार ही अखयर आन कीआ जग मांहि पसारा।
यां के समान नही कलि में कोऊ, 'वाहिगुरू' जपदा जग सारा ॥१०॥

श्री गुरु अंगद देव जी की महिमा चारों ओर हो रही थी। कवि कंकण इस महिमा के बारे में विस्तार देते हुए लिखता है कि जो कोई एक बार भी श्री गुरु अंगद देव जी को जपता है तो उसके सिर पर काल का डंडा नहीं बजता। तीनों लोकों के लोग गुरु-चरणों में लीन हुए थे और जिस जीव के हृदय में सतिगुरु जी के चरण बस जाते वो राजाओं का राजा कहलाता है। जो श्री गुरु अंगद देव जी की शरण में रह कर एक बार भी वाहिगुरु का सिमरन कर लेता उसे धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि पदार्थों की प्राप्ति हो जाती :

एक ही बार जपै गुर को कोऊ, काल को डंड न मुंड पै आवै।
लीन भयो गुर चरनन सों जोऊ तीन हूं लोक मैं सो नर भावै।
चरन बसैं गुर के जिसके उर भूपन को वह भूप कहावै।
चार पदारथ सो नर पावत वाहिगुरु इक वार बुलावै ॥११॥

श्री गुरु अंगद देव जी की उपमा करते हुए कवि कंकण 'वाहिगुरु' शब्द पर बहुत जोर देता है। कवि लिखता है कि जो जीव मुख से 'वाहिगुरु' शब्द का उच्चारण करता है उसे मृत्यु तथा अन्य दुष्ट कष्ट नहीं पहुंचाते। परमात्मा तथा गुरु में कोई भेद नहीं है। चारों युगों में परमात्मा खुद ही है। इस तरह श्री गुरु अंगद देव जी एवं वाहिगुरु में भी कोई भेद नहीं है:

वाहिगुरू उचरै मुख ते तिस रोग औ सोग कि भउ न बिआपै।
वाहिगुरू उचरै मुख ते तिसु काल औ बयाल नही कोऊ खापै।
गोबिंद और गुरभेद नहीं गुर चार ही जुग्ग है आप ही आपै ॥१२॥

उपरोक्त चर्चा के बाद निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि कवि कंकण द्वारा श्री गुरु अंगद देव जी की शख्सियत को काव्य-रचना के रूप में खूब उभारा गया है तथा 'दस गुर कथा' पुस्तक सिक्ख ऐतिहासिक स्रोत पुस्तकों में एक अहम जगह रखती है।



'बंसावलीनामा दसां पातशाहीआं का' कृत भाई केसर सिंघ छिब्बर में श्री गुरु अंगद साहिब का जीवन व व्यक्तित्व

-बीबी अमरजीत कौर*

'बंसावलीनामा' वो रचना होती है जिसमें व्यक्ति विशेष की बंसावली (वंशावली) अर्थात् पूर्वजों का जिक्र हो। एक तरह से यह कुर्सीनामे जैसी रचना है। 'बंसावलीनामा दसां पातशाहीआं का' भाई केसर सिंघ छिब्बर की बहुत महत्वपूर्ण काव्य-रचना है। इसमें दस गुरु साहिबान की वंशावली दर्ज है। भाई केसर सिंघ की यह रचना १८२६ वि. (१७६९ ई) की सावन सुदी १४ को आरंभ हुई तथा आश्विन सुदी ११ को सम्पूर्ण हुई। इसमें गुरु साहिबान के अलावा बाबा बंदा सिंघ बहादर, बाबा जीत सिंघ, माता साहिब कौर तथा तत्कालीन सिक्खों से सम्बंधित कुछ घटनाओं एवं तिथियों के ब्यौरे काव्य रूप में भी पेश किए गए हैं।

गुरु साहिबान से सम्बंधित जो जीवन-वृत्तांत पेश किए गए हैं वो विशेषत: जन्म, विवाह, औलाद, उनका जन्म व विवाह, नगर बसाने, युद्धों आदि तथा परलोक गमन करने के बारे में हैं। इन ब्यौरों में कई कमियां भी हैं मगर फिर भी ये इतिहास लिखने के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं।

यह एक छंदबद्ध रचना है। इसमें विशेषत: दोहरा तथा चौपई छंद का ही इस्तेमाल किया गया है। विचारों की प्रौढ़ता के लिए भाई केसर सिंघ ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की गवाहियां दी हैं। आवश्यकतानुसार दसम ग्रंथ, रामचरित मानस तथा पुराण आदि ग्रंथों में से भी दृष्टांत एवं उदाहरण दिए गए हैं। भाषा अधिकतर पंजाबी है मगर कहीं-कहीं हिंदी तथा फारसी के शब्द भी इस्तेमाल किए गए हैं।

'बंसावलीनामा दसां पातशाहीआं का' का दूसरा चरण श्री गुरु अंगद साहिब से सम्बंधित है। इसमें कवि ने १४२ बंदों में गुरु साहिब के परिवार के बारे में गुरु-दरबार की महिमा तथा गुरु साहिब द्वारा किए विकास के कार्यों के बारे में बताया है। इस अध्याय में से श्री गुरु अंगद देव जी के जीवन के भरपूर संकेत मिलते हैं। कवि ने गुरु अंगद साहिब के जन्म से लेकर ज्योति-जोत समाने तक का वर्णन बड़ी खूबसूरती के साथ किया है।

भाई केसर सिंघ के अनुसार श्री गुरु अंगद देव जी का जन्म हरीके गांव में बाबा फेरूमल जी (फिराइआ) नामक एक त्रेहन खत्री के घर माता रामो जी के उदर से १५६६ वि. (१५०९ ई) में ११ वैशाख, सोमवार को चार घड़ियां रात शेष रहते हुआ:

अब सुनीऐ गुरु अंगद जी की बात।
'सिंघ केसर छिबर' आखि सुनात।
'हरीके' नामु था इक गांउ।
ता मो रहिता खत्री 'फिराइआ मल्ल-त्रिहन' नाउं।१।
किरत बैपार था शाहूकारी।
माता रामो ता के धाम, 'गुरू अंगद-लहिणा' अउतारी।
संमत पंद्रां सै खटि-सठि।
जनमे 'अंगद' वैसाख महीने दिन त्रै अठि।२।
चार घड़ीआं राति रहदी सोमवारि।
नछत्र भरनी चरन तीसरे मझारि।

**सहायक रीसर्च स्कालर, सिक्ख इतिहास रीसर्च बोर्ड, शिरोमणि गु: प्र: कमेटी, श्री अमृतसर।*

बाबा फेरूमल जी एक व्यापारी थे। गुरु साहिब ने भी व्यापार का व्यवसाय ही अपनाया। संवत् १५८० में बाबा फेरूमल जी परलोक गमन कर गए।

कवि बताता है कि भाई लहिणा जी सनातन धर्म के सारे कर्मकांड करते थे। आप पितृ-पूजन करते थे और प्रत्येक वर्ष ज्वाला जी तथा कांगड़ा में देवी-पूजन के लिए जाते थे। इतने धर्म-कर्म के बावजूद भी आपके मन को शांति नहीं मिलती थी। आपकी रूह हर समय अंतिम सत्य की खोज हेतु व्याकुल रहती थी। एक बार आप जी की मुलाकात सन्यासी साधुओं के एक दल के साथ हुई। उनसे आपको गुरु नानक साहिब के बारे में पता चला।

गुरु-दर्शनों की इच्छा को मन में ही दबाकर खुद घर-गृहस्थी के कामों में व्यस्त रहे। संवत् १५८७ में आपके घर दासू जी का, संवत् १५८९ में बीबी अमरो जी का, संवत् १५९२ में बीबी अनोखी जी का तथा संवत् १५९४ में बाबा दातू जी का जन्म हुआ।

आपकी सुपत्नी माता खीवी जी भी बहुत ऊंचे धार्मिक विचारों वाली स्त्री थीं। भाई लहिणा जी के मन की स्थिति को देखते हुए माता खीवी जी ने आपको गुरु-दर्शनों के लिए जाने को कहा। आपके रिश्तेदारों तथा संगी-साथियों ने देवी की यात्रा करने के लिए जाना था, इसलिए खुद भी उनके साथ ही चल पड़े। गुरु नानक साहिब के दर्शन करने के लिए आप करतारपुर ही रुक गए। गुरु साहिब का अलाही रूप देखकर भाई लहिणा जी आनंदित हो गए। आपकी जन्म-जन्मांतरों की भूख उतर गई। यहीं भाई लहिणा जी को महसूस हुआ कि जिस देवी की वे पूजा करते हैं वो तो खुद गुरु साहिब के घर की झाड़ू-बरदार है।

भाई केसर सिंघ के अनुसार भाई लहिणा जी चार दिन गुरु साहिब के पास रहकर अपने घर वापिस मुड़ गए और पारिवारिक जिम्मेदारी निभाते हुए आपने बीबी अमरो जी की सगाई कर दी। इसके पश्चात आप फिर गुरु-चरणों में जा उपस्थित हुए। आपने तन-मन से गुरु-घर की सेवा की। गुरु नानक साहिब द्वारा ली गई विभिन्न परीक्षाओं में आप खरे उतरे। आपकी सेवा, बंदगी एवं शख्सियत से खुश होकर गुरु नानक साहिब जी ने गुरगद्दी आपको बख्श दी। भाई लहिणा जी को अंग से लगा, 'लहिणा' से 'अंगद' बना गुरु नानक साहिब परम ज्योति में विलीन हो गए।

गुरु-घर की अपार बख्शिशों को झोली में डालकर गुरु अंगद साहिब खडूर साहिब चले गए। खडूर साहिब को ही आपने सिक्खी प्रचार का केंद्र बना लिया। भाई केसर सिंघ गुरु-घर की महिमा, लंगर तथा नवनिर्माण के कार्यों की भी बात करता है। वो उस समय भाई सत्ता-भाई बलवंड जी द्वारा कीर्तन करने का भी जिक्र करता है।

लेखक बताता है कि गुरु अंगद साहिब बाबा अमरदास जी को गुरगद्दी देने का इशारा अपने परम ज्योति में विलीन होने से ९ माह पूर्व ही कर गए थे, भले ही दासू इसका विरोध करता रहा। लेखक के अनुसार श्री गुरु अंगद देव जी ने १३ वर्ष गुरिआई की और चौथी चेत्र सुदी संवत् १६०९ को ज्योति-जोत समा गए।

शख्सियत : श्री गुरु अंगद देव जी की शख्सियत के दो पक्ष हैं। गुरु नानक साहिब के संपर्क में आने से पहले आप धर्म-कर्म के कर्मकांड में उलझे हुए थे। हालांकि प्रभु-प्राप्ति की तड़प तो शुरू से ही आपके मन में थी मगर इसकी पूर्ति गुरु नानक साहिब के चरणों से लग कर ही हुई। गुरु-घर के साथ जुड़ने से पहले आप देवी-पूजा भी करते थे और पितृ भी पूजते थे:

सेवक माता देवी दे आहे आदि।
गाइत्री तरपन पितर-पूजा नित करन याद।
'कांगड़े' 'जुआला' माता दे हमेसा जावन।
धुजा, नलीएर भेटा देवन ते छंद गावन।७।

गुरु नानक साहिब के प्यारे तथा नेमी गुरसिक्ख होने के साथ-साथ श्री गुरु अंगद देव जी अच्छे गृहस्थी भी थे। आपने गुरु-घर की सेवा के साथ-साथ अपने परिवार के प्रति कर्त्तव्यों को भी निभाया।

आप सच्ची-सुच्ची किरत करने वाले थे। जीवन के आरंभिक काल में आप बाप-दादे वाला व्यापार-व्यवसाय करते थे। खडूर साहिब आकर भी आप रस्सियां बनाकर जीविका चलाते :

वाणु वटि करन गुजरान।
बिना किरत अपणी धान बिगाना ना खाणु।. . .३९।

गुरु-घर में जो धन अरदास आदि में आता उससे आप लंगर आदि की व्यवस्था चलाते तथा अन्य गुरु-घर के कार्यों में खर्च कर देते:

नजर भेट अरदासि लगी माइआ चढ़ने।
'साहिब गुरू अंगद जी' लगे लंगर करने।. . .५२।

'बंसावलीनामा दसां पातशाहीआं का' के अनुसार आप ज्यादा समय नाम-सिमरन में ही रहते थे और संगत से वचन-बिलास ज्यादातर बाबा अमरदास जी ही करते थे :

गुरू अंगद जी समाधि विच रहे।
जबाबु सुआल सभ अमरदास जी कहे।११७।

'बंसावलीनामा दसां पातशाहीआं का' में कवि भाई केसर सिंघ छिब्बर ने श्री गुरु अंगद देव जी की शख्सियत के सारे पक्षों पर गहराई से प्रकाश डाला है। चाहे इस रचना में कई ऐतिहासिक कमियां हैं मगर फिर भी सिक्ख पंथ का एक अहम स्रोत होने के नाते सिक्ख इतिहास में इसका महत्वपूर्ण स्थान बना हुआ है। 

प्रिं. सतिबीर सिंघ द्वारा लिखित पुस्तक 'कुदरती नूर' में . . . *(पृष्ठ २९ का शेष)*

जिनसे वे गुरबाणी सुन सकें। गुरु अंगद साहिब ने पोथी की बहुत संभाल की। उनको डर था कि कोई और गुरु नानक साहिब की बाणी में मिलावट न कर दे। गुरु साहिब ने गुरु नानक साहिब की साखियों को भी संभाला। श्री गुरु अंगद देव जी ने खुद भी अपने मुख से बाणी उचारी और उसे भी गुरु नानक साहिब की बाणी के साथ संभाला।

इस पुस्तक के सातवें पाठ में (गुरु) अमरदास जी के आगमन और उनकी सारी जीवनी को बहुत अच्छी तरह शामिल कर इस पुस्तक की शोभा को बढ़ाया गया है।

२९ मार्च, १५५२ ई को श्री गुरु अंगद देव जी (गुरु) अमरदास जी की परख-परीक्षा कर यह पंथ चलाने की जिम्मेवारी उन्हें सौंप ज्योति-जोत समा गए।

'कुदरती नूर' पुस्तक के आखिर में लेखक प्रिं. सतिबीर सिंघ ने लिखा है कि श्री गुरु अंगद देव जी की शख्सियत के लिए अगर मैं दो लफ्ज दूं तो वे 'कुदरती नूर' ही ठीक हैं।

प्रिं. सतिबीर सिंघ ने इस पुस्तक की समाप्ति प्रो. पूरन सिंघ के शब्दों के साथ बड़ी खूबसूरती से की है--"पंगति और संगति के साथ श्री गुरु अंगद देव जी ने सिक्खों को तीसरा मंदर 'शिक्षा, व्याख्या, साहित्य संचित करने' का दिया। सहज स्वाभाविक श्री गुरु अंगद देव जी के पास से 'जीअ दान' की ऐसी लाटें उठती हैं जो मानवता की समूची राह रोशना गईं।" 

'महिमा प्रकाश' कृत श्री सरूप दास भल्ला में श्री गुरु अंगद देव जी सम्बंधी वृत्तांत

*-डॉ. रछपाल सिंघ**

"महिमा प्रकाश" कृत श्री सरूप दास भल्ला, सिक्ख इतिहास अथवा पंजाबी साहित्य की, अट्ठारहवीं सदी की एक महत्वपूर्ण स्रोत-पुस्तक है। इसमें दस गुरु साहिबान का जीवन-दर्शन उपलब्ध है। प्रस्तुत खोज-पत्र में इस पुस्तक के आधार पर श्री गुरु अंगद साहिब का जीवन और व्यक्तित्व प्रस्तुत करने का एक छोटा-सा प्रयत्न है।

श्री गुरु अंगद देव जी गुरु नानक साहिब से विदा होकर खडूर साहिब को गए। माई भिराई जी के घर जाकर एक कोठरी में रहने लगे। माई भिराई जी को गुरु जी ने आज्ञा की थी कि इस कोठरी का द्वार नहीं खोलना और किसी को बताना भी नहीं है। छः माह बीत जाने पर संगत में गुरु-दर्शन की उमंग प्रचंड हो गई। बाबा बुड्ढा जी को एक समय गुरु बाबा जी ने आज्ञा की थी:

"बुड्ढिआ! तैं साडी बहुत टहिल की है। कुछ मंग लै। तब बुड्ढे आखिआ, मिहरवान! तूं सभ किछ जानदा हैं। जो अच्छी वसतू होए सो सानूं मिले। तब बाबा जी आखिआ- जित्थे मैं होवांगा, तूं मैनूं पछाण लवेंगा।" (महिमा प्रकाश, वारतक, पहली साखी)

बाबा बुड्ढा जी ने माई भिराई जी के घर जाकर उस कोठरी का द्वार खोला। गुरु जी बहुत प्रसन्न हुए। बाबा बुड्ढा जी के विनती करने पर गुरु जी बाहर निकले। संगत ने गुरु-दर्शन किए। भाई बाला संधू भी गुरु जी के दर्शनों को आए। गुरु अंगद साहिब जी बहुत प्रसन्न हुए और भाई बाला जी को कहा, "असीं तैनूं उडीकदे थे। तूं गुरू बाबे के साथ बहुत दिन भर फिरिआ हैं। जो कुछ तैनूं गुरू बाबे जी दा बचन चित है, सो लिखाए दे।" (साखी २)

गुरु जी ने सुलतानपुर से एक पंडित को बुलवा कर टाकरी अक्षरों का अनुवाद करवाया और इन अक्षरों का नाम 'गुरमुखी' रखने का आदेश किया।

गुरु अंगद साहिब के दरबार में नित्यप्रति भाई बलवंड रबाबी शबद-कीर्तन करता था। एक समय बाबा बुड्ढा जी ने भाई राय बलवंड रबाबी को कहा, "मुझे शबद सुनाओ।" भाई राय बलवंड ने बाबा बुड्ढा जी को शबद-कीर्तन सुनाने से इंकार कर दिया और कह दिया, "मैं किस-किस के आगे शबद पढ़ूं? जब गुरु जी आएंगे तब मैं शबद सुनाऊंगा।" जब गुरु अंगद साहिब जी सिंघासन पर आए भाई राय बलवंड लगा शबद-कीर्तन करने। गुरु जी ने अपना मुंह दूसरी तरफ कर लिया तथा भाई राय बलवंड की ओर अपनी पीठ कर ली। भाई राय बलवंड गुरु जी के सन्मुख होकर फिर शबद-गायन करने लगा। गुरु जी ने फिर अपना मुंह दूसरी ओर कर लिया। भाई राय बलवंड खड़ा होकर कहने लगा, "गुरु जी! शबद क्यों नहीं सुनते?" गुरु जी ने वचन किया "जद बाबे बुड्ढे विच हम सुनते, तब तू न सुनाइआ, अब वेला नाही।" (साखी ५)

**पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, क्षेत्रीय खोज केंद्र, गुरदासपुर (पंजाब)-१४३५२१*

भाई राय बलवंड ने मन में अहंकार किया और कहा, "गुरु जी, मैं बाबे की बाणी केवल आपके आगे ही गावता हूं और किसी को मैं नहीं सुनावता।" उसने अहंकार करके यह भी क्रोध में कह दिया कि "हमारे पास बाबे की बाणी है। हम किसी और से मांग खाएंगे।" यह कह कर उठ कर चला गया। गुरु साहिब की ऐसी कला बरती, जहां भी बलवंड जाए, उसे कोई भी पहचाने नाही। छः दिन बीत गए, भूखा मरने लगा। बहुत दुखी हुआ। गुरु जी ने मीरजादे को बुलवा कर कीर्तन करवा लिया। (कुछ लोगों ने मीरजादा, भाई मरदाना जी के बेटे को कहा है, पर ऐतिहासिक स्रोतों में मीरजादे का जिक्र नहीं आता।) जब भाई राय बलवंड गुरु जी से रूठ कर गुरु-दरबार से चला गया तो गुरु जी ने राग और शबद अपने सिक्खों को बख्श दिया। गुरु जी के सिक्खों--भाई रामू जी, भाई दीपा जी इत्यादि ने जब गुरु-कृपा से कीर्तन किया, शबद-धुनें लगाईं, संगत समेत गुरु जी बहुत आनंदित हुए। रबाबी भाई राय बलवंड को जब पता चला तो उसको बहुत पश्चाताप हुआ। भाई राय बलवंड ने गुरु जी के सिक्खों को साथ लेकर गुरु जी से क्षमा मांगी। उसने कहा, "मिहरवान! मैं बड़ा पापी हां। मैनूं क्रिपा करके बखशीए जी।" तब गुरु जी कृपा के घर में आए और आज्ञा की "गुरु-स्तुति कर।" गुरु-कृपा से भाई राय बलवंड तथा भाई सत्ते डूम ने गुरु-स्तुति की, जो 'वार' के रूप में श्री गुरु ग्रंथ साहिब में पन्ना ९६६-६८ पर अंकित है।

श्री गुरु अंगद देव जी के दरबार में संगत के लिए स्वादिष्ट लंगर अटूट बरतता था, जिसमें देसी घी की खीर, कड़ाह प्रसादि और महा आनंद देने वाले भोजन संगत के लिए तैयार होते थे। इसका प्रमाण श्री गुरु ग्रंथ साहिब (पन्ना ९६६-६८) में अंकित है।

तीसरे 'गुरु' के रूप में प्रतिष्ठित होने से पूर्व श्री गुरु अमरदास जी हर साल की तरह जब २१वीं वार धार्मिक यात्रा करके वापिस आ रहे थे तब रास्ते में गांव मेहड़ा में दुर्गा पंडित की प्रेरणा और एक ब्रह्मचारी साधु की संगत से गुरु जी को अपने 'निगुरेपन' का अहसास हुआ। पूरे गुरु की खोज में बीबी अमरो जी (जो गुरु अंगद साहिब जी की बेटी थीं और बाबा अमरदास जी के भतीजे को ब्याही हुई थी) की प्रेरणा से श्री गुरु अमरदास जी को श्री गुरु अंगद देव जी की संगत, दर्शन और नाम-सिमरन रूप में 'गुरु' की प्राप्ति हुई। बाबा अमरदास जी ने लगभग १२ साल गुरु जी की जल-स्नान से सेवा की। इसके अलावा गुरु के लंगर और संगत की पूरी लगन तथा परिश्रम से सेवा की, नाम-सिमरन में पक्की धुन लगाए रखी। वर्षा के मौसम और एक काली अंधेरी ठंडी रात को जब श्री गुरु अमरदास जी ब्यास दरिया से गुरु-स्नान के लिए जल ला रहे थे तो अंधेरा होने के कारण जुलाहे की खड्डी से ठोकर खाकर गिर गए। जुलाही ने आपके प्रति गलत वचन (अमरू निथावां) बोले। श्री गुरु अंगद देव जी को जब इस घटना का पता चला तो आप जी ने अपने धुर-दरगाह बेअंत भंडारे से सभी बख्शिशें श्री गुरु अमरदास जी को बख्श दीं। उपरांत समय पाकर सभी प्रकार की गुरमति कसौटी से परख-परख कर जब देखा कि अब वे सम्पूर्ण हो गए हैं तो श्री गुरु अंगद देव जी ने अपनी ज्योति श्री गुरु अमरदास जी में रख कर उनको जगत-गुरु बना दिया।

श्री गुरु अंगद देव जी का दरबार लगा हुआ था। खडूर साहिब का एक जिमींदार

(शेष पृष्ठ ६९ पर)

"गुर कीरत प्रकाश" कृत कवि वीर सिंघ बल के अनुसार श्री गुरु अंगद साहिब का जीवन-परिचय

*-बीबी रणजीत कौर पंनवां**

"गुर कीरत प्रकाश" एक लघु चरित-काव्य-संग्रह है जो कवि वीर सिंघ बल द्वारा रचा गया है तथा महत्वपूर्ण सिक्ख-स्रोत है। ब्रज भाषा (गुरमुखी अक्षर) में लिखे 'गुर कीरत प्रकाश' के दस हुलास+ तथा २१९२ के लगभग बंद हैं, जिनमें गुरु-प्रशंसा (कीरत-कीर्ति) के अलावा इतिहास के दर्शन भी होते हैं, क्योंकि इस चरित-काव्य के नायक गुरु साहिबान हैं जो ऐतिहासिक व्यक्ति हैं। इस रचना में गुरु साहिबान के जीवन से सम्बंधित कुछ चुनिंदा मगर महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं का विस्तृत वर्णन है। श्री गुरु अंगद देव जी के जीवन से सम्बंधित जानकारी पहले हुलास के आखिरी बंदों एवं दूसरे हुलास के १२३ बंदों में उपलब्ध है। "गुर कीरत प्रकाश" को देखने पर श्री गुरु अंगद देव जी के जीवन के निम्नलिखित पक्ष उजागर होते हैं :

श्री गुरु अंगद देव जी का प्रारंभिक जीवन: प्रथम हुलास में कवि ने श्री गुरु अंगद देव जी के प्रारंभिक जीवन के बारे में जिक्र किया है। गुरु जी के पिता का नाम फेरूचंद, माता का नाम दइआ कौर तथा सुपत्नी का नाम माता खीवी जी बताया है:

पिता चंदि फेरू माता दइआ कौरं।
महिल मात खीवी जिसै राज तौरं।१।२६२।

इस वर्णन के बिना पहले हुलास में श्री गुरु अंगद देव जी को गुरुता-पद मिलने से पहले हुई परीक्षाओं आदि के विवरण बाखूबी से वर्णित हुए मिलते हैं जो गुरु जी की निष्काम सेवा-भावना की तर्जमानी करते हैं।

भाई लहिणा जी की निष्काम सेवा-भावना : प्रथम हुलास में कई परीक्षाओं का जिक्र है। "गुर कीरत प्रकाश" में वर्णित एक साखी के अनुसार श्री गुरु नानक देव जी अपने सपुत्र बाबा सिरीचंद को पूछते हैं कि "पुत्र, देखो रात कितनी बीती है और कितनी शेष है?" बाबा सिरीचंद नाराज होकर उत्तर देते हैं कि "पिता जी, आपने मुझे आधी रात को क्यों जगाया?" फिर गुरु जी भाई लहिणा जी से कहते हैं कि "आप देखो, रात कितनी बीती है और कितनी शेष है?" भाई लहिणा जी गुरु-हुक्म का पालन करते हुए उत्तर देते हैं कि "हजूर! जितनी आपने बिताई है बीत गई है।"

अंगद जू कहियो तितिनी जू हजूरि सिरी मुख ते फरमाइयो।
घाट न बाढ कदांच भवै प्रभ जो कहिहो तुम साचु सबाइयो।१।३७४।

दूसरे हुलास में कवि वीर सिंघ बल बताते हैं कि भाई लहिणा जी ने अपना तन-मन गुरु नानक साहिब को समर्पित करके प्रसन्न कर लिया और खुद गुरु नानक साहिब के अंग लगकर "लहिणा" से "अंगद" बन गए। यह

*सहायक रीसर्च स्कालर, सिक्ख इतिहास रीसर्च बोर्ड, शिरोमणि गु: प्र: कमेटी, श्री अमृतसर।

+ 'हुलास' संस्कृत के 'उलास' शब्द का तद्भव रूप है जिसका तात्पर्य किसी नायक के चमत्कारी जीवन के कांड, पर्व या अध्याय से है। (महान कोश, नेशनल बुक शॉप, दिल्ली, १९९८, पन्ना १८)

सारा फल भाई लहिणा जी की निष्काम सेवा-भावना का ही था:

सांत सुभावु सद जिन को नहिं तांमस तीर चदांच सु आई।
आइ मिलियो गुर नानक को जब मांनु निवार सु सेव कमाई।
सीसु दइयो तन लौ मन लौ तब रीझ सिरी गुर नानक राई।
अंग लगाइ कहियो गुरु अंगदु थाप दई अपुनी गुरआई।१२।२।

गुरिआई मिलने के बाद का जीवन : गुरिआई प्राप्त करके गुरु अंगद साहिब जी गुरु नानक साहिब के हुक्मानुसार खडूर साहिब जाकर रहने लगे। यहां गुरु जी के दो पुत्र भाई दासू जी, भाई दातू जी तथा एक सपुत्री बीबी अमरो जी थीं जो बासरपुरे (बासरके) ब्याही हुई थी। (यहां पर गुरु जी की दूसरी सपुत्री बीबी अनोखी जी का जिक्र नहीं है।)

दोहरा : गुर अंगद घर पूत जुग दासू दातू नाम।
सुख निध राज समाज मैं रहें सु आठो जांम।४।

सोरठा : बीबी अमरो नांमु सिरी गुरू अंगद जी सुता।
सदा जपै मुख रांमु सो बिआही बासरपुरे।२।५।

गुरु जी की उपमा : गुरु अंगद साहिब जी की उपमा करते हुए कवि वीर सिंघ बल ने गुरु जी को सोने तथा पारस के समान बताया है कि जैसे मानूर (लोहे की मैल) को ढालने पर लोहा, पारस से छूने पर सोना बन जाता है, इसी तरह गुरु जी की संगत करने से और पूर्ण गुरु के दर्शन करने से मन की मैल दूर हो जाती है, हृदय पवित्र हो जाता है :

पूरा सतगुरु मिलै सु जां को।
करे मनूरों कंचनु तां को।
आवागवन तास मिट जाइ।
रहे जोत मै जोत समाइ।२।१०।

बाबा अमरदास जी का गुरु अंगद साहिब से मिलाप : बाबा अमरदास जी के गुरु अंगद साहिब जी से मिलाप को लगभग १९ से २७ बंद तक वर्णन किया गया है। "गुर कीरत प्रकाश" के कर्त्ता के अनुसार बीबी अमरो जी अपने ससुराल घर नित्यप्रति अमृत वेले उठते, गुरबाणी का पाठ करते थे। एक दिन बीबी अमरो जी के मुख से अलाही बाणी का पाठ बाबा अमरदास जी ने सुना तो वे अत्यंत प्रभावित हुए:

एकु दिवस बीबी जू प्रातै।
बाणी पढी बडै परभातै।
एहु सबद बीबी जब भणे।
अमरदास निज मनु दै सुणे।२।९।

उन्होंने बीबी अमरो जी से पूछा कि यह इतनी प्रभावशाली बाणी किसकी है? ऐसी बाणी के रचयिता 'गुरु' से मुझे भी मिला दो। जिनकी बाणी हृदय को इतनी ठंडक देने वाली है उनके दर्शन कितने दुर्लभ होंगे! बीबी अमरो जी ने बताया कि यह बाणी गुरु नानक साहिब के घर के वारिस गुरु अंगद साहिब जी की है और वे मेरे पिता जी हैं। वे खडूर साहिब में रहते हैं:

तब बीबी इह वाकु उचारा।
वसै खडूर जु पिता हमारा।
गुर नानक की करतिहिं सेव।
लइयो अमर पदु अलख अभेव।१४।
स्री अंगद तां को नांम।
वसे खडूर सु आठो जांम।
जैसी मनसा कर तिंहिं सेवै।
मन बाछत तैसो फलु लेवै।२।१५।

इस प्रकार बाबा अमरदास जी गुरु अंगद

साहिब के परम सिक्ख बने तथा कठिन सेवा आदि के बल पर तीसरे 'गुरु' स्थापित हुए।

गुरु अंगद साहिब के समय सिक्ख एवं प्रमुख घटनाएं : एक गोंदू (गोंदा) नाम के व्यक्ति ने गुरु जी के पास आकर विनती की कि उसकी जमीन ब्यास दरिया के पास है। वहां भूतों-प्रेतों का निवास है, जिस कारण लोग उस जगह से डरते हैं। श्री गुरु अंगद देव जी ने भाई गोंदा जी के साथ बाबा अमरदास जी को भेजा और वहां पर 'गोइंदवाल' नाम का नगर बसाने का हुक्म दिया :

तब गोंदू गुर आइ सुमांन।
अमरदासु लै संग सुजांन।
निज पुर सुभ रच दइयोसु धांमां।
गोइंदवालु धरियो पुर नांमां।३५।
अमरदास जब पुर पगु पाइयो।
सरब भूत भागे भै खाइयो।

एक अन्य घटना का उल्लेख करता हुआ कवि कहता है कि गुरु अंगद साहिब के सच्चे-सुच्चे कार-विहार से योगी, ढोंगी एवं तथाकथित उच्च जाति वाले लोग बहुत ईर्ष्या करते थे। इसी तरह खडूर साहिब के एक योगी ने अपने वहमों-भ्रमों तथा अंधविश्वासों में लोगों को फंसा, वर्षा न होने का दोष श्री गुरु अंगद देव जी पर लगा दिया, क्योंकि गुरु जी के दरबार में संगत की बढ़ोत्तरी के कारण योगी की दुकानदारी घाटे में चल रही थी। उसने कुछ लोगों को अपने पीछे लगा यह कहना शुरू कर दिया कि जब तक ये (गुरु जी) यहां पर रहेंगे वर्षा नहीं होगी। अंतरयामी गुरु जी खडूर साहिब छोड़कर 'भरोवाल' गांव में जाकर रहने लगे, मगर वर्षा फिर भी न हुई। जब इस घटना का पता बाबा अमरदास जी को लगा तो उन्होंने लोगों को समझाया और लोग योगी के द्वारा उनको धोखे तथा अज्ञानता में रखने के लिए योगी का बुरा हाल किया। सहज और धैर्य के पुंज गुरु अंगद साहिब ने बाबा अमरदास जी को ऐसा करने से रोका और वाहिगुरु के हुक्म में रहने का आदेश दिया:

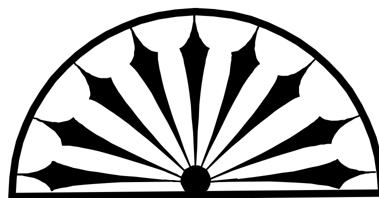
सिरु नाइ अमर जब पांइ गहें।
गुर अंगद जु दै पीठ रहे।
कहियों किउं हतु कीओ जुगेसर को।
भव भै न भइयो परमेसर को।२।६५।

दूसरे हुलास में ही रबाबी भाई राय बलवंड जी की गुरु जी के साथ नाराज होने वाली घटना का भी उल्लेख मिलता है।

गुरु जी का ज्योति जोत समाना : "गुर कीरत प्रकाश" में मिलते विवरण के अनुसार गुरु अंगद साहिब १२ वर्ष, ६ माह, ९ दिन गुरुता-पद पर विराजमान रहे। बाबा अमरदास जी को गुरिआई बख्श कर आप जी चौथ चेत्र सुदी १६०९ वि. को ज्योति जोत समा गए :

बारा बरस छि मास पुन नौ दिन राजु कमाइ।
सोलां सै नौ बरस चौथ चेत सुदी पाइ।२।१२२।

इस प्रकार हम देखते हैं कि कवि वीर सिंघ बल ने अपनी काव्य-रचना "गुर कीरत प्रकाश" में श्री गुरु अंगद देव जी के जीवन-वृत्तांत को सुंदर ढंग से वर्णित किया है, जो हमें श्री गुरु अंगद देव जी के जीवन-काल के इतिहास की भरपूर जानकारी उपलब्ध करवाता है। 



भाई सत्ते-भाई बलवंड की वार में श्री गुरु अंगद देव जी की महिमा का वर्णन

-डॉ. मनजीत कौर*

सेवा करत होइ निहकामी ॥
तिस कउ होत परापति सुआमी ॥
अपनी क्रिपा जिसु आपि करेइ ॥
नानक सो सेवकु गुर की मति लेइ ॥
बीस बिसवे गुर का मनु मानै ॥
सो सेवकु परमेसुर की गति जानै ॥
(पन्ना २८६-८७)

चढ़दी कला वाले जीवन हेतु मुख्यतया दो विलक्षण गुण अत्यावश्यक हैं--"सेवा तथा सिमरन"। सेवा करके इस हृदय रूपी बर्तन को निर्मल व पवित्र करना है ताकि उसमें परमेश्वर का पावन नाम सहजता से प्रवेश कर सदा के लिए उसमें समा जाए जिसकी बदौलत एक ऐसी घाड़त (आकृति) बनती है जहां नाम तथा नामी, गुरु तथा शिष्य अभेद हो जाते हैं। इस संदर्भ में श्री गुरु नानक देव जी की बाणी बड़ा सुंदर एवं सटीक दृष्टांत प्रस्तुत करती है:

जतु पाहारा धीरजु सुनिआरु ॥
अहरणि मति वेदु हथीआरु ॥ . . .
घड़ीऐ सबदु सची टकसाल ॥
जिन कउ नदरि करमु तिन कार ॥
नानक नदरी नदरि निहाल ॥ (पन्ना ८)

श्री गुरु रामदास जी की पावन बाणी में भी इसी भाव के दर्शन होते हैं, यथा :

गुरमुखि सेवा घाल जिनि घाली ॥
तिसु घड़ीऐ सबदु सची टकसाली ॥ (पन्ना ११३४)

ऐसी अवस्था को धारण करने वाले के हृदय में सदैव आनंद की स्थिति बनी रहती है। आत्मिक अडोलता की उच्चावस्था को प्राप्त कर उनका हृदय सदैव कमल के फूल की तरह प्रफुल्लित रहता है, यथा :

प्रभ कै सिमरनि निहचल आसनु ॥
प्रभ कै सिमरनि कमल बिगासनु ॥
प्रभ कै सिमरनि अनहद झुनकार ॥
सुखु प्रभ सिमरन का अंतु न पार ॥
(पन्ना २६३)

गुरु-इतिहास में सेवा तथा सिमरन के अनेक उदाहरण उपलब्ध हैं परन्तु सेवा की बदौलत सेवक का गुरु-रूप हो जाने का विलक्षण उदाहरण हमें प्रथम बार श्री गुरु अंगद देव जी के पावन जीवन से ही मिलता है। गुरु साहिब ने इस अवस्था का जिक्र स्वयं भी किया है। अकाल पुरख तथा पूर्ण गुरु का यशोगान करते हुए आपने पावन फरमान किया :

साहिबु होइ दइआलु किरपा करे ता साई कार कराइसी ॥
सो सेवकु सेवा करे जिस नो हुकमु मनाइसी ॥
हुकमि मंनिऐ होवै परवाणु ता खसमै का महलु पाइसी ॥
खसमै भावै सो करे मनहु चिदिआ सो फलु पाइसी ॥
ता दरगह पैधा जाइसी ॥ (पन्ना ४७१)

भट्ट बाणीकारों ने भी श्री गुरु अंगद देव जी की स्तुति करते हुए स्पष्ट किया है कि "लहिणा जी" गुरु जी का पूर्व का नाम था तथा किस तरह अकाल रूप श्री गुरु नानक देव जी

*२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४ (राजस्थान)

का स्पर्श एवं सेवा की बरकतों से सारे जगत में उनकी श्री गुरु अंगद देव जी के रूप में ख्याति फैल गई। यही नहीं, गुरु-पद पाकर राजयोगी बने, यथा:

कहु कीरति कल सहार सपत दीप मझार
लहणा जगत गुरु परसि मुरारि ॥ (पन्ना १३९१)

यही नहीं, भाई गुरदास जी ने अपनी वारों में श्री गुरु अंगद देव जी की महिमा को बहुत सुंदर ढंग से मुखरित किया है, यथा:

गुरु अंगदु गुरु अंगु ते अंम्रित बिरखु अंम्रित फल फलिआ।
जोती जोति जगाईअनु दीवे ते जिउ दीवा बलिआ।
हीरै हीरा बेधिआ छ्लु करि अछुली अछलु छलिआ।
कोइ बुझि न हंघई पाणी अंदरि पाणी रलिआ ॥
(वार २४:८)

इस संदर्भ में प्रो. पूरन सिंघ के हृदयोदगारों का उल्लेख करना आवश्यक प्रतीत होता है। श्री गुरु नानक देव जी की साकार प्रतिमा को श्री गुरु अंगद देव जी में चित्रित करते हुए प्रो. पूरन सिंघ जी का कथन बड़ा निराला है :

He gave Angad his own love,
his own face and name and soul.
He gave him his own throne,
in the hearts of men.
He called him "Born of my loins",
and made another Nanak on this earth.
This is Nanak, the Master,
the Spirit of God
that fashions himself
for ever in the image of man.

अर्थात् "उन्होंने भाई लहिणा जी को प्रेमा-भक्ति, अपना मुख, नाम तथा आत्मा बख्श दी। लोगों के दिलों पर बनाया अपना सिंहासन भी सौंप दिया। उन्हें अपने अंग की उपज बतलाते हुए 'अंगद' कहा तथा इस धरती पर एक और 'नानक' बना दिया। यह है पीर-मुरशिद नानक ईश्वर की आत्मा जो स्वयं को हमेशा मनुष्य के रूप में साकार करती रहती है।"

(Prof. Puran Singh, The Book of the Ten Masters, London-1926, p. 29)

भाई राय बलवंड जी तथा भाई सत्ता जी की बाणी 'वार' रूप में श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज है।

उपरोक्त विषयानुसार भाई सत्ते-भाई बलवंड की वार में श्री गुरु अंगद देव जी का जीवन-चरित्र-वर्णन से पूर्व भाई सत्ते-भाई बलवंड जी का संक्षिप्त जीवन परिचय एवं उनकी इस वार-उच्चारण के मन्तव्य को जानना आवश्यक है।

भाई सत्ता जी और भाई बलवंड जी दोनों भाई गुरु-घर के सुप्रसिद्ध कीर्तनीए थे। भाई मरदाना जी के बाद सिक्ख धर्म में इन दोनों कीर्तनकारों को बेहद मान-सम्मान प्राप्त हुआ है। विद्वानों के अनुसार इनकी बाणी इन्हें महान विद्वान स्थापित करती है तथा साथ ही गुरु-घर के अनन्य सिक्ख तथा गुरु-सिद्धांत एवं गुरु-दरबार की शोभा ने इनकी बाणी को आध्यात्मिकता के साथ-साथ एक ऐतिहासिक स्रोत के रूप में भी मान्यता दिलवाई है। कुछ इतिहासकारों ने इन्हें श्री गुरु अंगद देव जी तथा कुछ ने श्री गुरु अमरदास जी के गुरु-दरबार के कीर्तनीये माना है, लेकिन श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के टीकाकार एवं महान चिंतक-विद्वान प्रो. साहिब सिंघ जी ने "श्री गुरु ग्रंथ साहिब दरपण" की सातवीं पोथी (सैंची) में भाई सत्ता जी तथा भाई बलवंड जी के जीवन पर खोज भरपूर चर्चा करके एक सारगर्भित निष्कर्ष

प्रस्तुत किया है कि ये दोनों भाई पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी के समय गुरु-घर के कीर्तनीए थे तथा यहीं इनकी रोजी-रोटी का प्रबंध भी हो जाता था। जब इनकी बेटी विवाह योग्य हुई तब इन्होंने गुरु साहिब से विनती की कि वैसाख माह की संक्रांति पर जो भेटा (चढ़ावा) गुरु-घर में आए वह उन्हें बेटी के विवाह हेतु सहायतार्थ देने की कृपा की जाए। गुरु साहिब ने सहमति दे दी। इत्तफाक से उस दिन भेटा कम आई। ये दोनों भाई यह सोच कर कि गुरु साहिब ने ही संगत को आज ज्यादा भेटा न रखने को प्रेरित किया है, ये दोनों गुरु-घर से बेमुख हो गए और कीर्तन की सेवा भी छोड़ दी।

श्री गुरु अरजन देव जी इनके कीर्तनकार होने का मान-सत्कार करते हुए स्वयं चलकर इनके घर गए। इन्होंने गुरु साहिब जी की भी परवाह नहीं की और स्पष्ट इंकार कर दिया। कुछ विद्वानों के अनुसार इन्होंने गुरु नानक साहिब तथा गुरु-घर की निंदा भी की। गुरबाणी आशयानुसार *"निंदा भली किसै की नाही"* और अकाल रूप गुरु साहिबान की तथा सिफती का घर गुरु-घर की निंदा करने वालों की क्या दशा हुई होगी, इसका अंदाजा सरलता से लगाया जा सकता है।

कुछ ही समय में दोनों परमार्थ और संसार से बेगाने से हो गए। दो वक्त की रोटी का जुगाड़ भी नहीं रहा। अहंकार तथा कड़वे बोलों से गुरु-घर से संबंध तोड़ चुके थे। मन ही मन पछताने के सिवाय कोई मार्ग नहीं सूझ रहा था। अंत पछताने के सिवाय कोई मार्ग नहीं बचा। अंत में गुरु-घर के प्रेमी लाहौर निवासी परोपकारी भाई लद्धा जी के पास जाकर विनती की। दोनों भाई परोपकारी भाई लद्धा जी के साथ गुरु-दरबार पहुंचे और अपनी करनी पर बेहद शर्मिंदा थे। गुरु-घर जाकर संगत के समक्ष माफी मांगी। जिस मुंह से गुरु-घर की निंदा की थी उसी से आज गुरु साहिबान की तथा गुरु-घर की स्तुति करते हुए अपना जीवन सफल किया।

दोनों भाइयों ने रामकली राग में 'वार' उच्चारण की जो कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पावन स्वरूप में पन्ना ९६६ से प्रारंभ होकर ९६८ तक सुशोभित है। इस वार में पहले ३ शबद भाई बलवंड जी के तथा अंतिम ५ शबद भाई सत्ता जी के हैं। भाई बलवंड जी की पउड़ियों में गुरु नानक साहिब द्वारा भाई लहिणा जी को गुरगद्दी देकर श्री गुरु अंगद देव रूप में स्थापित करना तथा श्री गुरु अंगद देव जी के समय सिक्खी के विकास के लिए किए गए महान कार्यों का स्पष्टीकरण है। भाई सत्ता जी द्वारा रचित पउड़ियों में श्री गुरु अंगद देव जी से लेकर पंचम पातशाह तक के समय और महान कार्यों को रूपायित किया गया है। बहुत ही सुंदर एवं आध्यात्मिक ढंग से गुरु-घर की उपमा की गई है।

'वार' काव्य का एक प्रकार माना जाता है जिसका केंद्रीय भाव किसी वीर योद्धा के जीवन के किसी विशेष पक्ष या विलक्षण कारनामे पर मंत्रमुग्ध कर देने वाली रचना श्रोताओं के समक्ष गायन की जाती है ताकि उस ओजस्वी रचना को सुनकर श्रोताओं में वीर रस का संचार हो।

प्रो. साहिब सिंघ के चिंतनानुसार, दुनिया के कवियों ने किसी सूर (वीर पुरुष) की वह बहादुरी लोगों के समक्ष पेश की जो उसने रणभूमि में तलवार हाथ में लेकर दिखाई। गुरु साहिबान ने इस जगत को एक रणभूमि के रूप

में देखा। समस्त जीव-सिपाही काम आदि विकारों से लड़ रहे हैं। आम लोग तो धोखा खा जाते हैं पर विरले पुरुष इन विकार रूपी शत्रुओं का मुंह-तोड़ जवाब देते हैं। इस युद्ध में कई दांव-पेच होते हैं। विशेष योद्धाओं के विलक्षण दांव-पेचों को कवि अपनी कविता में बहुत सुंदर ढंग से बयान करते हैं। ठीक इसी प्रकार आत्म-संग्राम में भी काम आदि शत्रुओं का मुकाबला करने हेतु सिमरन, सेवा, कीर्तन, सतसंग, प्रेम आदि विलक्षण दांव-पेंच हैं। गुरु साहिबान ने आत्म-संग्राम के कारनामों पर जो 'वारें' लिखी हैं इनमें भी कोई विशेष कारनामा शामिल होता है।

भाई सत्ते और भाई बलवंड की वार में भी गुरु साहिबान के विचित्र कारनामों को बहुत सुंदर ढंग से अभिव्यक्त किया गया है, यथा:

लहणे धरिओनु छत्रु सिरि असमानि किआड़ा छिकिओनु ॥
जोति समाणी जोति माहि आपु आपै सेती मिकिओनु ॥ (पन्ना ९६७)

अर्थात् दुनिया ने सिक्ख धर्म की एक नई रीति देखी। गुरु नानक पातशाह ने गंगा को अन्य रास्ते से ही बहा दिया। उन्होंने भाई लहिणा जी के सिर पर गुरिआई का छत्र रख कर उनकी शोभा आसमान तक पहुंचा दी तथा अपनी ज्योति उनकी ज्योति में टिका दी।

वस्तुत: समूची 'वार' का एक ही केंद्रीय भाव है--"गुरु का अपने शिष्य के आगे नमस्कार।" श्री गुरु ग्रंथ साहिब में इन दोनों भाइयों द्वारा उच्चारण की गई इस बाणी को लिखित रूप में गुरु साहिब पंचम पातशाह ने शीर्षक दिया :

रामकली की वार राइ बलवंडि तथा सतै डूमि आखी ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

आओ! इस पावन बाणी द्वारा श्री गुरु अंगद देव जी के जीवन-चरित्र को जानें।

भाई सत्ते-भाई बलवंड की वार में श्री गुरु अंगद देव जी का जीवन-चरित्र-वर्णन

भाई लहिणा जी गुरु नानक पातशाह की शरण में आकर सेवा की प्रतिमा बन गए। इस अनन्य सेवा ने उन्हें गुरु नानक पातशाह का अभिन्न अंग बना दिया और साथ ही श्री गुरु अंगद देव जी नाम देकर गुरगद्दी का वारिस बना दिया।

जिसकी झोली नेहमतों से अकाल पुरख भर दे उसकी स्तुति करने के शब्द किसके पास हो सकते हैं? भाई बलवंड जी ने भी अपनी 'वार' के प्रारंभ में यही स्पष्ट किया है, यथा:

नाउ करता कादरु करे किउ बोलु होवै जोखीवदै ॥ . . .
नानकि राजु चलाइआ सचु कोटु सताणी नीव दै ॥ (पन्ना ९६६)

समस्त गुण गुरु नानक पातशाह में कुदरत की ओर से ही परिपूर्ण थे। संसार रूपी भवसागर से पार उतारने में समर्थ गुरु नानक साहिब ने सत्य-स्वरूप किला बना कर एवं धर्म की मजबूत नींव रख कर राज्य चलाया। यही नहीं, गुरु साहिब ने अकाल पुरख द्वारा दी गई बुद्धि रूपी तलवार के बल से भाई लहिणा जी का पहला जीवन बाहर निकाल कर अर्थात् उनमें समूल परिवर्तन कर, आत्मिक जिंदगी बख्श कर भाई लहिणा जी के शीश पर गुरुता का छत्र धारण करवा दिया, यथा :

लहणे धरिओनु छतु सिरि करि सिफती अंम्रितु पीवदै ॥
मति गुर आतम देव दी खड़गि जोरि पराकुइ जीअ दै ॥ (पन्ना ९६६)

उपरोक्त बाणी में भाई लहिणा जी की

अनन्य सेवा-भाव, गुरु-चरणों में अपनी मति के समर्पण के परिणामस्वरूप मिली बख्शिशों का जिक्र किया गया है, क्योंकि गुरु नानक साहिब के घर में इहलोक एवं परलोक के सुख हैं। समस्त रिद्धियां-सिद्धियां इसी में समाहित हैं। यह तो दर आए की भावना एवं श्रद्धा-भाव पर निर्भर करता है कि वह किस योग्य पात्र बना है। जैसे एक कवि ने इस संदर्भ में भाव अभिव्यक्त करते हुए गुरु नानक साहिब की महिमा का गान किया है:

सुनावां जलवे की तेरे, सुनाए जा नहीं सकदे।
तूं जिंने करम कीते ने, कला विच आ नहीं सकदे।
जिवें तारे किसे मुट्ठी दे विच, समा नहीं सकदे।
ओह बदकिस्मत ने जो तेरे, दर आ नहीं सकदे।
तेरी महिमा तों जां वारी, जगत नूं की नहीं मिलदा!
सिदक दी गल्ल है सारी, भगत नूं की नहीं मिलदा!

यही नहीं, इस 'वार' में एक विलक्षण पहलू यह भी उभर कर आया है कि गुरु नानक पातशाह अपने जीवन-काल में ही अपने प्यारे सिक्ख के समक्ष नत्मस्तक हुए तथा उन्हें गुरुतागद्दी सौंप दी, यथा :

गुरि चेले रहरासि कीई नानकि सलामति थीवदै ॥
सहि टिका दितोसु जीवदै ॥ (पन्ना ९६६)

यहां गुरु-शिष्य अभेद हो गए। यहां आध्यात्मिक मार्ग में जीवात्मा का परमात्मा में अभेद होना जीवन का परम लक्ष्य है। यहां गुरु (गुरु नानक साहिब), शिष्य (भाई लहिणा जी), गुरु (परमात्मा), शिष्य (जीवात्मा) अर्थात् परमेश्वर का जीव में अभेद हो जाना। वही जीवन-युक्ति, वही ज्योति (ज्ञान प्रकाश) केवल शरीर ही परिवर्तित हुआ था, यथा भाई बलवंड जी की बाणी :

लहणे दी फेराईऐ नानका दोही खटीऐ ॥
जोति ओहा जुगति साइ सहि काइआ फेरि पलटीऐ ॥ (पन्ना ९६६)

अतः जब अपनी नूरानी ज्योति गुरु नानक साहिब ने भाई लहिणा जी में स्थापित कर दी तब गुरु नानक पातशाह की तरह श्री गुरु अंगद देव जी की स्तुति सर्वत्र होने लगी।

हुक्म (आदेश) मानने की कठोर साधना

भाई लहिणा जी के शीश पर अलाही छत्र झूल रहा है। यह अत्यंत कठिन साधना के उपरांत प्राप्त हुआ है। यह प्राप्ति 'खाला जी का घर' नहीं है। गुरु-वचन की कमाई अति कठोर साधना है जिसको भाई लहिणा जी ने कमाया है, यथा :

झुलै सु छतु निरंजनी मलि तखतु बैठा गुर हटीऐ ॥
करहि जि गुर फुरमाइआ सिल जोगु अलूणी चटीऐ ॥ (पन्ना ९६७)

पंगत एवं संगत की मर्यादा को सुदृढ़ रूप प्रदान करना

जिस लंगर की प्रथा को श्री गुरु नानक देव जी ने प्रारंभ किया, जो ऊंच-नीच, छोटे-बड़े, स्त्री-पुरुष, अमीर-गरीब के भेदभाव को मिटा कर एकता, समता, भ्रातृभाव एवं मानवतावादी दृष्टिकोण को दृढ़ करवाती है उसे 'संस्था' रूप प्रदान किया श्री गुरु अंगद देव जी ने। जहां शारीरिक तौर पर उदर-पूर्ति हेतु लंगर के प्रवाह चल रहे हैं वहीं आत्मिक खुराक नाम-बाणी के निर्झर भी बह रहे हैं, यथा :

लंगरु चलै गुर सबदि हरि तोटि न आवी खटीऐ ॥
खरचे दिति खसंम दी आप खहदी खैरि दबटीऐ ॥ (पन्ना ९६७)

और यह ऐसी पूंजी है जो जितनी खर्च की

जा रही है उतनी ही बढ़ती जा रही है। ऐसी नाम रूपी दौलत बांटने वाले श्री गुरु अंगद देव जी की शोभा रूहानी देशों में निरंतर हो रही है, जिनके दीदार (दर्शन) मात्र से जन्म-जन्मांतरों के विकारों की मैल कट जाती है, यथा:

होवै सिफति खसंम दी नूरु अरसहु कुरसहु झटीऐ ॥
तुधु डिठे सचे पातिसाह मलु जनम जनम दी कटीऐ ॥ (पन्ना ९६७)

श्री गुरु अंगद देव जी का गुरु नानक साहिब की कसौटी पर खरा उतरना

विद्वानों के चिंतनानुसार श्री गुरु नानक देव जी का अपने पुत्रों को गद्दी न देकर योग्य पात्र को उत्तराधिकारी नियुक्त करना सिक्ख इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण घटना है, नहीं तो आने वाले समय में विवाद-मुक्त रहनुमाई सिक्ख पंथ को नहीं प्राप्त हो सकती थी। इसी भाव को रामकली की वार में बहुत स्पष्ट अभिव्यक्ति प्रदान की गई है, यथा:

सचु जि गुरि फुरमाइआ किउ एदू बोलहु हटीऐ ॥
पुत्री कउलु न पालिओ करि पीरहु कन्ह मुरटीऐ ॥ (पन्ना ९६७)

जहां गुरु साहिब के पुत्रों ने पिता गुरु नानक साहिब के वचन की पालना नहीं की, वहीं भाई लहिणा जी ने गुरु-वचनों की कमाई की। वस्तुत: यह वचन की पालना स्वयं के वश की युक्ति नहीं है। जिस पर गुरु साहिब की अपनी कृपा-दृष्टि हुई उससे स्वयं वचन की कमाई करवा कर उसे कसौटी पर खरा उतरवा दिया।

विनम्रता के धारणी होकर सतिगुरु के वचन की कमाई के फलस्वरूप स्वयं ही निरंकार रूप हो गए। उनकी रसना पर भी परवरदिगार बस गए। अब जो वचन श्री गुरु अंगद देव जी फरमान करते हैं अकाल पुरख वाहिगुरु उन्हें तत्काल पूर्ण कर देते हैं, यथा :

सतिगुरु आखै सचा करे सा बात होवै दरहाली ॥
गुर अंगद दी दोही फिरी सचु करतै बंधि बहाली ॥
नानकु काइआ पलटु करि मलि तखतु बैठा सै डाली ॥ (पन्ना ९६७)

गुरु के महिल (सुपत्नी) माता खीवी जी का यशोगान

भाई बलवंड जी ने माता खीवी जी को 'घने वृक्ष की ठंडी छांव' कह कर उपमा दी है। यहां उल्लेखनीय है कि सम्पूर्ण श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सिक्ख इतिहास से स्त्री रूप में बड़े सत्कार सहित माता खीवी जी का नाम सुशोभित है, यथा:

बलवंड खीवी नेक जन जिसु बहुती छाउ पत्राली ॥
लंगरि दउलति वंडीऐ रसु अंम्रितु खीरि घिआली ॥
गुरसिखा के मुख उजले मनमुख थीए पराली ॥
पए कबूलु खसंम नालि जां घाल मरदी घाली ॥
माता खीवी सहु सोइ जिनि गोइ उठाली ॥
(पन्ना ९६७)

माता खीवी जी को 'नेक जन' कह कर सम्बोधित किया है। माता खीवी जी की छाया अत्यंत गहन है जिनके पास बैठने से हृदय को सकून व शांति मिलती है। जैसे श्री गुरु अंगद देव जी नाम की दौलत बांट रहे हैं ठीक वैसे ही माता खीवी जी सेवा को समर्पित होकर संगत में घी वाली खीर बांट रही हैं। सेवा की प्रतिमा गुरु साहिब तथा उनकी सुपत्नी गुरु नानक के दर पर कबूल (प्रवान) हो गए।

जप-तप तथा संयम की त्रिवेणी

यह कुदरत का नियम है कि सर्व समर्थ परमेश्वर के अथाह गुण जिस हृदय-घर में बस जाते हैं वहां अहंकार का समूल नाश हो जाता है। श्री गुरु अंगद देव जी गुरतागद्दी को पाकर

भी विनम्रता के धारणी रहे। उनके इस विलक्षण गुण का जिक्र भी वार में किया है कि श्री गुरु नानक देव जी के आदेश से खडूर साहिब आकर वहां की शोभा बढ़ाई तथा साथ ही जहां जगत अपनी छोटी-छोटी प्राप्तियों का गुमान करता है वहां आप में पहले जैसी ही विनम्रता विद्यमान है, यथा:

फेरि वसाइआ फेरुआणि सतिगुरि खाडूरु ॥
जपु तपु संजमु नालि तुधु होरु मुचु गरूरु ॥
(पन्ना ९६७)

शालीनता के सागर

गुरु पातशाह के जीवन-चरित्र पर रोशनी डालते हुए भाई साहिब ने इन्हें 'शालीनता एवं शीतलता का सागर' बयान कर अपने हृदयोदगारों से गुरु साहिबान की सिफत-सलाह करते हुए अपनी अगाध श्रद्धा एवं प्रेम भाव को उजागर किया है, यथा:

लबु विणाहे माणसा जिउ पाणी बूरु ॥
वर्हिऐ दरगह गुरू की कुदरती नूरु ॥
जितु सु हाथ न लभई तूं ओहु ठरूरु ॥
नउ निधि नामु निधानु है तुधु विचि भरपूरु ॥
(पन्ना ९६७)

कितना सटीक दृष्टांत प्रस्तुत कर गुरु पातशाह की अगाध शीतलता एवं विनम्रता के दीदार करवाए हैं और कलयुगी जीवों का मार्ग प्रशस्त किया है कि जिस प्रकार पानी को बूर (काई आदि) खराब करता है वैसे ही मनुष्य को लोभ बर्बाद कर देता है! लेकिन गुरु नानक साहिब की दरगाह में नाम की वर्षा होने के कारण हे गुरु अंगद देव जी! आप पर अलाही नूर झलक रहा है! आप वो शीतल सागर हो जिसका अंत नहीं पाया जा सकता। ईश्वर का नाम रूपी खजाना आपके हृदय में भरा हुआ है अर्थात् नाम रूपी अमृतमयी वर्षा से आपका हृदय निर्मल है, अहंकार विहीन है, आनंद भरपूर है।

श्री गुरु अंगद देव जी के ६३ श्लोक श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित हैं, जिसमें अकाल पुरख की सिफत-सलाह, गुरु की सेवा तथा विनम्रता पर विशेष बल दिया गया है। गुरु पातशाह का यह पावन शबद उपरोक्त चिंतन का स्पष्टीकरण प्रस्तुत करता है:

हउमै दीरघ रोगु है दारू भी इसु माहि ॥
किरपा करे जे आपणी ता गुर का सबदु कमाहि ॥
नानक कहै सुणहु जनहु इतु संजमि दुख जाहि ॥
(पन्ना ४६६)

निष्कर्षतः भाई सत्ते-भाई बलवंड द्वारा रचित 'रामकली की वार' में जहां गुरु साहिब जी के जीवन का अद्वितीय एवं लासानी पक्ष प्रस्तुत कर उनके रूहानी गुणों की अभिव्यक्ति की है वहीं इस 'वार' में गुरु-घर के प्रति अगाध श्रद्धा-भाव के भी दर्शन होते हैं। जीवन का सर्वोपरि तथ्य, जो प्रत्येक जीवन में सूक्ष्म या स्थूल रूप से अहंकार (हउमै) विद्यमान है, यह जीव के आध्यात्मिक एवं सामाजिक गुणों को दीमक की तरह चाट जाता है। इसी के कारण पारिवारिक, सामाजिक और यहां तक कि आध्यात्मिक रिश्ते भी दरकते हैं। परिवार, निरंकार, सबसे दूरी बन जाती है और यही दूरी दुखों-कलेशों तथा संताप की जननी है। इसके विपरीत सतिगुरु तथा परमेश्वर, जो कि रहमतों का मालिक है, करुणा का सागर है, जब कोई अहंकार को त्याग कर पुनः गुरु की शरण में आता है तो सतिगुरु मेहर (रहमत) करके पिछले अवगुण बख्श कर पुनः उसे अपनी शरण में ले लेते हैं।



भट्ट-बाणी में श्री गुरु अंगद देव जी की उपमा

*-स. कुलदीप सिंघ**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भट्ट-बाणी के अंतर्गत १४ भट्ट साहिबान के १२३ सवैये हैं जिनमें श्री गुरु नानक देव जी से लेकर श्री गुरु अरजन देव जी तक की महिमा का वर्णन है। भट्टों में प्रमुख भट्ट कल सहार ने प्रथम पांच गुरु साहिबान की महिमा का गायन किया है। उनके द्वारा रचित श्री गुरु अंगद देव जी की प्रशस्ति में दस सवैये उच्चारित किये गये हैं जो पन्ना १३९१-९२ पर अंकित हैं। श्री गुरु अंगद देव जी के उदार चरित्र की महिमा का स्वाभाविक वर्णन भट्ट कल सहार ने सहज भक्ति-भाव से किया है। देखते ही पापों का नाश करने वाले, दरिद्रता दूर करने वाले, गुरमुखी लिपि की देन से शबद की नींव को दृढ़ करने वाले श्री गुरु अंगद देव जी के यश-गायन से भट्ट कल सहार की रसना सहज प्रेम से अभिभूत हो उठी है :

उदारउ चित दारिद हरन पिखंतिह कलमल त्रसन ॥
सद रंगि सहजि कलु उचरै जसु जंपउ लहणे रसन ॥ (पन्ना १३९२)

श्री गुरु अंगद देव जी की प्रशस्ति में उच्चारित सवैयों में प्रस्तुतीकरण बहुत ही भावपूर्ण और स्पष्ट है। श्री गुरु अंगद देव जी के आध्यात्मिक जीवन के तीन प्रमुख आयामों के क्रम से छंदों की शैली को बदलते हुए लयबद्ध किया गया है। पहले चार सवैयों में श्री गुरु अंगद देव जी की कीर्ति का वर्णन है। श्री गुरु नानक देव जी के चरण-स्पर्श से भाई लहिणा जी की कीर्ति सम्पूर्ण जगत में फैल गई है। द्वितीय आयाम में श्री गुरु अंगद देव जी के उदात्त चरित्र की राजयोग के रूप में व्याख्या (सवैया ५ से ७) की गई है तथा तृतीय आयाम में नाम और सच के साकार स्वरूप श्री गुरु अंगद देव जी के दर्शन से जीवन-दान प्राप्त होने का वर्णन है।

भट्ट कल सहार ने प्रथम चार सवैयों में श्री गुरु अंगद देव जी की निर्मल कीर्ति का उद्घोष किया है :

कहु कीरति कल सहार सपत दीप मझार
लहणा जगत्र गुरु परसि मुरारि ॥ (पन्ना १३९१)

श्री गुरु अंगद देव जी की कीर्ति का स्रोत श्री गुरु नानक देव जी हैं जिन्होंने भाई लहिणा जी के मस्तक पर हाथ रखा। सतिगुरु के स्पर्श से हृदय में अमृत-वर्षा हुई जिससे सारा संसार भीग गया। श्री गुरु नानक देव जी के द्वार की शरण लेकर श्री गुरु अंगद देव जी की वृत्ति निरंकार में लीन हो गई। (पारस के स्पर्श से श्री गुरु अंगद देव जी स्वयं पारस हो गये।)

श्री गुरु अंगद देव जी की दृष्टि अमृत की धारा है जो पापों की कालिमा को दूर करती है, विकारों के बोझ को हटाकर भवसागर की बाधा से पार करती है। गुरमति के विचार से माया की नींद टूट जाती है, आध्यात्मिक रस से जागृत होकर गुरमुख व्यक्ति सतसंगति में सहज रूप से प्रतिष्ठित होते हैं। उनमें विनम्रता और प्रेम का स्रोत उमड़ता है:

सतसंगति सहज सारि जागीले गुर बीचारि

**सी-१२७, गुरु तेग बहादर नगर, इलाहाबाद (यू. पी.)-२११०१६*

निंमरी भूत सदीव परम पिआरि ॥ (पन्ना १३९१)

नम्रतापूर्वक प्रभु के प्रेम में मग्न रहना श्री गुरु अंगद देव जी का स्वभाव था। वे साधक, सिध तथा सज्जन पुरुषों के मार्गदर्शक थे। जिस प्रकार कमल जल में निर्लिप्त रहता है, वे भी सामाजिक परिवेश में रहकर राग-द्वेष से रहित थे। श्री गुरु अंगद देव जी का गुरगद्दी का समय (१५३९-१५५२) भारत में राजनीतिक अस्थिरता का समय था। उनकी कीर्ति से प्रभावित होकर हुमायूं गुरु जी से आशीर्वाद लेने आया। गुरु जी ने उसे विनम्रता का उपदेश दिया है।

कीर्ति सम्बंधी चार सवैयों के बाद तीन छप्पय छंदों में गुरमति विचारधारा के संदर्भ में राजयोग की व्याख्या की गई है। संसार के विकारों के वन में सिंघ की भांति श्री गुरु अंगद देव जी निर्भय होकर राजयोग का पालन करते हैं। विकार को दूर करना तथा लोभ और मोह का नियंत्रण साधना का आधार है, जिससे आतम-रस संग्रह होगा :

आत्म रत संग्रहण कहण अंम्रित कल ढालण ॥
(पन्ना १३९१)

द्वितीय छप्पय छंद में आत्मिक रस "सत और संतोष" को गुरु के उपदेश से प्राप्त करने का वर्णन है। गुरमति विचार के अनुसार राजयोग के आदर्श आचरण का स्वरूप बोधगम्य कराया गया है। सत और संतोष को सहजता और विनम्रता से दैवीय रूप दिया जाना चाहिए, कर्म आत्म-प्रेरित और शुभ होने चाहिएं, मधुर बाणी से सभी प्राणियों के हृदय आहलादित करने चाहिएं।

भट्ट कल सहार ने श्री गुरु अंगद देव जी को आत्मिक जीवन का ज्योतिस्वरूप बताया है। तीसरे छप्पय छंद में राजयोग की सहज समाधि की अवस्था का वर्णन है। श्री गुरु नानक देव जी की गंभीरता से श्री गुरु अंगद देव जी को प्रभु के दरबार में पहचान मिल गई है :

मनि बिसासु पाइओ गहरि गहु हदरथि दीओ ॥
(पन्ना १३९२)

श्री गुरु अंगद देव जी की कीर्ति तथा आध्यात्मिक जीवन के स्वरूप (राजयोग) के अंकन के बाद भट्ट कल सहार उनके दर्शन की झांकी अंतिम तीन छंदों में देते हैं। श्री गुरु अंगद देव जी का दर्शन नाम से साक्षात्कार है। नाम के रंग में लीन गुरु के दर्शन से अठसठ तीर्थों के स्नान का रहस्य ज्ञात होता है। गुरु का दर्शन सत्यस्वरूप प्रभु से साक्षात्कार है। सत्य से अद्वैत गुरु के जीवन की झांकी हमारे जीवन को सत्य के प्रवेश से सार्थक कराती है: *"सचु जनमु परवाणु ॥"* गुरु का दर्शन सभी निधियों का स्रोत है। शबद-रूप में गुरु से जीवन-मुक्त अवस्था में सभी भयों के मूल जन्म-मरण के दुख का नाश हो जाता है :

दरसनि परसिऐ गुरू कै जनम मरण दुखु जाइ ॥
(पन्ना १३९२)

सेवा और आत्मिक गुणों के आधार पर पैतृक परंपरा से हटकर गुरगद्दी पर आसीन किया जाना श्री गुरु अंगद देव जी के लिए गुरु-कृपा का वरदान था। भट्ट कल सहार के अतिरिक्त श्री गुरु अंगद देव जी की प्रशस्ति में राग रामकली में भाई राय बलवंड जी-भाई सत्ता जी तथा भाई गुरदास जी ने अपनी वारों में श्री गुरु अंगद देव जी की प्रशस्ति में इसका विशेष उल्लेख किया है।

पंजाब का जीवन गुरुओं के द्वारा दिये गये नाम से जिंदा है (पंजाब जीउंदा गुरां दे नाम 'ते)। श्री गुरु अंगद देव जी गुरु-परंपरा के प्रकाश की द्वितीय सशक्त कड़ी हैं। उनका यश-गायन भट्ट कल सहार ने निष्ठापूर्वक किया है। गुरु नानक साहिब का स्पर्श पाकर श्री गुरु अंगद देव जी मानवता के पथ-प्रदर्शक बने।



भाई गुरदास जी की वारों में श्री गुरु अंगद देव जी का स्वरूप

*-स. गुरबखश सिंघ पिआसा**

भाई गुरदास जी ने सिक्ख गुरु-प्रणाली की ऐसी सारगर्भित व्याख्या की है और जो इस भ्रांति का निवारण करने में पूरी तरह सक्षम है कि श्री गुरु नानक देव जी से लेकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी, देह-रूप में ही भिन्न नहीं थे वरन विचारों के धरातल पर भी भिन्न थे। जो निःसंदेह पूर्वाग्रह के तहत अथवा सुनी-सुनाई बातों पर ही निर्भर है। इसी प्रवाह में, सत्य से आंखें चुरा कर प्रचारित और प्रसारित इतिहास का मुंह चिढ़ाती अभिव्यक्ति कि "गुरु नानक देव जी ने हिंदू धर्म और इस्लाम से अच्छे तत्व लेकर सिक्ख धर्म प्रचलित किया" किसी तरह भी मानने योग्य नहीं है। निम्नांकित कथन के पीछे अच्छी भावना नहीं दिखती कि :

The religion got its start in the earth 16th century, when Guru Nanak wanted to take the best of Hinduism and Islam and form a united Religion.

This is the part of text, under heading 'SIKHISM- A Reform religion on page no. 100 to 101. in the Pocket book, Mankind Search for GOD. Ref. : The Encyclopedia of world faiths. page 269

यथार्थ में देह ही बदलती रही, परन्तु आध्यात्मिक ज्योति गुरु नानक साहिब की विद्यमान रही। ईश्वरीय आदेशानुसार सत्य की पुनः स्थापना हेतु एक पूर्ण मनुष्य/संत-सिपाही के घढ़ने के लिए दीर्घ योजना के तहत दस जामे (शरीर) बदलने पड़े।

भाई लहिणा जी की आंतरिक काया/अवस्था पलट कर श्री गुरु नानक देव जी ने अपना स्वरूप प्रदान किया अर्थात् ईश्वरीय रंग में भाई लहिणा जी की आत्मा को भी रंग दिया।

यहां कुछ शब्द 'मूर्धन्य कवि शिरोमणि' भाई गुरदास जी के बारे में अप्रासंगिक न होंगे। भाई गुरदास जी तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी के छोटे भ्राता भाई दातार चंद के सपुत्र थे। आपका जन्म गोइंदवाल, जिला तरनतारन में १४५६ ई में हुआ। आप अरबी, फारसी, संस्कृत, हिंदी, ब्रज भाषा एवं पंजाबी के उच्च कोटि के विद्वान-कवि थे। आपने ४० वारें (पंजाबी) और ५५६ कबित्त और सवैयों की रचना ब्रज भाषा में की है। आपने गुरबाणी एवं गुरमति के गूढ़ बिंदुओं की ऐसी सारगर्भित व्याख्या की है कि आपकी रचनाओं को 'गुरबाणी की कुंजी' कहा जाता है। भाई जी श्री गुरु नानक देव जी से लेकर छठे गुरु श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के संक्षिप्त जीवन-सार को व्याख्यात करने वाले प्रथम व्याख्याकार हैं। इनकी विद्वता का अनुमान इस बात से लग सकता है कि जब श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब के प्रथम संकलन का संपादन किया तो लेखन के लिए लिखारी के रूप में भाई गुरदास जी को सेवाएं सौंपी गयीं।

भाई गुरदास जी की वार १ की पउड़ी, नं. ४५ में पंक्ति सिक्ख धर्म से जो विलक्षणता

**२२, प्रभु पार्क सोसायटी, ओल्ड छानी रोड, वडोदरा-३९०००२*

दर्शाती है, वो है:

थापिआ लहिणा जींवदे गुरिआई सिरि छत्रु फिराइआ ॥

अर्थात् अपने जीवन-काल में ही श्री गुरु नानक देव जी ने अपने शिष्य भाई लहिणा जी के शीश पर गुरु-पद का छत्र झुला दिया। इस प्रकार एक नयी परिपाटी की नींव रखी। प्रथमत: 'देह' 'गुरु' नहीं, 'शबद' 'गुरु' है। द्वितीय, गुरु-पद विरासत में मिलने वाली सम्पदा जैसी कोई वस्तु नहीं। इसका चयन योग्यता के अनुसार हो। तभी तो अपने दोनों पुत्रों को कसौटी पर खरे न उतरने के कारण उन्हें दरकिनार करते हुए अपने शिष्य भाई लहिणा जी को प्रदान की और यही कसौटी श्री गुरु अंगद देव जी ने भी अपनाई। उन्होंने सपुत्रों के स्थान पर अपने शिष्य (गुरु) अमरदास जी को अधिकारी पाया एवं इसी दृष्टिकोण के अंतर्गत श्री गुरु अमरदास जी ने अपने आध्यात्मिक अधिकारी (उत्तराधिकारी) का चयन किया। यह सिलसिला (गुणों को वरीयता देने) आधार-बिन्दु बना। पूरी पउड़ी इस प्रकार है :

जारति करि मुलतान दी फिरि करतारिपुरे नो आइआ।
चढ़े सवाई दिहि दिही कलजुगि नानक नामु धिआइआ।
विणु नावै होरु मंगणा सिरि दुखां दे दुख सबाइआ।
मारिआ सिका जगति विचि नानक निरमल पंथ चलाइआ।
थापिआ लहिणा जींवदे गुरिआई सिरि छत्रु फिराइआ।
जोती जोति मिलाइ कै सतिगुर नानकि रूपु वटाइआ।
लखि न कोई सकई आचरजे आचरजु दिखाइआ।
काइआ पलटि सरूपु बणाइआ ॥४५॥

अर्थात् श्री गुरु नानक देव जी, मुलतान शहर की यात्रा करते हुए अपने नगर करतारपुर गए जिसे उन्होंने स्वयं बसाया था और सृष्टिकर्ता के नाम पर उसे 'करतारपुर' का नाम दिया था। उपरोक्त दोनों शहर अब पाकिस्तान में स्थित हैं।

कलियुग के अंदर ईश्वर के नाम का प्रचार करने से दसों दिशाओं में उनकी कीर्ति फैल गयी कि ईश्वर के नाम के बिना कुछ और मांगना अपने दुखों में बढ़ोत्तरी करना है। श्री गुरु नानक देव जी ने निर्मल पंथ द्वारा संसार में छाप लगा दी।

अपने शिष्य भाई लहिणा जी को अपने जीवन-काल में गुरु-पद प्रदान कर दिया अर्थात् गुरुत्व का छत्र झुला दिया। ज्योति से ज्योति मिला कर श्री गुरु नानक देव जी ने भाई लहिणा जी का आंतरिक रूप बदल दिया। ऐसा आश्चर्य-भरा, कल्पनातीत कृत्य दिखाया जिसे व्यक्त करना संभव नहीं अर्थात् पूरी मनोवस्था बदल कर अपना स्वरूप दे दिया।

आइए, इस पूरी प्रक्रिया का अवलोकन करें कि किस प्रकार भाई लहिणा जी जैसे साधारण व्यक्ति, गुरु-पद जैसे उच्चतम शिखर पर पहुंचे।

भाई लहिणा जी का जन्म भाई फेरूमल जी के गृह में माता दइआ कौर जी की पावन कोख से ३१ मार्च, १५०४ ई को मत्ते दी सरां, जिला मुक्तसर (पंजाब) में हुआ। जब मुगलों और बिलोचों ने मत्ते दी सरां को बर्बाद कर दिया तो आपके पिता परिवार सहित 'खडूर' (जिला अमृतसर) आ गये। आपके पिता जी एक व्यापारी थे। इनकी माता जी धार्मिक प्रवृत्ति की थीं, जिनके प्रभाव में आप दुर्गा के भक्त बन गये। भाई लहिणा जी प्रति वर्ष देवी के भक्तों को साथ लेकर देवी के मंदिर ज्वालामुखी जाया

करते थे और सनातनी विचारों से ओत-प्रोत एक सामान्य जीवन जीने वाले व्यक्ति थे।

आपकी पत्नी का नाम माता खीवी जी था। आपके दो सपुत्र (बाबा दासू जी और बाबा दातू जी) और दो सपुत्रियां (बीबी अमरो जी और बीबी अनोखी जी) थीं।

संयोगवश एक दिन भाई लहिणा जी ने खडूर में रहते एक गुरसिक्ख भाई जोध जी से श्री गुरु नानक देव जी की बाणी का पाठ सुना तो गुरु जी के दर्शन की उत्कंठा जाग उठी। अगली बार जब वे श्रद्धालुओं की टोली के साथ देवी-दर्शन को गये तो रास्ते में श्री गुरु नानक देव जी के नगर करतारपुर में रुक गये। गुरु जी के साथ प्रथम मिलाप से ही वे इतने प्रभावित हो गये कि वहीं के होकर रह गये। यह १५३१ ई का वर्ष था। इस प्रकार आठ वर्ष बीत गये। पूरे मन से गुरु-शिक्षाओं को आत्मसात किया। आज्ञाकारिता और निष्काम सेवा के प्रतीक बन गये। कड़ी से कड़ी परीक्षाओं से गुजरे, जहां गुरु-पुत्रों ने आनाकानी की। वे बिना किसी हील-हुज्जत के आज्ञा-पालन में लग गये, चाहे कीचड़ में से कटोरा निकालने की बात हो अथवा सर्दियों की बरसाती रात में गिरी दीवार की मरम्मत करने की बात हो या रेशमी वस्त्रों की परवाह न करते हुए कीचड़ से भीगी घास की गांठों को उठाने की बात हो। रहस्यमयी आदेश होते रहे और भाई लहिणा जी पूरे तन-मन से आज्ञा-पालन में जुट जाते। जैसे कि रेशमी कपड़ों के कीचड़ से लथ-पथ हो जाने पर जब गुरु-सुपत्नी माता सुलक्खणी जी ने गिला किया तो गुरु जी ने मुस्कराकर उत्तर दिया कि "यह कीचड़ नहीं, अंबर से टपका केसर है, जो (भाई) लहिणे को भाग्य से प्राप्त हुआ है। इनके कांधों पर लदा बोझ इन्हें सिखायेगा कि मानवता के कल्याण के दायित्व के बोझ के सामने यह बोझ कुछ भी नहीं है।"

भाई गुरदास जी ने 'गुरू अंगद प्रकाश' के शीर्षक से *"बाबाणै घरि चानणु लहणा"* द्वारा ऐसे व्यक्त किया है:

पारसु होआ पारसहु सतिगुर परचे सतिगुरु कहणा।
चंदनु होआ चंदनहु गुर उपदेस रहत विचि रहणा।
जोति समाणी जोति विचि गुरमति सुखु दुरमति दुख दहणा।
अचरज नो अचरजु मिलै विसमादै विसमादु समहणा।
अपिउ पीअण निझरु झरणु अजरु जरणु असहीअणु सहणा।
सचु समाणा सचु विचि गाडी राहु साधसंगि वहणा।
बाबाणै घरि चानणु लहणा ॥ (वार २४:६)

भाई लहिणा जी सच्चे सतिगुरु गुरु नानक साहिब, जो स्वयं पारस थे, द्वारा पारस हो गये। (सच्चे गुरु की यही पहचान है कि वह अपने शिष्यों को अपना समरूप प्रदान करने में समक्ष होता है अर्थात् स्वयं तो 'पारस' होता ही है, अपने शिष्यों को भी 'पारस' बना देता है।)

सच्चे गुरु के रंग में रंग कर भाई लहिणा जी स्वयं 'गुरु' कहलाए। गुरु-उपदेशों का पालन करते हुए 'चंदन से चंदन' हो गये, ज्योति में ज्योति मिल गयी और गुरमति से उपजे सुखों ने दुरमति के दुखों को जला दिया। इस तरह अचरजों (आश्चर्यों) का मिलन हुआ और विस्माद में समा गये। अमृत के निरंतर झरते झरनों से अमृत पीकर, हर प्रकार के असह कष्टों को सहन किया, साधसंग की संगत के गाडी राह पर चलते हुए सत्यमय हो गये। सारांश यह कि बाबे (गुरु नानक साहिब) के घर भाई लहिणा जी रोशन हुए।

ऐसे हुआ श्री गुरु अंगद देव जी का आगमन। श्री गुरु नानक देव जी ने अपने अंग से भाई लहिणा जी को श्री गुरु अंगद देव जी किया। गुरु और शिष्य में ऐसा प्रेम पनपा कि गुरु चेला और चेला गुरु हो गया। यह अद्वितीय प्रथा केवल नानक निर्मल पंथ/खालसा पंथ में ही देखने को मिलती है कि गुरु शिष्य और शिष्य गुरु बन गया अर्थात् गुरु और शिष्य में कोई भिन्नता न रही, जैसे वृक्ष से फल और फल से वृक्ष, पिता से पुत्र एवं पुत्र से पिता तृप्त हो गया। निर्गुणस्वरूप और सगुणस्वरूप जो अलख्य है, को शबद की सुरति से जोड़कर संभव बना दिया। (इस प्रकार) बाबे (गुरु नानक साहिब) के रूप में श्री गुरु अंगद देव जी आये। मूल रूप में पूरी पउड़ी इस प्रकार है:

अंगहु अंगु ओपाइओन गंगहु जाणु तरंगु उठाइआ।
गहिर गंभीरु गहीरु गुणु गुरमुखि गुरु गोबिंदु सदाइआ।
दुख सुख दाता देणिहारु दुख सुख समसरि लेपु न लाइआ।
गुर चेला चेला गुरू गुरु चेले परचा परचाइआ।
बिरखहु फलु फल ते बिरखु पिउ पुतहु पुतु पिउ पतीआइआ।
पारब्रहमु पूरनु ब्रहमु सबदु सुरति लिव अलख लखाइआ।
बाबाणे गुर अंगदु आइआ ॥५॥ *(वार २४)*
--गुर अंगदु गुरसिखु बबाणे आइआ ॥
(वार २०:१)

अर्थात् (गुरु) अंगद, (गुरु नानक साहिब) बाबे की पीढ़ी (खानदान/कुटुंब) में आ गया अर्थात् गुरुओं की परंपरा में गिना जाने लगा।

इसी भाव को वार २४, पउड़ी ७ की (केंद्रीय) अंतिम पंक्ति में ऐसे व्यक्त किया है:

"पुतु सपुतु बबाणे लहणा ॥" (गुरु) अंगद साहिब जैसे सपुत्र की छवि को इन शब्दों में अभिव्यक्त किया है:

गुरु अंगदु गुरु अंगु ते अंम्रित बिरखु अंम्रित फल फलिआ।
जोती जोति जगाईअनु दीवे ते जिउ दीवा बलिआ।
हीरै हीरा बेधिआ छलु करि अछुली अछलु छलिआ।
कोइ बुझि न हंघई पाणी अंदरि पाणी रलिआ।
सचा सचु सुहावड़ा सचु अंदरि सचु सचहु ढलिआ।
निहचलु सचा तखतु है अबिचल राज न हलै हलिआ।
सच सबदु गुरि सउपिआ सच टकसालहु सिका चलिआ।
सिध नाथ अवतार सभ हथ जोड़ि कै होए खलिआ।
सचा हुकमु सु अटलु न टलिआ ॥ (वार २४:८)

श्री गुरु नानक देव जी के अंग से श्री गुरु अंगद देव जी का निर्माण हुआ, जैसे अमृत-वृक्ष से अमृत-फल उत्पन्न हुआ, ज्योति से ज्योति जगा दी गयी; जैसे दीपक से दीपक जला दिया जाता है। (शबद-रूपी) हीरे से (मन-रूपी) हीरा बेध दिया। जैसे कि अछल (श्री गुरु नानक देव जी) श्री गुरु अंगद देव जी को मोह लिया। इस रहस्य को कोई न जान सका। जल में जल मिल गया अर्थात् अभेद हो गये।

सत्य-स्वरूप और सत्य दोनों सुहा रहे हैं अर्थात् सत्य-स्वरूप श्री गुरु नानक देव जी से श्री गुरु अंगद देव जी सत्य में ढाले गये सत्य-स्वरूप हैं। सत्य का यह सिंहासन अडिग है और यह अचल राज किसी के हिलाने से भी नहीं हिल सकता।

श्री गुरु नानक देव जी ने सत्यरूपी

ईश्वरी-बाणी (शबद-बाणी) श्री गुरु अंगद देव जी को सौंप दी। (इस प्रकार) सत्य की टकसाल (टंक-शाल) से सत्यरूपी सिक्के (मुद्रा) के चलन का शुभारंभ हुआ। सिधों, नाथों, अवतारों-सी महान विभूतिओं ने नमन किया। (यह) सत्य का ईश्वरीय आदेश, अटल होने के कारण टल न सका।

उपरोक्त अद्भुत लीला (कृत्य) को देखकर सब आश्चर्यचकित रह गये। भाई गुरदास जी ने इसे इन मनोरम शब्दों में काव्य-रूप दिया है:

इकु गुरू इकु सिखु गुरमुखि जाणिआ।
गुर चेला गुर सिखु सचि समाणिआ।
सो सतिगुर सो सिखु सबदु वखाणिआ।
अचरज भूत भविख सचु सुहाणिआ।
लेखु अलेखु अलिखु माणु निमाणिआ।
समसरि अंम्रितु विखु न आवण जाणिआ।
नीसाणा होइ लिखु हद नीसाणिआ।
गुरसिखहु गुर सिखु होइ हैराणिआ।

(वार २२:१२)

एक 'गुरु' (श्री गुरु नानक देव जी) और एक सिक्ख (भाई लहिणा जी) को गुरमुखजन जानते हैं और अब 'गुरु' और 'चेला' सत्य में समा गये हैं।

वही 'गुरु' और वही 'सिक्ख' है, भिन्नता मात्र शब्दों द्वारा ही व्यक्त होती है। युगों-युगों का आश्चर्यपूर्ण सत्य शोभ रहा है। न लिखे जाने वाले लेख लिख कर निमाणे को माण दिया है। आवागमन से मुक्त, अमृत और विष के समान है। प्रकट होकर सत्य के अनुरूप प्रसिद्ध हो गये हैं। एक सिक्ख (शिष्य) से गुरु हो जाने की इस लीला को देखकर गुरसिक्ख हैरान हो रहे हैं।

यह शुभ दिन २ सितंबर, १५३९ ई का दिन था जब भाई लहिणा जी को गुरु-पद की बख्शिश हुई और 'गुरु अंगद देव' का नाम दिया गया तथा श्री गुरु नानक देव जी ने उन्हें अपने नगर खडूर जाने का आदेश दिया।

भरे मन से उन्होंने गुरु नानक साहिब के आदेश को शिरोधार्य करते हुए खडूर के लिए प्रस्थान किया। गुरु जी का विछोह मन को साल रहा था। कुछ दिनों के पश्चात ही अर्थात् २२ सितंबर, १५३९ ई को गुरु नानक साहिब परम-ज्योति में लीन हो गये तो श्री गुरु अंगद देव जी की उदासीनता और बढ़ गयी और वे एकांतवास में चले गये। इस तरह छ: महीने की अवधि बीत गयी। सिक्ख संगत परेशान हो गयी। तब कुछ प्रमुख गुरसिक्खों ने उन्हें खोज कर सिक्ख संगत की वेदना बताई और उन्हें संगत को दर्शन देकर मार्गदर्शन देने की विनय की। श्री गुरु अंगद देव जी ने श्री गुरु नानक देव जी के विरह को संबल बना कर गुरुत्व के दायित्व को संभाला। पुन: शबद-कीर्तन, प्रवचन आदि का प्रवाह चल पड़ा। लंगर-प्रथा सुव्यवस्थ हुई जिसमें गुरु सुपत्नी माता खीवी जी का योगदान उल्लेखनीय है।

सबसे पहले प्रमुख कार्य जो गुरु जी ने हाथ में लिया वो था श्री गुरु नानक देव जी की जीवन-गाथा लिखवाने का। यह सेवा प्रमुख गुरसिक्ख भाई पैड़ा (मोखा) को सौंपी गयी। द्वितीय, श्री गुरु नानक देव जी के समय प्रचलित अव्यवस्थ/अपूर्ण गुरमुखी लिपि को व्यवस्थ कर आधुनिक रूप प्रदान किया और उसके प्रचार-प्रसार के लिए पाठशालाएं आरंभ करवाईं, जिनमें एक पाठशाला में वे स्वयं बच्चों को गुरमुखी सिखाते थे।

चेतन मन के साथ मनुष्य का तन भी स्वस्थ होना चाहिए। इसको ध्यान में रखते हुए आप जी ने मल-अखाड़ों की व्यवस्था की,

जिसमें एक मल-अखाड़ा 'खडूर' में उनकी देख-रेख में चलता था। (स्मृति-स्वरूप एक भव्य गुरुद्वारा मल-अखाड़ा के नाम से आज भी खडूर साहिब में विद्यमान है।) क्योंकि उनके सामने पूर्ण मनुष्य गढ़ने का मिशन था।

आपने श्री गुरु नानक देव जी की संगत में आठ वर्षों तक गुरु एवं गुरु-संगत की सेवा के साथ उनकी अलाही बाणी एवं आदेशों का गंभीर अध्ययन ही नहीं किया था वरन् उन्हें आत्मसात अर्थात् आचरण में भी ढाला था। इसकी उन्होंने स्वयं एवं प्रमुख गुरसिक्खों द्वारा प्रचार की व्यवस्था की।

श्री गुरु नानक देव जी ने बाणी के सागर में गहरे पैठ कर, रहस्यानुभूतियों में विचरते हुए स्वयं भी बाणी की रचना की, जो मात्र श्लोकों में है और उनकी गिनती ६३ है। इनमें अधिकांश श्री गुरु नानक देव जी की बाणी में वर्णित विचार-बिंदुओं की व्याख्या ही करते हैं। शेष में ईश्वर-भक्ति, गुरु-भक्ति, गुरु-सेवा, सदाचारता एवं सत्याचरण आदि का उपदेश देते हैं।

यह एक सर्वमान्य तथ्य है कि सत्यवादी के लिए निर्भीक होना अति आवश्यक है अन्यथा सत्य के पथ पर चलना संभव ही नहीं। सत्य के आग्रही होने के कारण वे श्री गुरु नानक देव जी की तरह अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने वाले, निर्भयता की प्रतिमूर्ति थे। जैसे श्री गुरु नानक देव जी ने मुगल बादशाह बाबर के अत्याचारों को देखकर अपनी बाणी में बाबर की सेना को 'पाप की बारात' की संज्ञा दी और बाबर को उसके मुंह पर 'जाबर' कहा था कुछ वैसा ही प्रकरण श्री गुरु अंगद देव जी के जीवन-काल में भी घटा था और उन्होंने हुमायूं बादशाह को खरी-खरी सुनाई थी। हुआ यूं कि जब हुमायूं शेरशाह सूरी से पराजित होकर, भटकते हुए आशीर्वाद लेने की गर्ज से खडूर साहिब आया तो मुलाकात में कुछ विलंब हो जाने के कारण हुमायूं बादशाही-क्रोध में आग-बबूला हो उठा और उसका हाथ तलवार की मूंठ पर जा पहुंचा। सहज रूप में मुस्कराते हुए गुरु जी ने व्यंग्योक्ति की कि "शेरशाह सूरी के साथ युद्ध में तुम्हारी तलवार कहां चली गयी थी? अब फकीरों पर अपनी शूरवीरता दिखाना चाहते हो?" फिर क्या था, हुमायूं पानी-पानी हो गया और उसने लज्जित होकर क्षमा मांगी।

इस प्रकार श्री गुरु अंगद देव जी श्री गुरु नानक देव जी के चलाए निर्मल पंथ के मिशन को आगे बढ़ाते हुए २९ मार्च, १५५२ ई को ज्योति-जोत समा गये। इससे पूर्व अपने आध्यात्मिक उत्तराधिकारी के रूप में अपने दोनों पुत्रों को गुरगद्दी के अनुपयुक्त पाकर अपने परम शिष्य (गुरु) अमरदास जी को गुरगद्दी पर शोभायमान कर गये, जिन्हें उन्होंने पूरे बारह वर्ष हरेक परीक्षा में सफल पाया था। धरोहर के रूप में 'नानक' छाप से ही रचित अपनी बाणी के साथ श्री गुरु नानक देव जी की रचित बाणी, जो उन्हें गुरु-पद पर पदासीन करते हुए, सौंपी गयी थी, सौंप दी।

श्री गुरु अंगद देव जी के समय जो मुख्य गुरसिक्ख/प्रचारक थे, उनकी संक्षिप्त सूची के बारे में भाई गुरदास जी ने वार ११ की १५वीं पउड़ी में इस प्रकार उल्लेख किया है:

पारो जुलका परमहंसु पूरे सतिगुर किरपा धारी।
मलूसाही सूरमा वडा भगतु भाई केदारी।
दीपा देऊ नराइणदासु बूले दे जाईऐ बलिहारी।
लाल सु लालू बुधिवान दुरगा जीवद परउपकारी।
जगा धरणी जाणीऐ संसारू नाले निरंकारी।
खानू माईआ पिउ पुतु है गुण गाहक गोविंद भंडारी।
जोधु रसोईआ देवता गुर सेवा करि दुतरु तारी।

पूरे सतिगुर पैज सवारी ॥ *(वार ११:१५)*

अंत में श्री गुरु अंगद देव जी रचित श्लोकों में से दो पद देने का लोभ संवरण नहीं कर पा रहा हूं :

सलामु जबाबु दोवै करे मुंढहु घुथा जाइ ॥
नानक दोवै कूड़ीआ थाइ न काई पाइ ॥
(पन्ना ४७४)

अर्थात् सेवक होकर सलाम भी करता हो और जवाब भी चाहे तो सब व्यर्थ है।

भै के चरण कर भाव के लोइण सुरति करेइ ॥
नानकु कहै सिआणीए इव कंत मिलावा होइ ॥
(पन्ना १३९)

भाव कि गुरु जी प्रभु/प्रीतम के मिलाप की युक्ति के लिए, भय के चरण, कर (हाथ) कर्म में भाव और नयनों में उस प्रभु की याद-ध्यान/लिव बसा लो, यह प्रियतम से मिलने की युक्ति है।



'महिमा प्रकाश' कृत श्री सरूप दास भल्ला में . . . *(पृष्ठ ५० का शेष)*

सरदार आया और उसने गुरु जी से विनती की, "सच्चे पातशाह! मैनूं मिरगी रोग है। इह ठीक नहीं होंदी। किरपा करके इसे ठीक कर देवो जी।"

श्री गुरु अंगद देव जी ने कहा, "तूं मदपान (शराब) करदा हैं। तू मद (शराब) छोड़, असीं तेरी मिरगी को खूंटे के साथ बांधेंगे। जब मद छोड़ेंगा तो रोग नहीं आएगा। अगर मदपान कीता तो रोग फिर आएगा।" बहुत समय उसने शराब नहीं पी और वो आरोग रहा। एक दिन उसके मन में आ गई, जो मद पीवै। उसने मद पीकर ऊंचे मकान पर चढ़ कर ऊंची आवाज में पुकारा, "मैंने शराब पी ली है।" 'महिमा प्रकाश' की साखी ७ के अनुसार गुरु जी ने कहा, "तब वो ऊंचे स्थान से गिर पड़ा, उसको मिरगी का दौरा पड़ गया। चकनाचूर होए कर मर गया।" गुरु-वचन में बड़ी ताकत है। गुरु जी की कृपा से पुराने रोग दूर होते हैं। अगर कोई गुरु-वचन को चैलेंज करता है तो उसको प्रकृति की मार पड़ जाती है।

'महिमा प्रकाश' की साखी ८ के अनुसार जब हुमायूं बादशाह शेरशाह सूरी से हार खाकर गुरु-दरबार में सहायता के लिए आया तो उस समय श्री गुरु अंगद देव जी छोटे बच्चों को गुरमुखी पढ़ाने में व्यस्त थे। हुमायूं दो घड़ी खड़ा रहा। गुरु जी ने उसकी ओर देखा तक नहीं। हुमायूं के मन में अहंकार आ गया। उसने तलवार पर हाथ रखा। 'महिमा प्रकाश' के अनुसार--"तब साहिब ने देखा, हाथ तलवार से बझ (जुड़) गए और खड़े के खड़े ही रहे . . .। गुरु साहिब ने कहा, भाई मुगला! तलवार शेरशाह पर कड्ढनी (निकालनी) थी कि असां उप्पर? तब बादशाह हुमायूं ने भूल की छमा मांगी।"

'महिमा प्रकाश' कृत सरूप दास भल्ला अट्ठारहवीं सदी की महत्वपूर्ण पुस्तक है, जिसमें श्री गुरु अंगद देव जी का जीवन और व्यक्तित्व श्री गुरु नानक देव जी वाला ही दर्शाया गया है। श्री गुरु नानक देव जी और श्री गुरु अंगद देव जी की ज्योति-जुगति एक है। इसमें रंचक मात्र भी भिन्न-भेद नहीं है। नाम-सिमरन, गुरबाणी और गुरु के लंगर के अटूट भंडारे निरंतर बरतते हैं।



भाई नंद लाल जी के शब्दों में श्री गुरु अंगद देव जी की प्रशंसा

*-जनाब हुसन-उल-चराग**

जिन सज्जनों ने मेरी लिखत "भाई नंद लाल जी का अनंदपुर साहिब तक का जीवन सफर-- गुरबाणी चिंतन तथा गुरु नानक महिमा" नवंबर २०१० के 'गुरमति ज्ञान' में प्रकाशित हुई अगर पढ़ी है तो उन्हें मेरी आगे की लिखतें, जो अब हर मास श्री गुरु अंगद देव जी से लेकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तक गुरु-महिमा के रूप में लिखी जा रही हैं, इन्हें समझना आसान होगा।

भाई नंद लाल जी की आठवीं पुस्तक "जोति-बिगास", जो एक मात्र उनके द्वारा हिंदी में लिखी मानी जाती है, उसकी शुरुआत यूं है:

वाहु वाहु गुर पतित उधारनं
वाहु वाहु गुर संत उबारनं ॥१॥ . . .
नानक सो अंगद गुर देवना
सो अमर दास हरि सेवना ॥२७॥ (जोति बिगास)

बोलने और लिखने में १ से १० तक गुरु साहिबान को 'पातशाही' शब्द से संबोधित किया जाता है, मगर श्री गुरु ग्रंथ साहिब में इसको 'महला' का दर्जा देकर लिखा गया है। शब्द 'पातशाही' को भाई नंद लाल जी ने 'सलतनत' शब्द से सम्बोधित किया है, जिसका वर्णन मैं पहले की लिखत में कर चुका हूं। श्री गुरु अंगद देव जी की महिमा बयान करते हुए भाई नंद लाल जी कहते हैं कि जो ज्योति गुरु नानक साहिब हैं वही (सोई) ज्योति गुरु अंगद साहिब हुए।

सलतनते दोइमश अव्वल मुरीदे,
साजद व आखर मुरशिदे मसजूदश।

श्री गुरु अंगद देव जी पहले पातशाही, अव्वल के मुरीद (सिक्ख) हुए और तत्पश्चात् श्री गुरु अंगद देव भये। जो सच्चाई और हक्को-ईमान की ज्योति सलतनते-दोयम श्री गुरु अंगद देव जी को दी वह अब श्री गुरु अंगद देव जी के वजूद से दिन-ब-दिन बढ़ती चली गई और उस ज्योति को गुरु अंगद साहिब ने संभाल कर आगे चलाया। जैसे कि गुरु नानक साहिब के अपने परिवार में से ही पैदा हुई उदासी लहर के प्रभाव से बचा कर उनके द्वारा चलाए मार्ग को सलामत व बरकरार रखना यह दूसरी पातशाही का महत्वपूर्ण कार्य था, जो उन्होंने बाखूब किया।

दर मअनी यके दर सूरत दो मशअले जां अफरोज।

बेशक गुरु नानक साहिब और गुरु अंगद साहिब दो हस्तियों व दो सूरतों में नजर आते हैं मगर वे अंधकार को दूर करने वाली एक ही ज्योति का स्वरूप हैं :

वा दर हकीकत अहद वा बजाहर दो
शुअलाए मा सिवा-अलहक्क सोज।

जैसे अग्नि में सब कुछ जल जाता है मगर सत और सत्य बरकरार रहते हैं उसी तरह गुरु-संगत से पाप-पाखंड सब कुछ मिट जाता है और जो असत्य होता है वह नष्ट हो जाता है, शेष केवल जीवन का सत्य और वाहिगुरु का नाम ही कायम रहता है।

आगे भाई नंद लाल जी गुरु जी के नाम में आये अक्षरों का भेद बताते हैं। पातशाही दूसरी के नाम का पहला अक्षर "अ" है, मगर जैसे कि भाई साहिब की रचना फारसी जुबां में है और उसमें "अ" को "अलफ" लिखा जाता है।

**१४-सी, रेस कोर्स रोड, श्री अमृतसर। मो: ९८१५१-८८८१०*

इस तरह श्री गुरु अंगद देव जी के नाम में आये पहले लफ्ज "अलफ" को यूं बयान किया है:
अवलीन अलफे नामे पाकश आहता, गीरे फैजो फुजला
बर अंदक व कसीर वा हर अमीर व हर फकीर।

"अलफ", जिसे इसलाम में "अलफ अल्ला" का नाम और किसी भी काम की शुरुआत से पहले इसका नाम लेकर शुरू किया जाता है।
वा शमीमे नून हकीकत मशदूनश।

फारसी में लफ्ज "नून", जिसे हिंदी-पंजाबी में "न" लिखा जाता है, लफ्ज "न" को फारसी के शब्द "नकीर", जिसका अर्थ खजूर की गुठली में उसके आर-पार तक एक गहरी लकीर होती है और "कितमीर" का मतलब होता है। "नकीर" यानि कि खजूर की गुठली की लकीर की गहराई में पड़ा एक धागे के मानिद रेशा। गुरु जी के नाम से जोड़कर लफ्ज "नून" (न) को बतौर उदाहरण के इस्तेमाल करते हुए इस बात को उजागर किया गया है कि बारीक से बारीक, गहरी से गहरी और बड़ी से बड़ी (कबीर) हर हरकत वा हकीकत उन्हें मालूम थी।

फारसी का "गाफ", हिंदी-पंजाबी में "ग" लिखा जाता है जिससे भाई नंद लाल जी श्री गुरु अंगद देव जी को सदा बने रहने वाले और मनोकामना को पूरा करने वाले बताते हैं।

गुरु जी के नाम का आखिरी अक्षर "दाल' (द) है। लफ्ज "दाल" की शोहरत बयान करते हुए भाई साहिब लिखते हैं :
दाले आखरश दवाए दरदो आलम,
वा बरतर अज बेशो कम।

वाहिगुरु (अल्लाह-पाक) का नाम व सहारा यानि कि वाहिगुरु का नाम सभी दुख-दर्द की दवा है और "गुरु-नाम" की दवा सबके ऊपर की है और बाकी सब (बिशो कम) इस नाम की दवाई से नीचे है। वाहिगुरु सत्य है यानि कि अकाल पुरख सत्य है।
गुरु अंगद आं मुरशिदुंल आलमी
जि फजले अहद रहिमतुल मुजनबीं।

गुरु अंगद साहिब संसार (आलम) के वो गुरु हैं जो वाहिगुरु की कृपा से सभी गुनहगारों के लिये रहम (रहिमतुल) करने वाले हैं।
दो आलम चिह, बाशद हजारां जहां
तुफैलि करमहाइ ओ कामारां ॥५६॥ (गंज नामा)

दो जहां (जहान), लोक-परलोक तो क्या चीज हैं, उनसे तो पूरे संसार यानि हमारी दुनिया के सभी जीव मुरादें हासिल कर रहे हैं।
वजूदश हमा फजलो फैजि करीम
जि हक आमदो हम बहक्क मुसतकीम ॥५७॥

श्री गुरु अंगद देव जी की हस्ती (वजूदश) खुदाई वजूद है जो वाहिगुरु की मिहर से हमारे संसार में आये हैं और उसकी रजा पर कायम (मुसतकीम) हैं।
हमा आशकारो निहां जाहिरश
बतूनो इयां जुमलगी बाहिरश ॥५८॥

गुरु जी संसार के सभी दृष्ट तथा अदृष्ट भेदों को जानते हैं और उनसे किसी का कोई भेद छुपा नहीं।
चू वस्साफि जाति हक्क आमदा
वजूदश जि कुदसी वरक आमदा ॥५९॥

जब विश्वास करने वाले जाते-हक्क यानि कि एक विश्वास में यकीन रखने लगें तो ऐसे लोगों में कोई जाति-फर्क नहीं रहता। ऐसे लोग एक जाति, एक जमात, एक विचारधारा के हो जाते हैं। समाज में पूरे लोगों की एक जाति केवल गुरु जी की बाणी ही कर सकती है।
जि वसफश जबानि दो आलम कसीर
बवद तंग पेशश फजाइ जमीर ॥६०॥

ऐसे गुरु की सिफ्त-सलाह (उपमा) दोनों जहां--लोक-परलोक (दो आलम) के लोगों की

(शेष पृष्ठ ७३ पर)

भाई नंद लाल जी के 'गंज नामा' में श्री गुरु अंगद देव जी

*-स. जगजीत सिंघ**

भाई नंद लाल जी गोया की रचनाओं का संग्रह 'पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला' द्वारा 'भाई नंद लाल ग्रंथावली' नामक पुस्तक रूप में प्रकाशित किया है। इस पुस्तक के संपादक डॉ. गंडा सिंघ हैं। डॉ. गंडा सिंघ पुस्तक के आरंभ में दिए 'आरंभिक शब्द' में लिखते हैं कि भाई नंद लाल जी की फारसी रचनाओं का पंजाबी अनुवाद उनके निवेदन पर डॉ. जीत सिंघ सीतल ने तैयार किया और प्रो. कुलवंत सिंघ तथा प्रो. भगत सिंघ ने उन्हें इस कार्य में सहयोग दिया। १२५/- रुपए कीमत वाली उक्त पुस्तक का तीसरा संस्करण सन् २००० में पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला द्वारा प्रकाशित किया गया। इस पुस्तक में दर्ज 'गंज नामा' शीर्षक अधीन रचना में भाई नंद लाल जी द्वारा दस गुरु साहिबान की महिमा का गुणगान करते हुए शेयरों की रचना की गई है। "जोति विगास" नामक रचना में भाई नंद लाल जी का कथन है कि हजारों शहंशाह गुरु नानक साहिब के हजूरी गुलाम हैं। हजारों सूरज-चंद्रमा गुरु नानक साहिब को झुक-झुक कर सलाम करते हैं। गुरु नानक साहिब से लेकर दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तक दसों गुरु साहिबान को भाई नंद लाल जी ने एक ही परमात्मा का रूप कहा है:

हमू नानक असतो हमू अंगद असत
हमू अमरदास अफ़ज़लो अमजद असत ॥२३॥
हमू रामदासो हमू अरजुन असत
हमू हरगोबिंद अकरमो अहिसन असत ॥२४॥
हमू हसत हरिराइ करता गुरू
बद आशकारा हमा पुशतो रू ॥२५॥
हमू हरिकिशन आमदा सर-बुलंद
अजो हासिल उमीदि हर मुसतमंद ॥२६॥
हमू हसत तेगि बहादर गुरू
कि गोबिंद सिंघ आमद अज़ नूरि ऊ ॥२७॥
हमू गुरू गोबिंद सिंघ हमू नानक असत
हमा शबदि ऊ जौहरो मानक असत ॥२८॥

'गंज नामा' नामक रचना भाई नंद लाल जी गोया की फारसी में गद्य व पद्य रूप में है। इसमें भाई नंद लाल जी ने दस गुरु साहिबान की अलग-अलग रूप में स्तुति की है। अपनी अपार श्रद्धा प्रकट करते हुए भाई नंद लाल जी दूसरे पातशाह गुरु अंगद साहिब जी के बारे में लिखते हैं कि "श्री गुरु अंगद देव जी के पवित्र नाम का 'अलिफ' हर फकीर-अमीर तथा छोटे-बड़े की बख्शिश एवं प्रशंसा को अपने घेरे में लेने वाला है। उसके (गुरु जी के) नाम की सच्चाई से भरे 'नून' की सुगंधी हर छोटे-बड़े व कमी-कमीन को निवाजने वाली है। उसके (गुरु जी के) नाम के अगले अक्षर 'गाफ' उस सदीवी दीवान तथा उस मालिक के चढ़दी कला में रहने वाले जहां के मार्ग का राही है और उसके नाम का अंतिम अक्षर 'दाल' हर दुख तथा दर्द की दवा है और बढ़ने-घटने से परे है।"

भाई नंद लाल जी गुरु अंगद साहिब जी की स्तुति में लिखे आठ शेयरों में अपनी श्रद्धा व्यक्त करते हुए लिखते हैं कि गुरु अंगद साहिब जी दो जहां के मुर्शिद (गुरु) हैं। परमात्मा की

**प्रूफ रीडर, गुरमति ज्ञान।*

कृपा से वे गुनहगारों के लिए एक रहमत हैं, दया हैं अर्थात् गुरु जी गुनहगारों पर दया करके उन्हें क्षमा करने योग्य हैं तथा प्यार से उन्हें सद्मार्ग पर चलना सिखाते हैं :

गुरू अंगद आं मुरशदुल-आलमीं
ज़ि फज़लि अहद रहिमतुल मज़नबीन ॥५५॥

भाई नंद लाल जी आगे जिक्र करते हैं कि दो जहां तो क्या उनकी (गुरु जी की) बख्शिशों से लाखों जहां सफल होते हैं :

दो आलम चिह बाशद हज़ारां जहां
तुफैलि करमहाइ ओ कामारां ॥५६॥

भाई नंद लाल जी का आगे फरमान है कि गुरु अंगद साहिब जी का शरीर बख्शनहार प्रभु की कृपा का भंडार है। वे प्रभु से ही आए हैं और प्रभु में ही समा जाते हैं :

वजूदश हमा फ़जलो फैजि करीम
ज़ि हक आमदो हम बहक्क मुसतकीम ॥५७॥

भाई नंद लाल जी गुरु अंगद साहिब जी की प्रशंसा करते हुए यहां तक कहते हैं कि गुरु जी तथा प्रभु में कोई अंतर नहीं। गुरु जी जाहिर तथा गुप्त दोनों रूपों में प्रकट हैं। वे हर जगह विद्यमान हैं। उनकी उपस्थिति अंदर-बाहर सब जगह है :

हमा आशकारे निहां ज़ाहिरश
बतूनो इयां जुमलगी बाहिरश ॥५८॥

भाई जी के अनुसार गुरु जी की प्रशंसा करने वाला सच्चे प्रभु की प्रशंसा करने वाला है। गुरु जी की जाति देवताओं की पुस्तक का एक पन्ना है :

चू वस्साइ ऊ ज़ाति हक्क आमदा
वजूदश ज़ि कुदसी वरक आमदा ॥५९॥

गुरु जी की प्रशंसा की पुरजोर वकालत करते हुए भाई जी कहते हैं कि गुरु जी की प्रशंसा दोनों जहां की जुबान भी नहीं कर सकती। उनके सामने आत्मा का आंगन भी छोटा है :

जि वसफ़श ज़बानि दो आलम कसीर
बवद तंग पेशश फ़ज़ाइ ज़मीर ॥६०॥

गुरु अंगद साहिब जी की प्रशंसा, गुणगान को ही सर्वोच्च मानते हुए भाई नंद लाल जी कहते हैं कि इसलिए बेहतर है कि हम गुरु जी की प्रशंसा से उनकी बख्शिश प्राप्त करें तथा गुरु जी की कृपा एवं शखावत से प्रभु का हुक्म प्राप्त करें :

हमां बिह कि ख़ाहेम अज़ फ़ज़लि ऊ
ज़ि अलताफो अकराम हक्क अदलि ऊ ॥६१॥

अंत में भाई नंद लाल जी गुरु अंगद साहिब जी की शख्सियत पर कुर्बान जाते हुए कहते हैं कि हमारा सिर सदा उनके चरणों पर रहे तथा हमारा दिल और जान हमेशा उनसे कुर्बान होती रहे।



भाई नंद लाल जी के शब्दों में . . . *(पृष्ठ ७१ का शेष)*

तमाम जुबानें भी करने लगें तो भी उस गुरु की उसतत के समक्ष कम है।

हमां बिह कि खाहेम अज फजलि ऊ
जि अलताफो अकराम हक्क अदलि ऊ ॥६१॥

अच्छा तो यही है कि हम मानुष लोग उस ऐसे गुरु की बख्शिशों और उससे रहम (फजलो-करम) के लिये अलाही बख्शिशों को पाने के लिये अरदास करें!

सरि मा बपाइश बवद बर दवाम
निसारश दिलो जानि मा मुसतदाम ॥६२॥

हमारा शीश उस गुरु के समक्ष उसके चरणों में झुका रहे और सदा-सदा के लिये (मुसतदाम) हम दिलो-जान उन पर न्यौछावर (निसारश-निसार) करते रहें!



श्री गुरु अंगद देव जी के श्लोकों का विषय-वस्तु

*-डॉ. जसविंदर कौर**

श्री गुरु अंगद देव जी द्वारा रचित ६३ श्लोक श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संग्रहित हैं। श्री गुरु अंगद देव जी के इन श्लोकों को पंचम गुरु साहिब ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना के समय ९ वारों में शामिल किया, जो गुरु नानक साहिब, श्री गुरु अमरदास जी व श्री गुरु रामदास जी द्वारा रचित हैं। श्री गुरु नानक देव जी की माझ की वार में १२, वार आसा में १५, वार मलार में ५ श्लोक अंकित किये गये हैं। श्री गुरु अमरदास जी की वार सूही में ११, वार रामकली में ७ और वार मारू में १ श्लोक प्राप्त होता है। श्री गुरु रामदास जी रचित वार सिरीराग में २, वार सोरठि में १ और वार सारंग में ९ श्लोक उपलब्ध हैं। श्री गुरु अंगद देव जी द्वारा रचित कोई भी वार नहीं है, पर उनके द्वारा रचे गये श्लोक बहुत ही भावपूर्ण और गंभीर प्रवृत्ति वाले हैं। छोटे आकार के होने के बावजूद उनमें विशाल विषय-सामग्री भरी हुई है। उनके बारे में यदि यह कहा जाये कि श्री गुरु अंगद देव जी के श्लोकों में गागर में सागर समाया हुआ है तो अतिश्योक्ति न होगी।

इन श्लोकों में जहां एक ओर श्री गुरु अंगद देव जी ने मन के पीछे चलने वाले व्यक्तियों भाव मनमुख के मूल्यों की चर्चा करते हुए उन्हें अंधा, अज्ञानी आदि कहा है वहीं दूसरी ओर गुरु की आज्ञा में चलने वाले को गुरमुख, सोहागणी और ज्ञानी आदि संज्ञा दी है। मनमुख जिन वस्तुओं की प्राप्ति को अपने जीवन का ध्येय मानता है उनकी नश्वरता का वर्णन श्री गुरु अंगद देव जी के श्लोकों में प्राप्त होता है और श्री गुरु अंगद देव जी मनमुख के मूल्यों को न अपनाने के विषय में प्राणी को सावधान करते हैं। ऐसे मूल्यों को हम नकारात्मक मूल्य कह सकते हैं। दूसरी ओर वे मूल्य हैं जिन्हें अपनाने के लिये श्री गुरु अंगद देव जी प्रोत्साहित करते हैं। उन्हें सकारात्मक मूल्य कहा जा सकता है।

श्री गुरु अंगद देव जी के श्लोकों के विषय-वस्तु को समझने के लिये हम नकारात्मक मूल्य और सकारात्मक मूल्यों के विभाजन के द्वारा ही समझने का यत्न करेंगे।

नकारात्मक मूल्य : जो मनुष्य आध्यात्मिक मूल्यों के ज्ञान के बिना हैं, गुरु अंगद साहिब जी के अनुसार वे मनमुख, दोहागणी, अज्ञानी और अंधे हैं। गुरु जी का कथन है कि अंधा वह है जिसके हृदय में नाम का प्रकाश नहीं है। यह मनमुख सदैव बेमुख होकर उल्टी तरफ चलते हैं भाव नकारात्मक मूल्यों को अपनाते हैं। प्रभु से दूरी ही अज्ञानता और अंधापन है। गुरु अंगद साहिब स्पष्ट रूप में कहते हैं :

अंधे एहि न आखीअनि जिन मुखि लोइण नाहि ॥
अंधे सेई नानका खसमहु घुथे जाहि ॥

(पन्ना ९५४)

अज्ञानी को नाम-रत्न का ज्ञान नहीं होता और वह उसके बिना ही रहता है। नेत्रहीनता अंधापन नहीं है। वास्तविक अंधे वे हैं जो अंदर से अंधे हैं। उनके अंदर नाम-रत्न का प्रकाश नहीं है। वे नाम-सिमरन में नहीं

**१४७, कबीर पार्क, श्री अमृतसर।*

लगते, वे प्रभु के हुक्म को भी नहीं पहचानते।

गुरु नानक साहिब द्वारा रचित वार मलार में सम्मिलित गुरु अंगद साहिब के श्लोक में स्पष्ट कहा गया है कि जब लोग नकारात्मक या उल्टे मूल्यों को अपना लेते हैं तो कलयुग का समय बन जाता है। ऐसे समय में नामहीन धनी व्यक्ति को पातशाह, आचरणहीन मूर्ख को पंडित और अज्ञानी को पारखू कहा जाता है। शरारती चौधरी कहलाता है और झूठे लोग प्रधान बन जाते हैं।

मनमुख दुनिया के पदार्थक मूल्यों की प्राप्ति में ही लगे रहते हैं जिनका कोई लाभ नहीं, कोई महत्ता नहीं। मनमुख अपने बुरे कर्मों के कारण प्रभु से दूर हो जाते हैं। हउमै के अधीन कार्य करने वाले जीव आवागमन के चक्र में पड़े रहते हैं। हउमै बहुत बड़ा रोग है। अज्ञानी जीव अज्ञानवश हउमै का त्याग करने में असमर्थ रहता है, इसीलिये वह प्रभु से माया सम्बंधी पदार्थों की मांग करता है और प्रभु की समीपता-प्राप्ति से वंचित रह जाता है। अज्ञानी कोई भी कार्य संपूर्ण नहीं कर पाता, फिर उसे प्रभु-प्रेम कैसे प्राप्त हो सकता है?

जीव को ध्यान रखना चाहिये कि पदार्थक रसों का अस्तित्व थोड़े समय के लिये ही होता है। ये रस मृत्यु उपरांत भी साथ नहीं जाते। फिर भी मनुष्य माया सम्बंधी पदार्थों में लिप्त रह कर आत्मिक गिरावट का भागी बनता है। वह इस जीवन को सदीवी सत्य मानकर भौतिक पदार्थों के लोभ में डूबा रहता है। वह थोड़े समय के लिये भी बहुत ज्यादा आडंबर रचता है। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो संसार का संपूर्ण त्याग कर देते हैं। यह भी अज्ञानता है। कई हठी तप करते हैं और घर-बार का त्याग करते हैं। यह भी उचित नहीं। मन, हठ और जिद से भक्ति करना भी ठीक नहीं। अज्ञानी अंधे को परमात्मा की सूझ नहीं होती, वह तो अपने आप का ही दिखावा करता है :

नानक अंधा होइ कै रतना परखण जाइ ॥
रतना सार न जाणई आवै आपु लखाइ ॥
(पन्ना ९५४)

ऊपर हमने गुरु अंगद साहिब द्वारा वर्णित मनमुखी वृत्तियों का संक्षिप्त विवेचन किया है। आगे हम गुरु जी के अनुसार गुरमुखी वृत्तियों का संक्षिप्त उल्लेख करेंगे। यद्यपि गुरु अंगद साहिब यह मानते हैं कि मनमुखी और गुरमुखी वृत्तियां परमात्मा के हुक्म और रजा में ही उत्पन्न होती हैं। हुक्म और रजा में ही उनका निरंतर संघर्ष चलता रहता है। हुक्म में ही मनमुख गुरमुख के आगे ठहर नहीं सकता ठीक उसी प्रकार जैसे बिछुओं का मंत्री नाग के समक्ष टिक नहीं पाता, उसका नाश अवश्यंभावी होता है।

वैदिक साहित्य कथा-कहानी (देव-पूजा), पाप-पुण्य, लेन-देन, स्वर्ग-नरक, जाति आदि की उत्तमता-निम्नता के विचारों में पड़ा रहता है, पर गुरबाणी तत्व ज्ञान, हुक्म, नाम और परमात्मा के स्वरूप की व्याख्या करती है। बाणी हमें यह ज्ञान देती है कि सारे देवताओं का शिरोमणि परमात्मा ही है। वही सकारात्मक मूल्यों का धारक है। गुरु अंगद साहिब के अनुसार सकारात्मक मूल्य निम्नलिखित अनुसार हैं:

सकारात्मक मूल्य : गुरु अंगद साहिब के श्लोकों के विश्लेषण के उपरांत हम यह पाते हैं कि सकारात्मक मूल्यों में प्रभु-प्राप्ति के साधनों, प्रभु-प्राप्त व्यक्ति के गुणों और प्रभु के स्वरूप की चर्चा विशेष रूप में गुरु अंगद साहिब की बाणी में प्राप्त होती है।

उच्चतम मूल्यों की प्राप्ति में प्रभु से बिछुड़ी आत्मा के दुख, जिसे विरहा कहा गया है, को बहुत महत्वपूर्ण माना गया है। तीव्र विरहा की भावना के जागृत होने पर प्रभु जीव

को अपने अंदर से ही मिल जाता है। प्रभु-प्राप्ति के लिये उससे बिछुड़ने के दुख के साथ-साथ उसके आगे आत्मसमर्पण भी जरूरी होता है। गुरु अंगद साहिब का कथन है कि जो सिर प्रभु के आगे झुकता नहीं वह व्यर्थ है और जिस शरीर में प्रभु के बिछोड़े का दुख नहीं वह भी व्यर्थ है:

जो सिरु सांई ना निवै सो सिरु दीजै डारि ॥
नानक जिसु पिंजर महि बिरहा नही सो पिंजरु लै जारि ॥ *(पन्ना ८९)*

इस प्रकार प्रभु से मिलन की तड़प और उसके आगे पूर्ण समर्पण अति आवश्यक है। गुरु अंगद साहिब के अनुसार प्रभु से मिलाप के लिये इंद्रिय रसों के स्थान पर प्रभु-भय के पांव, प्रभु-प्रेम के हाथ, सुरति और लगन की आंखों की आवश्यकता होती है। जिनके पास ऐसे गुण होते हैं उन्हें ही उच्च आत्मिक रस का पता चलता है।

पूर्णता के अभिलाषी को अपने आप को पहचानना चाहिये। आंतरिक संसार वाह्य संसार से भिन्न है। आंतरिक संसार में नाम-रूपी खजाना है और ज्ञानवान तथा सूझवान आंतरिक पदार्थों को पा लेते हैं। इन पदार्थों की प्राप्ति के लिये प्रात: काल में निद्रा से उठना, स्नान करके सुचेत होना, मन और मुख से नाम-स्मरण करना, सतसंगियों की शिक्षा का श्रवण और दिन भर सच्ची किरत करना आवश्यक है। इस प्रकार जीव को अमृतमयी पूर्णता प्राप्त होती है, पुण्य बढ़ते हैं। जब कर्मों का हिसाब लगाया जाता है तो ऐसे लोग पूर्ण और खरे निकलते हैं और उनका प्रभु से मिलाप होता है। पूर्णता अंत: की निर्मल दशा है जो नाम-सिमरन से प्राप्त होती है। इस समझ के बिना जीव बाहरमुखी बना रहता है और माया के पदार्थों के पीछे लगा रहता है।

गुरु के पास ही नाम-रत्न होता है, वही नाम-रत्न की बख्शिश करता है। नाम के कारण गुरु स्वयं आरोग्य रहता है। मनुष्य को हउमै रोग लगा हुआ है। जब सिक्ख गुरु रूप समुद्र में स्नान करता है तब प्रभु उसको सदीवी शोभा प्रदान करता है। गुरु ही मनुष्य को देवत्व प्रदान करता है। गुरु मनुष्य को सुचेत करता है और जीव के अंधकार को दूर करता है।

पूरा गुरु प्रभु-कृपा से ही प्राप्त होता है। पूर्ण गुरु यह समझा देता है कि प्रेमा-भक्ति जीव को सारे भय तथा बंधनों से मुक्त करवा देती है। प्रभु जिस पर कृपा करता है उसे किसी का भय नहीं रहता। जिसको प्रभु का भय नहीं वह भक्ति नहीं करता और उसे अनेकों अन्य भय आ चिपटते हैं।

प्रभु सबसे बड़ा है और सब कुछ करने की सामर्थ्य रखता है। वही अपने हुक्म (आदेश) से तत्वों के मेल द्वारा शरीर बनाता है और अपने हुक्म अनुसार ही तत्वों को बिखेर कर शरीर का नाश कर देता है। यह सामर्थ्य किसी और के पास नहीं।

परमात्मा सब जीवों में निवास करता है। जो इस भेद को जानता है वह निरंजन है, पूज्य है। प्रभु का प्रेमी दुख-सुख दोनों में प्रभु से जुड़ा रहता है। सूझवान जीव को दुख-सुख में प्रभु का ही आसरा दिखाई देता है और इसी कारण उसका प्रभु से मिलाप होता है।

प्रभु-प्रेम और मिलाप जीव के हृदय में आनंद लाता है। प्रभु आनंद का स्रोत है। उस स्रोत से मिलने में ही पूर्णता है। उस अंतिम स्रोत से मिलने का उपाय प्रभु के हुक्म में चलना है। हुक्म नियम भी है और रजा भी। हुक्म में वही चल सकता है जो जीवित ही मर जाए। इस जीवित मरने का अर्थ है आंखों के बिना देखना, कानों के बिना सुनना, पैरों के बिना चलना, हाथों के बिना किरत करनी और बिना जिह्वा

के बोलना भाव इंद्रियों को अपने वश में रखना।

सेवक को अपनी सेवा के लिये अहंकार नहीं करना चाहिये। यदि भक्त अपनी सेवा तथा भक्ति के बदले में अहंकार या झगड़ा करे तो उसे प्रभु से समीपता प्राप्त नहीं हो सकती। जो अहंकार का त्याग कर प्रभु-सेवा भाव स्मरण करता है उसे उसका फल, आदर, सत्कार और रस मिलता है :

आपु गवाइ सेवा करे ता किछु पाए मानु ॥
नानक जिस नो लगा तिसु मिलै लगा सो परवानु ॥ (पन्ना ४७४)

जिस हृदय में प्रभु-लगन लग जाती है उसे परमात्मा के बिना किसी का आश्रय नहीं होता। उस आश्रय के बिना जीवन मृत्यु के समान है। भक्त भक्ति में लीन रहे तभी जीवित है वरना मृतक समान है। सिमरन ही जिंदगी है।

प्रभु-भक्त सुख-दुख दोनों में प्रभु से संबंध बनाये रखता है। सूझवान जीव सुख-दुख में उसी का आसरा लेकर रखता है। इसी से प्रभु का मिलाप होता है। प्रभु से जुड़े, गुरु के बताये मार्ग पर चलने वाले, गुणों को धारण करने वाले गुरमुखों के लिये हर मौसम सुहावना है। वे सदा सुखी हैं। उनका प्रेम सदैव प्रभु से लगा रहता है।

प्रभु जीव रूपी बनजारों को अपने हुक्म के साथ संसार में भेजता है। कई सकारात्मक मूल्यों को धारण करते हैं, नाम का व्यापार करते हैं और लाभान्वित होते हैं। कुछ नकारात्मक मूल्यों को धारण कर सब कुछ गंवा लेते हैं। वे धन्य हैं जो अपनी आत्मिक पूंजी को सुरक्षित रखते हैं। मनुष्य के तन-मन में बसंत भाव प्रफुल्लता उस समय होती है जब प्रभु का हृदय में निवास हो। प्रभु प्रेमा-भक्ति से ही हृदय में बसता है और फिर सदीवी आनंद की प्राप्ति होती है। जहां नकारात्मक मूल्य धारण किया हुआ जीव :

सावणु आइआ हे सखी कंतै चिति करेहु ॥
नानक झूरि मरहि दोहागणी जिन्ह अवरी लागा नेहु ॥

वहीं सकारात्मक मूल्यों वाला जीव:

सावणु आइआ हे सखी जलहरु बरसनहारु ॥
नानक सुखि सवनु सोहागणी जिन्ह सह नालि पिआरु ॥ (पन्ना १२८०)

इस प्रकार गुरु अंगद साहिब के श्लोकों का मूल विषय-वस्तु नकारात्मक मूल्यों से बचते हुए सकारात्मक मूल्यों को अपनाने की प्रेरणा देना है। गुरु अंगद साहिब जी जीव को पदार्थवादी रुचियों पर नियंत्रण करते हुए आत्मिक मूल्यों को अपनाने के लिये सुचेत करते हैं। हमें उनके श्लोकों में जहां मनमुखता के अनेक रूपों, हउमै, अहंकार, कलयुगी गिरावट के विषय में जानकारी प्राप्त होती है वहीं गुरु की महत्ता, नाम-स्मरण की महत्ता, शुभ कर्मों की महत्ता, प्रभु-प्रेम और प्रभु-भय, हुक्म, रजा के स्वरूप का पता चलता है।

गुरु अंगद साहिब के श्लोकों में हमें प्रभु के स्वरूप के साथ सिक्ख धर्म के गुरु के संस्थागत स्वरूप के भी दर्शन होते हैं। गुरु नानक साहिब के प्रति गुरु अंगद साहिब की श्रद्धा इन श्लोकों में स्पष्ट दिखाई देती है।

गुरु अंगद साहिब के बताये मार्ग पर चल कर हम अपना लोक तथा परलोक दोनों ही संवार सकते हैं। आवश्यकता है गुरु जी के श्लोकों को पढ़कर, उनके अर्थ समझ कर, उन्हें अपने जीवन में अपनाने की; नकारात्मक मूल्यों से किनारा करते हुए सकारात्मक मूल्यों को अपनाने की:

जिनी चलणु जाणिआ से किउ करहि विथार ॥
चलण सार न जाणनी काज सवारणहार ॥ (पन्ना ७८७)

श्री गुरु नानक देव जी तथा भाई लहिणा जी

-स. रूप सिंघ*

पारिवारिक, धार्मिक रस्मों-रिवाजों, रुचियों का सदका भाई लहिणा जी सच-धर्म के जिज्ञासु थे। परमार्थक विचारों की सदैव भूख-पिपासा महसूस करते। हर वर्ष देवी-दर्शनों को करके देव-भक्ति के रंग में रंगे हुए थे। हर समय देवी-देवताओं की स्तुति में गीत गुनगुनाते। समय मिलने पर धार्मिक कथा-कहानियां सुनते, पढ़ते, परंतु उस समय धार्मिक साहित्य देव-भाषा कहलाती संस्कृत में होने के कारण जन-साधारण सही समझ में न आता। फिर भी आप जी धार्मिक विचारों को ग्रहण करने के लिए सदैव उत्सुक रहते थे। स्वाभाविक ही एक दिन भाई लहिणा जी प्रात: काल गांव के बाहर शौच-स्नान करने गये तो इनका मिलाप गुरु नानक साहिब के प्रेमी सिक्ख भाई जोध के साथ हुआ। भाई जोध अमृत वेला को गुरु नानक साहिब की बाणी का शबद पढ़ रहे थे :

जितु सेविऐ सुखु पाईऐ सो साहिबु सदा सम्हालीऐ ॥
जितु कीता पाईऐ आपणा सा घाल बुरी किउ घालीऐ ॥
मंदा मूलि न कीचई दे लंमी नदरि निहालीऐ ॥
जिउ साहिब नालि न हारीऐ तेवेहा पासा ढालीऐ ॥
किछु लाहे उपरि घालीऐ ॥ (पन्ना ४७४)

रब्बी मेहर का सदका भाई लहिणा जी के लिए यह प्रथम अवसर था जब उन्होंने रब्बी स्तुति अपनी मातृ-भाषा में सुनी। शबद के अर्थ-भाव बहुत सरल-स्पष्ट थे कि उस करता पुरख वाहिगुरु की ही सिफत-सलाह करनी चाहिए, जिसकी सेवा, जिसका सिमरन करने से सदीवी सुखों की प्राप्ति हो। ऐसे करूप तथा गलत काम बिलकुल ही नहीं करने चाहिए, जिनके साथ प्रभु-शक्ति से दूरी बने। प्रभु-रजा में चलना तथा प्रभु-गुणों का गायन करना ही सफल होने वाली कमाई है।

भाई जोध से सच की बाणी सुनकर भाई लहिणा जी को सच का प्रकाश हो गया। भाई लहिणा जी के पूछने पर भाई जोध ने बताया कि यह शबद करता पुरख की तरफ से भेजे हुए आदि गुरु, गुरु नानक साहिब का है, जो इस समय रावी दरिया के किनारे करतारपुर में करता पुरख की सिफत-सलाह में 'सति-धर्म' का प्रचार कर रहे हैं।

धर्मी पुरुषों को मिलने की अभिलाषा तो पहले ही भाई लहिणा जी की अंतर-आत्मा में बनी रहती थी। भाई लहिणा जी की इस तीव्र अभिलाषा को भाई केसर सिंघ (छिब्बर) ने सुंदर शब्दों में कमलबद्ध किया है :

जगिआसा बड़ी परु शांति न आवै।
साध अतीत सुनै तिथै जावै।
जोगी बैरागी संनिआसी होई।
साधू भगत जो सुणीऐ कोई।
भेटा लै के जाए सभ पास।
मत किधरों पूरन होवे आस।
(बंसावली नामा दसां पातशाहीआं का, पृष्ठ १६)

जहां भी कहीं योगी, वैरागी, साधु-संत, सन्यासी के होने की खबर मिलती भाई लहिणा जी जिज्ञासावश हरेक के पास श्रद्धा-सत्कार के साथ जाते, इसलिए कि आत्मिक तृप्ति हो सके, परंतु लोगों से मांग कर खाने के आदी, जान-बूझ कर काम न करने वाले ये तथाकथित

*अपर सचिव, शिरोमणि गु: प्र: कमेटी, श्री अमृतसर। मो : ९८१४६-३७९७९

धार्मिक लोग किसी को प्रभु-परमात्मा के साथ अभेदता, आत्मिक तृप्ति, सामाजिक संतुष्टि प्रदान नहीं कर सकते। खैर, कुदरत अवसर प्रदान करती है। भाई जोध से गुरबाणी का पावन शबद श्रवण करके गुरबाणी के रचनहारे गुरु नानक साहिब के दर्शनों की चाह मन में पैदा हो गई। गुरु नानक साहिब के दर्शनों की चाह का विवरण विभिन्न इतिहासकारों तथा लेखकों ने अलग-अलग रंगों-रूपों में किया है, जैसे भाई केसर सिंघ छिब्बर लिखते हैं कि एक समय भाई लहिणा जी देवी-दर्शनों के लिए ज्वाला जी को गए तो संग में बहुत से पीर-फकीर तथा सन्यासी मिल बैठे, जहां गुरु नानक साहिब के नाम की चर्चा होनी आरंभ हो गई। यह वार्तालाप सुन कर भाई लहिणा जी के मन में गुरु नानक साहिब को देखने का आकर्षण पैदा हो गया।

इसी प्रकार भाई जोध से गुरबाणी का शबद श्रवण करके भाई लहिणा जी का कोमल मन दर्शनों के लिए भावुक हो गया। भाई जोध से गुरु नानक साहिब का अता-पता पूछा तथा मन ही मन गुरु-मिलाप के लिए तैयारी करने लगे। १५३२ ई में अक्तूबर-नवंबर के महीने भाई लहिणा जी हर वर्ष की तरह संगी-साथियों सहित देवी-दर्शनों के लिए चल पड़े। बटाला से होते हुए जब वे रावी के दूसरे किनारे बसे करतारपुर से गुजरने लगे तो गुरु-मिलाप की अभिलाषा भारी पड़ गई। अपने संगी-साथियों को विश्राम के लिए बिठाकर स्वयं घोड़ी पर सवार होकर गुरु नानक साहिब के दर्शनों के लिए करतारपुर की ओर चल पड़े।

करतारपुर के बाहर ही भाई लहिणा जी को एक अलाही शख्सियत का मिलाप हुआ। भाई लहिणा जी ने बुजुर्गवार शख्सियत से गुरु नानक साहिब के दर-घर का रास्ता घोड़ी पर बैठे ही पूछा। बुजुर्गवार शख्सियत ने स्वाभाविक घोड़ी की लगाम पकड़ते हुए पीछे-पीछे आने के लिए कहा। कुछ समय के बाद जब दोनों गुरु नानक साहिब के घर के पास पहुंचे तो बुजुर्गवार ने घोड़ी को एक ओर खूंटे के साथ बांधने को कहा।

गुरु नानक साहिब खुद दूसरे दरवाजे से धर्मशाला में अपनी जगह पर जा विराजे। भाई लहिणा जी ने जब घोड़ी बांध, मुंह-हाथ धोकर धर्मशाला में प्रवेश किया तो यह देखते हुए हैरान हो गए कि यह तो वही अलाही पुरुष है जो मेरी घोड़ी की लगाम पकड़कर धर्मशाला तक लेकर आया है। गुरु नानक साहिब द्वारा बरताये इस कौतुक ने भाई लहिणा जी के मन पर गहरा प्रभाव डाला। भाई लहिणा जी का मन मोहित हो गया। बूंद को सागर के साथ मिलाप का रास्ता तथा मौका मिल गया।

गुरु-बाबे नानक ने सहज-स्वाभाविक पूछा, "भाई! तेरा नाम क्या है?" "जी मेरा नाम 'लहिणा' है।" गुरु नानक देव जी मुस्करा पड़े, "यदि भाई तूने 'लेना' है, हमने भाई तेरा 'देना' है।" भाई लहिणा जी ने गुरु नानक साहिब को माथा टेका तथा अपनी तरफ से हुई अवज्ञा के लिए क्षमा मांगी, "मेरे मालिक! मुझसे भारी भूल हो गई कि मैं घोड़ी पर सवार था तथा आप पैदल चल रहे थे!" श्री गुरु नानक देव जी ने रहस्यमयी शब्दों में कहा कि "यह कोई नयी बात नहीं, सदैव ही लेने वाले घोड़े पर होते हैं तथा देनदार धरती पर पैदल चलते हैं। राहगीर सदैव सवार होते हैं तथा रास्ता बताने वाले पैदल चलते हैं, तभी सही सोझी हो सकती है।" भाई लहिणा जी ने गुरु-बाबे के रहस्य भरे शब्द सुनकर अंतर-आत्मा में ज्ञानमयी प्रकाश महसूस किया। भाई लहिणा जी हैरान थे कि जो रोशनी मुझे वर्षों तक निरंतर लाटां वाली देवी ज्वाला जी के दर्शनों से महसूस नहीं हुई वह पलों में कैसे प्राप्त हो गई! धार्मिक रुचियों के कारण जीवन रूप बर्तन पहले ही मांजा-संवारा था, जिसमें गुरु नानक साहिब जी के रहस्य भरे

बोलों ने अगंमी ज्योति जगा दी। बस, फिर क्या था, भाई लहिणा जी की उस समय ही देवी-दर्शनों की चाह खत्म हो गई तथा मन ही मन निर्णय कर लिया कि वे करतारपुर के करता की खुशी में यहां 'सति करतार' कह 'करतार' (प्रभु) की प्राप्ति करेंगे। देवी-दर्शनों को जाने वाले संगी-साथियों को अपने मन की बात कही कि मैं तो अब यहां ही रहूंगा, तुमने यदि जाना है तो जा सकते हो! संगी-साथी देवी-दर्शनों के लिए चले गए तथा भाई लहिणा जी करतारपुर धर्मशाला में टिक गए। गुरु नानक साहिब की संगत करते हुए काफी दिन बीत गए तो एक दिन श्री गुरु नानक देव जी के आदेश पर अपने काम-काज को समेटने हेतु अपने गांव खडूर आ गए।

भाई लहिणा जी के महिल माता खीवी जी बहुत ही सुलग स्वभाव की उद्यमी, परिश्रमी तथा सामाजिक मेल-मिलाप रखने वाली स्त्री थीं। भाई लहिणा जी जब माता-दर्शन के लिए हर वर्ष जाया करते थे तब इस यात्रा पर बहुत दिन लग जाते थे तो घर-बाहर, परिवार तथा व्यापार की देखरेख माता खीवी जी ही करते, चूंकि उस समय बाबा दासू जी बहुत छोटे थे। घर-परिवार तथा व्यापार की जिम्मेदारियों से माता खीवी जी भली-भांति अवगत थे, इस कारण जिस समय भाई लहिणा जी करतारपुर गुरु नानक साहिब की संगत में जाने लगे तो घर-परिवार की जिम्मेदारियों से उनको माता खीवी जी ने मुक्त करते हुए धर्मी पुरुषों की संगत का आनंद लेने के लिए प्रोत्साहित किया। इस प्रकार हम देखते हैं कि भाई लहिणा जी की घाल-कमाई में माता खीवी जी का भी अच्छा-खासा योगदान था, नहीं तो छोटे बच्चों की संभाल करना ही अकेली स्त्री के लिए कठिन होता है, परंतु जिस समय भाई लहिणा जी ने करतारपुर की संगत की कथा-कहानियां परिवार को सुनाईं तो वे बहुत खुश हुए। उन्होंने यह भी स्पष्ट बता दिया कि वे तो अब करतारपुर में ही गुरु नानक साहिब के साथ 'करता' की 'किरत' करेंगे।

भाई लहिणा जी के बड़े सपुत्र बाबा दासू जी उस समय १० वर्ष के हो गए थे तथा दुकानदारी व व्यवसायिक कार्यों में छोटा-मोटा हाथ बंटाने लग गए थे। बाबा दासू जी जैसे-जैसे परिवार की जिम्मेदारियों को संभालते गए तैसे-तैसे भाई लहिणा जी करतारपुर की जिम्मेदारियां संभालने के लिये अधिक समय देने लग गए।

भाई लहिणा जी हर समय करतारपुर धर्मशाला में सिक्ख संगत की सेवा में तत्पर रहते। सिक्ख संगत को सिक्खी की शिक्षा का व्यवहारिक पाठ पढ़ाया जाता। श्री गुरु नानक देव जी स्वयं किरत करते, नाम-सिमरन कराते और संगत-पंगत में बांट छकने का पाठ दृढ़ कराते।

गुरु-मिलाप के इस दृश्य को गुरबाणी के रचनहारे कवि भट्ट कल सहार ने भावपूर्ण शब्दावली में अंकित किया है :

सोई पुरखु धंनु करता कारण करतारु करण समरथो ॥
सतिगुरू धंनु नानकु मसतकि तुम धरिओ जिनि हथो ॥
त धरिओ मसतकि हथु सहजि अमिउ वुठउ
छजि सुरि नर गण मुनि बोहिय अगाजि ॥
मारिओ कंटकु कालु गरजि धावतु लीओ बरजि
पंच भूत एक घरि राखि ले समजि ॥

(पन्ना १३९१)

अर्थात् आदि-गुरु, गुरु नानक साहिब ने भाई लहिणा जी के सिर पर रहमतों रूपी हाथ रख दिया। गुरु-हाथों का स्पर्श प्राप्त कर भाई लहिणा जी ने ऐसे महसूस किया जैसे नाम-अमृत की वर्षा मन-मंदिर में हो रही हो। भाई लहिणा जी का मन-तन तृप्त हो गया। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, पांच शत्रु वश में

करने मुश्किल थे, सब एक जगह सहज घर में टिक गए। भाई लहिणा जी के हाथ किरत की तरफ और मन करता की सिफत-सलाह, कीर्ति में मगन हो गया।

सहजे-सहजे भाई लहिणा जी की ऐसी अवस्था बन गई कि आपको खाना-पीना-पहनना भी भूल गया, परंतु यह खाना-पीना-पहनना भूलना योगियों, सन्यासियों जैसा नहीं था बल्कि यह तो 'परिवार में उदासी' का जो मार्ग गुरु नानक साहिब करतारपुर में रहकर दर्शा रहे थे, उसकी ही एक झलक थी।

प्रिंसीपल सतिबीर सिंघ, मुंशी सुजान राय के प्रसंग के साथ लिखते हैं कि गुरु नानक साहिब सत्य-मार्ग के पथिकों के अगुआ, पाकदिली की जगती ज्योति, रब्बी नूर के चमत्कारों के प्रकाश-स्तंभ और अपार छुपे भेदों के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। जगत को जीवन-युक्ति सिखला आप परगना बटाला के गांवों में से एक जगह रावी दरिया के किनारे टिक गए। ब्रह्म-ज्ञान के प्रभाव भरे वचनों का सदका, आप जी की कीर्ति की चर्चा फैल गई और देश-देशांतरों से लोग आकर उनके सिक्ख बनने लगे। जिस गांव का जिक्र सुजान राय भंडारी ने किया है, वह गुरु नानक साहिब द्वारा बसाया ऐतिहासिक-धार्मिक नगर करतारपुर ही हो सकता है।

भाई लहिणा जी रब्बी रंग में रंगी संगत में टिक कर संगत की सेवा में जुट गए। पानी ढोने, पंखा झुलाने, लंगर तथा कृषि आदि कार्यों में सेवा के लिए सदैव तत्पर रहते। करतारपुर में हर समय 'सति करतार' की धुन उठती रही। प्रभु-संगत में कोई ऊंच-नीच, वहम-भ्रम, जात-पात, धर्म, नस्ल के कारण भेदभाव नहीं था। बहुत बड़ी गिनती में श्रद्धालु सिक्ख आते, गुरु नानक साहिब को करतारपुर हल चलाते, कृषि करते/कराते देख हैरान होते कि यह क्या खेल है! पहले उदासी वेशभूषा व लंबी उदासियां और अब गृहस्थी तथा व्यवसायी! बहुत लोग इस कारण नाक-मुंह चिढ़ाते कि यहां तो ब्राह्मणी धर्म-मर्यादा का पालन ही नहीं हो रहा, सब एक जगह बैठकर भजन-बंदगी तथा भोजन करते हैं। न कोई वर्ण, न जाति, न मजहब; ब्राह्मण, खत्री, शूद्र, वैश्य, कोई अंतर नहीं।

परंतु कुछ रब्ब के प्यारे रब्बी खलकत को एक समझने वाले इस अनोखी धर्मशाला को देख-देख गदगद होते तथा सोचते कि यदि रब्बी राज्य है तो करतारपुर में ही! गुरु नानक साहिब जिस प्रकार के आदर्शक मनुष्य की संरचना करना चाहते थे उसके लिए ऐसी टकसाल ही कारगर हो सकती थी। गुरसिक्ख को गुरु जी हर पक्ष से संपूर्ण बनाना चाहते थे, इसलिए कि उसको किरत करते हुए अपने काम पर गर्व महसूस हो तथा भजन-बंदगी करने के समय आत्मिक संतुष्टि तथा आत्म-सम्मान पैदा हो। समूची संगत किरत करती, नाम का जाप करती तथा संगत-पंगत में बांट कर छकती। हाथों से किरत करके हउमै-अहंकार की मैल दूर होती तथा ज्ञान-गोष्टि के साथ अज्ञान रूपी अंधेरे का विनाश होता। इस प्रकार करतारपुर तो गुरु नानक साहिब ने ऐसे राज्य, सहज समाज का सृजन किया जिसकी कल्पना करना भी भारतीय समाज में असंभव था। यही कारण है कि गुरबाणी के दैवी कवि भाई बलवंड जी ने स्पष्ट कर दिया कि गुरु नानक साहिब ने जिस प्रभु-राज-सहज योग को चलाया, उसकी आधारशिला बहुत मजबूत है, इसकी दीवारें सत्य-धर्म पर आधारित हैं, जहां किसी किस्म के वहम-भ्रम-पाखंड प्रवेश नहीं कर सकते, बल्कि हर ओर सत्य का बोलबाला अथवा बढ़ोत्तरी है:

नानकि राजु चलाइआ सचु कोटु सताणी नीव दै ॥ *(पन्ना ९६६)*

श्री गुरु नानक देव जी की संगत में हर समय धर्म की किरत करने, रब्बी बाणी सुनने,

पढ़ने, अमृत वेला को जाग प्रभु की स्मृति में जुड़ने, वहम-भ्रम, पाखंड, तंत्र-मंत्र, मढ़ी-मसान, देवी-देवताओं का परित्याग कर, प्रभु-शक्तियों का नहीं, प्रभु की प्राप्ति के लिए सेवा-सिमरन करते हुए जीवन सफल करने का उपदेश व्यवहारिक रूप से पढ़ाया जाता।

भाई लहिणा जी पहले ही धर्म-कर्म धार्मिक करते थे, परंतु उस धर्म-कर्म में दात को प्यार किया जाता तथा दातार को स्मरण नहीं किया जाता था। धार्मिक वातावरण में जन्मे-पले भाई लहिणा जी को सच-धर्म की सोझी प्राप्त करने के लिए करतारपुरी टकसाल के शिक्षार्थी होने का सम्मान प्राप्त हुआ। बस, फिर क्या था, भाई लहिणा जी ने प्रभु-हुक्म में चलते हुए, प्रेम-भक्ति का मार्ग अपना लिया। उर्दू कवि के बोल हैं :

मिटा दे अपनी हस्ती को, अगर तू मरतबा चाहे,
दाना खाक में मिलकर ही गुले-गुलजार होता है।

जैसे बीज को वृक्ष के रूप में विकसित होने के लिए पहले अपना आप मिट्टी में कुर्बान करना पड़ता है तब कहीं जाकर वो छाया तथा फलदार वृक्ष के रूप में लाभदायक सिद्ध होता है। इसी प्रकार भाई लहिणा जी ने अपने आपे को गंवा (अपने अस्तित्व को मिटा कर) गुरु में अभेद होने का रास्ता अपना लिया। रास्ता बहुत कठिन था, परंतु भै-भावनी में चलते हुए सत्य, संतोष, संयम, सहज, संगत, दया, धर्म को धारण करते हुए काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार पर विजय प्राप्त कर ली। धीरे-धीरे ऐसी संरचना नये रूप में बनाई जा रही थी कि बहुत बड़ी संख्या में लोग भाई लहिणा जी को ही गुरु नानक साहिब का सपूत कहने लग गए। भाई गुरदास जी ने भी भाई लहिणा जी का वास्तविक स्वरूप प्रकट किया है :

काम क्रोधु विरोधु छडि
लोभ मोहु, अहंकारहु तहणा।
पुतु सपुतु बबाणे लहणा ॥ (वार २४:७)

कविता

कोख में बेटी को मत मार!

कोख में बेटी को मत मार!
नारी बिन सूना संसार!
सृष्टि-रचना का आधार,
समझ ले जीवन-सत्य-सार!
नारी बिन घर कौन बनाए,
मीठे-मीठे-से पकवान?
कार्य-भार को कौन संभाले,
कौन चलाये गृह-परिवार?
कोख में . . . !
सुनने को अब कान तरस गये,
मधुर आवाज रसभरी पुकार।
मेंहदी वाले हाथ प्रीत से,
कैसे करेंगे अब मनुहार?
रूप चौदसी नयन हैं प्यासे,
मन-घर का उजड़ा संसार।
कोख में . . . !
मावस के दीये कौन कलपे,
घर की कन्या दी है मार!
रूप रंग रस तीज त्यौहार,
संस्कृति का थी आधार।
ये सब रंग रस नारी के संग,
भूल कर न बन दुष्ट गंवार।
कोख में बेटी को मत मार!
नारी बिन सूना संसार।

-डॉ लीला मोदी, २९१, मोती स्मृति, टिपटा, कोटा (राज.)-३२४००६

थापिआ लहिणा जींवदे गुरिआई सिरि छत्रु फिराइआ

-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'*

सिक्खों के दूसरे गुरु श्री गुरु अंगद देव जी का पहला नाम भाई लहिणा जी था। इनका जन्म जिला मुक्तसर के गांव मत्ते की सरां (सराय नागा) में बाबा फेरूमल जी के घर में, माता सभराई जी की कोख से ५ वैशाख, सं. १५६१ तद्नुसार ३१ मार्च, सन् १५०४ को हुआ था। जिला गुजरात का गांव मंगोवाल बाबा फेरूमल जी का पैतृक गांव था। शादी के बाद वे अपनी ससुराल मत्ते की सरां में आकर रहने लगे थे। वे काफी शिक्षित थे। यहां पर उनका काम दिनों में ही चल निकला। भाई लहिणा जी का बचपन व किशोरावस्था का समय यहीं पर व्यतीत हुआ।

उनके समय में खडूर साहिब एक गांव की तरह था और इससे लगभग दो मील दूर बसे गांव संघर की बीबी खेम जी, जिन्हें हम सभी सिक्ख माता खीवी जी कहते हैं, के साथ इनकी शादी हुई थी जिनके पिता का नाम श्री देवीचंद था। श्री गुरु अंगद देव जी के दो सपुत्र--बाबा दातू जी और बाबा दासू जी थे। इनकी दो सपुत्रियां भी थीं, जिनके नाम बीबी अमरो जी और बीबी अनोखी जी थे।

बाबा फेरूमल जी उस समय के जाने-माने चौधरी तख्तमल के पास मुंशी का काम करते थे। तख्तमल के सात पुत्र और एक पुत्री विराई थी। विराई का विवाह खडूर साहिब में चौधरी महिमे के साथ हुआ। कुछ वर्ष बाबा फेरूमल जी का काम अच्छा चलता रहा, परंतु सन् १५१७ में तख्तमल के साथ अनबन हो गई। बीबी विराई ने सुलह करवाने की कोशिश की। वह कुछ सफल भी हुई, किन्तु डर था कि कहीं झगड़ा बढ़ न जाए, इसलिए भाई लहिणा जी की ससुराल वालों ने राय प्रकट की कि हमारे गांव संघर में आ जाओ। बीबी खीवी जी के मायके वाले काफी अमीर थे। कुछ कारणों से (रिश्तेदारी का मामला समझकर या अन्य कारणों से) भाई लहिणा जी तथा बाबा फेरूमल जी ने संघर जाने की उपेक्षा गांव हरीके में दुकान खोल ली। यहां भी ज्यादा देर न रहे और बाद में गांव संघर में दुकान खोल ली।

उस समय इब्राहीम लोधी का राज्य था। बाबर के भारत पर हमले बढ़ गए थे। वह जीत का परचम फहराता हुआ आ रहा था। सन् १५२१ में बाबर ने सैदपुर में कत्लेआम किया। इसका वर्णन श्री गुरु नानक देव जी ने अपनी बाणी में भी किया है। सन् १५२६ में बाबर ने एक बहुत बड़ा आक्रमण किया और पानीपत की पहली लड़ाई में इब्राहीम लोधी को पराजित कर दिल्ली का बादशाह बन गया। इस बड़े आक्रमण के दौरान गुरु जी की जन्म-भूमि 'मत्ते दी सरां' भी नष्ट हो गई। वहां कोई दीया जलाने वाला भी न बचा।

उसी साल बाबा फेरूमल जी भी परलोक गमन कर गए। सारा कामकाज भाई लहिणा जी को संभालना पड़ा। बाबा फेरूमल जी देवी के अनन्य भक्त थे। प्रत्येक वर्ष देवी के दर्शन हेतु श्रद्धालुओं का जत्था लेकर पहाड़ों की ओर जाते थे। पिता जी के देहांत के बाद भाई लहिणा

*बी-एक्स ९२५, संतोखपुरा, होशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, मो : ९८७२२-५४९९०

जी 'संग' के जत्थेदार बन गए।

इसी दौरान एक बार खडूर साहिब में, जहां उनकी धर्म-बुआ बीबी विराई रहती थी, वहां सुबह के समय भाई जोध जी के मुख से मीठी बाणी सुनी। भाई जोध जी मग्न होकर गा रहे थे:

जितु सेविऐ सुखु पाईऐ सो साहिबु सदा सम्हालीऐ ॥
जितु कीता पाईऐ आपणा सा घाल बुरी किउ घालीऐ ॥
मंदा मूलि न कीचई दे लंमी नदरि निहालीऐ ॥
जिउ साहिब नालि न हारीऐ तेवेहा पासा ढालीऐ ॥
किछु लाहे उपरि घालीऐ ॥ (पन्ना ४७४)

अर्थात् जिसकी सेवा द्वारा सभी सुख मिलते हैं उसे सदैव याद रखना चाहिए। जब अपना किया हुआ ही हासिल करना है तो फिर बुरे काम क्यों किये जाएं? पाप न करो, लंबी नजर (दूर-दृष्टि) से देखो। वह चाल क्यों चली जाए जिससे साहिब (प्रभु) की ओर से पराजय हो? सदैव लाभ वाला काम करना चाहिए।

भाई जोध जी के मुख से यह मधुर बाणी सुनकर भाई लहिणा जी अति प्रभावित हुए और इस बाणी के रचयिता-गुरु के दर्शनों की प्रबल इच्छा हुई। जब बाबा फेरूमल जी की चौधरी तख्तमल के साथ अनबन हुई थी तो बीबी विराई को लिवाने के लिए ये खडूर में आए थे। वहीं पर देवनेत से गुरु नानक साहिब भी आए हुए थे और उनके दर्शन हुए थे। अब उनकी रची बाणी सुनने के बाद मन को चैन कहां? मन को चैन तो अब उनके पुन: दर्शन करने पर ही मिल सकता था।

उस वर्ष देवी-दर्शन के लिए जम्मू को जाते समय आप 'संग' को छोड़ करतारपुर (अब पाकिस्तान में) में गुरु-दर्शन के लिए जा पहुंचे। दर्शन करने के बाद मन को शांति मिली। वहीं पर रहने का निर्णय ले लिया। संग को कहलवा दिया, "जिनके दर्शनों को मन लालायित था, वह दात (वस्तु) मिल गई है।" यह घटना सन् १५३२ की है।

कुछ दिनों के बाद भाई लहिणा जी खडूर साहिब में आए और सारा कामकाज भानजे के सुपुर्द कर वापिस करतारपुर में चले गए। अपने सिर पर उन्होंने नमक की एक पोटली भी रखी हुई थी। करतारपुर में पहुंचकर नमक की पोटली को घर में रखा और सीधे खेतों की ओर श्री गुरु नानक देव जी के पास चले गए। उस वक्त गुरु जी घास उखाड़ रहे थे। वे भी घास उखाड़ने लगे। कभी कृषि-कार्य किया नहीं था। वे घास के साथ धान भी उखाड़ने लगे। गुरु नानक साहिब मुस्कराने लगे।

घास के दो गट्ठर तैयार हो गए। एक गट्ठर गुरु जी ने उठा लिया और दूसरा भाई लहिणा जी ने। यह देख माता सुलक्खणी जी ने कहा, "आपने इन्हें गट्ठर क्यों उठवा दिया?" महाराज जी ने उत्तर दिया, "इसके सिर पर घास का गट्ठर नहीं, अपितु दीन-दुनिया का छत्र रखा है। इसके कपड़ों पर कीचड़ नहीं केसर है। यह बड़ा भाग्यवान पुरुष है।" 'महिमा प्रकाश' के शब्दों में गुरु नानक साहिब ने फरमाया :

मैं दीन दुनीआ का छत्र सिरधारा।
वह कीच जल नहीं, केसर सिरडारा।
यह लहन, मैं इसको देना।
कहूं सत, मिथिआ नहीं बैना।
इनकी मो सो है बिध बनी।
मेरे राज को आओ धनी।

प्रिं. सतिबीर सिंघ अपनी पुस्तक 'साडा इतिहास' के प्रथम भाग में एक जगह लिखते हैं, "यह आम देखा जाता है कि जब कोई भक्त बन जाए तो वह दूसरे पुरुषों से दूर-दूर रहने की कोशिश करता है। तथाकथित ऊंची जाति वाला तथाकथित नीची जाति वालों को देखकर भी

राजी नहीं होता। यही हाल भाई लहिणा जी का था, जब वे देवी की पूजा करते थे और साथ ही जत्थेदार भी थे। गुरु नानक साहिब ने उनमें से धीरे-धीरे पिछले सभी ख्याल निकाल दिए और भाई लहिणा जी को अपना अंग-ए-खुद 'अंगद' बना दिया।"

प्रसिद्ध गुरसिक्ख साहिबान भाई सत्ता जी-भाई बलवंड जी लिखते हैं :

सहि टिका दितोसु जीवदै ॥ . . .
पुत्री कउलु न पालिओ . . . ॥ (पन्ना ९६७)

भाई गुरदास जी का कथन है, *"थापिआ लहिणा जींवदे गुरिआई सिरि छत्रु फिराइआ।"* अर्थात् पुत्रों ने वचनों का पालन नहीं किया और भाई लहिणा जी को अनन्य सेवक बन जाने पर गुरगद्दी दे दी। गुरु नानक साहिब ने श्री गुरु अंगद देव जी को गुरगद्दी देते समय एक पोथी भी दी। इस पोथी में बाणी का खजाना था।

श्री गुरु अंगद देव जी ने करतारपुर छोड़ दिया और फिर खडूर साहिब में चले आए। यहां श्री गुरु नानक देव जी द्वारा दिखाए मार्ग पर चलने हेतु लोगों को प्रेरित किया, नाम-बाणी की ओर लगाना शुरू किया, अकाल पुरख के नाम-दान को लोगों में बांटना शुरू किया, नाम-शबद का प्रवाह चला दिया। वहां पर हर समय नाम की झड़ी लगी रहती थी:

लंगरु चलै गुर सबदि हरि तोटि न आवी खटीऐ ॥
खरचे दिति खसंम दी आप खहदी खैरि दबटीऐ ॥
होवै सिफति खसंम दी नूरु अरसहु कुरसहु झटीऐ ॥
तुधु डिठे सचे पातिसाह मलु जनम जनम दी कटीऐ ॥ (पन्ना ९६८)

ज्ञानी गिआन सिंघ गुरु जी के बारे में लिखते हैं, "हर वक्त श्री गुरु अंगद देव जी के पास सतसंग का पर्चा, लंगर का खर्चा व हरि का चर्चा बने रहते थे।"

खास बात यह थी कि गुरु जी के लिए भोजन माता खीवी जी घर से तैयार कर भेजते थे। उन्होंने अपने बेटों को भी आदेश दिया हुआ था कि तुम अपनी गुजर-बसर दुकानदारी तथा कृषि द्वारा करो। पूजा का माल तुम्हारे लिए जहर-सा कातिल है। लोगों में नाम-दान बांटने के साथ गुरु जी ने लंगर-प्रथा की मर्यादा भी चला दी थी। माता खीवी जी की बदौलत अमृत समान घी वाली मीठी खीर भी लंगर में परोसी जाती थी जो बहुत स्वादिष्ट होती थी और जिसे चखने के लिए लोग दूर-दूर से आते थे। गुरु नानक साहिब और श्री गुरु अंगद देव जी द्वारा हमारे समाज में संगत और पंगत की प्रथा को शुरू करना, उसे बढ़ावा देना, स्थापित करना, उनके द्वारा समाज में सद्भावना, आपसी भाईचारे को, प्यार और स्नेह को बढ़ावा देने जैसा अति पावन-पुनीत कार्य है।

उस वक्त हमारा समाज भिन्न-भिन्न पूजा-पद्धतियों, कर्म-कांडों, अलग-अलग धार्मिक-विश्वासों के कारण बंटा हुआ था तथा जात-पात, ऊंच-नीच, भेदभाव, छुआछूत की बीमारियों से ग्रस्त था। सब लोगों को एक जगह एकत्र करने हेतु, एक समान करने हेतु, सही अर्थों में आधुनिक समाज में समाजवाद (पूरे विश्व में) लाने हेतु 'संगत और पंगत' से बढ़कर न कोई अन्य प्रथा हो सकती है और न ही अन्य कोई व्यवस्था या प्रणाली ही।

श्री गुरु अंगद देव जी अमृत वेले उठते, स्नानादि के बाद कुछ देर के लिए ध्यान लगाते, फिर संगत में पहुंच जाते और दर्शन देते। दर्शन करने के बाद कइयों को आत्मदृष्टि मिलती और कइयों के रोग दूर हो जाते। गुरु-चर्चा के अलावा अन्य कोई कथन न होता। गुरु-चर्चा में कथा, कीर्तन व गुरु-इतिहास शामिल था। रबाबी भाई बलवंड जी कीर्तन करते। जब लंगर तैयार हो जाता तो सभी लोग एक ही पंगत

(पंक्ति) में बैठकर छकते।

इसके बाद संगत विश्राम करने चली जाती। शाम को खेलों का आयोजन (शरीर को स्वस्थ रखने हेतु) होता। पहलवान अखाड़ों में उतर कुश्तियां लड़ते। रात को भाई बलवंड जी पुन: कीर्तन करते तथा पहर रात गई को गुरु जी विश्राम करते।

खडूर साहिब में एक (तपस्वी) तपा शिवनाभ रहता था। वह सतिगुरु जी के साथ ईर्ष्या करने लगा। एक बार बारिश नहीं हुई और लोग परेशान हो गए। शिवनाभ ने लोगों को सतिगुरु जी के विरुद्ध भड़काते हुए कहा कि "तुम लोगों ने एक गृहस्थी को अपना गुरु बना रखा है। वह तुम्हारे गांव में रहता है और तुम सब उसके बताए रास्ते पर चलते हो। उसे इस गांव से बाहर निकालो फिर बारिश होगी।"

अकाल पुरख के हुक्म में रहने वाले श्री गुरु अंगद देव जी ऐसी बातें सुन तुरंत गांव छोड़ने के लिए तैयार हो गए और वे निकट के गांव खान रजादे में चले गए। लोगों ने अब तपे को कहा कि वह बारिश करवाए। उसने टालने की कोशिश की परंतु लोग नहीं माने। वह बारिश न करवा सका और उसका भेद खुल गया।

जब बाबा अमरदास जी (जो बाद में सिक्खों के तीसरे गुरु बने) को इस सारी घटना का पता चला तो उन्होंने रोष प्रकट किया और गांव के लोगों से कहा, "जोगी पग रस्सा पाय जहां खैंचो वर्षा तहां।" लोगों ने ऐसा ही किया।

दूसरी ओर जब सतिगुरु जी को मालूम हुआ कि तपे को घसीटा गया है तो उन्होंने श्री गुरु अमरदास को ऐसा कहने व करने की सख्त मनाही कर दी और फरमाया :

नानक दुनीआ कीआं वडिआईआं अगी सेती जालि ॥
एनी जलीईं नामु विसारिआ इक न चलीआ नालि ॥ *(पन्ना १२९०)*

अर्थात् दुनिया का झूठा बढ़प्पन (अहं) आग में जला देना चाहिए। यह हमें वाहिगुरु से दूर करता है। यह अहं नाम-सिमरन का शत्रु है। किसी भी किस्म का बढ़प्पन साथ नहीं जाता।

सतिगुरु जी को संगत वापिस खडूर साहिब ले आई। जीवन भर यहीं रहकर उन्होंने सिक्ख मत, वाहिगुरु के नाम का प्रचार किया।

श्री गुरु नानक देव जी यह जानते थे कि अपनी बोली में दिए उपदेश ही स्थिरता प्राप्त करते हैं। उन्होंने पराई बोली बोलने वालों को आड़े हाथों लेते हुए कहा था कि ये लोग पराई बोली अपनाकर अपना धर्म भी छोड़ते जा रहे हैं। अत: श्री गुरु अंगद देव जी ने उनकी सोच पर पहरा देते हुए तथा जगत-कल्याण हेतु गुरमुखी पढ़ने व पढ़ाने पर जोर दिया। उन्होंने गुरमुखी लिपि का आविष्कार किया। अपने सिक्ख श्रद्धालुओं को गुरमुखी वर्णमाला का ज्ञानबोध कराने हेतु 'बालबोध' (पुस्तिका) की रचना की। वास्तव में गुरमुखी लिपि पंजाबी बोली की इकलौती प्रासंगिक लिपि है। इसे श्री गुरु अंगद देव जी ने अपने गुरुता-काल में पहले 'गुरमुखों' के बीच प्रचलित किया तथा फिर यह सभी पंजाबियों में प्रचलित हो गई थी। 'बालबोध' की हस्तलिखित पुस्तिकाएं बांटने का काम बड़े पैमाने पर किया।

गुरमुखी के शब्द से ही यह बोध होता है कि यह लिपि सिक्ख संस्कृत एवं उसके स्रोतों-वेदों से ऊपर व अलग हो गई। गुरमुखी याद दिलाती रहती थी कि जो कुछ गुरु के मुख से निकला है वह 'शबद' है और शेष कच्ची व कूड़ (झूठ) से भरी बाणी है। उस समय से ही गुटके (पोथियां) लिखकर बांटने का रिवाज चला। आगे चलकर यह रहितनामों का एक जरूरी अंग बन गया कि हरेक सिक्ख जीवन में कम से कम एक गुटका खुद लिखे या लिखवाकर बांटे।

श्री गुरु नानक देव जी अपने प्रचार-दौरों के दौरान जो शबद उच्चारित करते थे, उन्हें लिख लेते थे। जो शबद वहां न लिखे जा सकें, उन्हें वापिस ठिकाने पर पहुंचकर लिख लेते थे। भक्त साहिबान की काफी बाणी भी उनके पास जमा हो चुकी थी। इस तरह एक पोथी बन गई। इस पोथी को हाजियों ने मक्का में जब देखा तो कहा था, "यह खोलकर बताएं कि बड़ा कौन है, हिंदू या मुसलमान?"

परम ज्योति में अपनी ज्योति मिलाने से पूर्व श्री गुरु नानक देव जी यह बहुमूल्य खजाना श्री गुरु अंगद देव जी को दे गए थे। वे गुरु नानक साहिब के होते हुए ही बाणी संभाल रहे थे। उनके जीते-जी किसी की जुर्रत नहीं थी कि कोई गलत बाणी रच सके। यह चिंता अवश्य थी कि कोई 'नानक' के नाम पर अपनी बाणी इसमें शामिल कर सकता है, अत: जहां-जहां भी उनकी बाणी उपलब्ध थी श्री गुरु अंगद देव जी ने स्वयं सिक्ख भेज बाणी मंगवा ली। गुरु-शबद की कसौटी पर परख सारी बाणी एक बड़ी पोथी रूप में उनके पास इकट्ठी हो गई।

उन्होंने गुरु नानक साहिब के जीवन से सम्बंधित समाचारों को इकट्ठे करने का भी बड़ा महत्वपूर्ण कार्य किया। उन्होंने 'बाल-लीला' के समाचार तलवंडी से इकट्ठा किए। कुछ भाई लाल जी से मिले तथा कुछेक अन्य लोगों से। पहली साखी जन्म से संबंधित होने के कारण लिखा गया, 'जन्म-साखी'। जब कोई गुरु नानक-प्रेमी दर्शनों के लिए खडूर साहिब में आया, उसने वार्ता की, गुरु जी ने लिखवा ली और लिखा गया, 'साखी होर चली'। अन्य प्रेमी भी आते रहते थे। वे भी कुछ न कुछ बताते। इस तरह सिर्फ साखियों की एक पोथी बन गई। पहली साखी जन्म की साखी होने के कारण समूचे साखी-संग्रह को ही 'जन्म-साखी' कहा जाने लगा। 'जन्म-साखी' से संबंधित साहित्य को इकट्ठा करने, लिखवाने और उसे संभालने में श्री गुरु अंगद देव जी के योगदान को सदैव याद रखा जाएगा।

यह तो सबको पता ही है कि गुरु जी लंगर की ओर विशेष ध्यान देते थे। माता खीवी जी हर वक्त लंगर की सेवा में लगे रहते थे। भाई सत्ता जी-भाई बलवंड जी ने उनकी सेवा का वर्णन अति सुंदर शब्दों में किया है:

बलवंड खीवी नेक जन जिसु बहुती छाउ पत्राली ॥
लंगरि दउलति वंडीऐ रसु अंम्रितु खीरि घिआली ॥
(पन्ना ९६८)

श्री गुरु नानक देव जी के बड़े सपुत्र बाबा सिरीचंद ने 'उदासी मति' की नींव रख दी थी। गुरु नानक साहिब के सपुत्र होने के कारण लोगों में उनका काफी सम्मान था। डर था कि कहीं सिक्खी की लहर उदासी की लहर में ही जज्ब न हो जाए, अत: श्री गुरु अंगद देव जी ने लोगों से गृहस्थ में ही बने रहने के लिये कहा और सिक्खी के प्रचार में दिन-रात एक कर दिया। फलस्वरूप उदासी मति को चोट पहुंची और वह एक छोटा-सा संप्रदाय बनकर रह गया। सिक्खी की लहर जोर पकड़ गई। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के वक्त यही उदासी संप्रदाय सिक्ख मत के प्रचार में जुट गया।

जिस तरह श्री गुरु नानक देव जी ने कुछ परीक्षाओं, जिनमें सिर पर घास का गट्ठर उठवाना, बारिश में एक दीवार को बार-बार बनवाना, गंदे नाले में से कटोरा निकलवाना आदि शामिल थीं, के बाद (सफल होने पर) श्री गुरु अंगद देव जी को गुरगद्दी सौंपी थी। ठीक उसी तरह श्री गुरु अंगद देव जी ने भी श्री (गुरु) अमरदास जी की जी-जान से की गई सेवा को ध्यान में रखते हुए, उन्हें सिक्खों के

तीसरे गुरु के रूप में गुरगद्दी सौंपी। अपने सपुत्रों बाबा दातू जी और बाबा दासू जी का भी कोई लिहाज नहीं किया। गुरु-घर में नाम-सिमरन के साथ-साथ, सेवा, समर्पण, गरीबों की मदद करने, मजलूमों की रक्षा करने, निराश्रितों को आश्रय देने, नारी का सम्मान करने, सबसे प्यार करने, समभाव रखने आदि का अति महत्व है।

श्री गुरु अंगद देव जी श्री गुरु अमरदास जी को गुरगद्दी सौंपने के बाद २९ मार्च, सन् १५५२ को ४८ वर्ष की आयु में परम ज्योति में लीन हो गए।



कविता

श्री गुरु अंगद देव जी

इक शरधालू घर छड्ड आपणा,
गुरू नानक दर आइआ।
निरख परख के गुरू नानक ने,
उस नूं सिक्ख बणाइआ।
आखिआ "कंम कर हत्थीं सज्जणा,
किरत करीं मन ला के।
धारमिक पोथीआं नूं तूं पढ़णैं,
मन 'चों भरम गवा के।
पढ़ीं जिंना वी पढ़ सकदा हैं,
पर ना माण 'च आवीं।
मानवता दी सेवा विच ही,
सारी उमर लगावीं।
पढ़ीं-पढ़ावीं लोकां नूं तूं,
दूर करीं अंधिआरा।
यतन करीं इस धरती उप्पर,
हर थां होए उजिआरा।
चानण दा वणजारा बण के,
वणज करीं चानण दा।
सच्च जो जग्ग दा, सच्च विहाजीं,
यतन करीं जाणन दा।
जे तूं मेरा सिक्ख बणना है,
करीं साधना भारी।
लोकाई नूं गले लगावीं, होई पई दुखिआरी।
उस दे दुक्ख नूं दूर करन हित,
आपणे सुख तिआगीं।
दब्बे कुचले लोक जगावीं, इह सेवा तेरे भागीं।
मैं जो रुक्ख सिक्खी दा लाइआ,
रुक्ख इह बड़ा निआरा।
इस नूं जान तों पिआरा वध के,
मैनूं जान तों पिआरा।
शाहां तों ना डरीं कदे वी,
दूर रहीं शाहां तों।
डरीं कदे ना संकट तों,
ना ही बिखड़े राहां तों।
करनी किरत सच्ची ते सुच्ची,
माण करीं किरती दा।
वंड छकीं ते नाम जपीं तूं,
इह है राह मुकती दा।
उह सिक्ख गुरू नानक दा,
डूंघे दिल तों हो के रहि गिआ।
करके अमल उन्हां दी सिक्खिआ 'ते,
सेवा दा फल लै गिआ।
गुरू नानक दा जो मिशन सी सच्चा,
उह लहिणा जी ने सिखिआ।
भाई लहिणे 'चों गुरू जी नूं,
रूप आपणा दिखिआ।
उन्हां ताईं अंग लगा के, अंगद देव बणाइआ।
पुत्तरां ताईं छड्ड के उन्हूं, गुरगद्दी बैठाइआ।
इंज भाई लहिणा जी गद्दी,
गुर नानक तों लीती।
गुरू नानक-मिशन फैलाउंदिआं उमरा,
गुरू अंगद दी बीती।



-स. सुखदेव सिंघ प्रेमी, १२४, अर्बन अस्टेट, बटाला-१४३५०५०

श्री गुरु अंगद देव जी और उनकी विचारधारा

-डॉ अविनाश शर्मा*

श्री गुरु अंगद देव जी का जन्म जिला मुकतसर के गांव मत्ते दी सरां (सराय नागा) में हुआ। इनका पहला नाम भाई लहिणा जी था। श्री गुरु अंगद देव जी के जन्म के समय भारत को इस्लामिक पराधीनता में आए लगभग पांच-छः सौ वर्ष हो चुके थे। महमूद गजनवी, मोहम्मद गौरी तथा गुलाम वंश के शासन के बाद तुगलकों और लोधी वंश के शासकों ने देश की शासन-व्यवस्था को संभाला। श्री गुरु नानक देव जी लोधी वंश के बादशाहों के समकालीन थे। पंजाब में दौलत खान लोधी के साथ भी श्री गुरु नानक देव जी के सम्बंध मधुर थे। सन् १५२६ ई में बाबर ने भारत पर आक्रमण किया। उसने लोधी वंश के बादशाहों को पराजित कर मुगल साम्राज्य की नींव रखी। बाबर ने पराजित भारतवासियों पर बहुत अत्याचार किए। श्री गुरु नानक देव जी ने पराधीनता के कारण आई राजनीतिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक गिरावट के विरुद्ध लोगों को सुचेत करने का यत्न किया। मुगलों की तलवार के आगे हिंदू परंपराएं, आदर्श एवं आस्थाएं दम तोड़ने लगी थीं। लोग अपने धर्म को डर एवं लालच में आकर छोड़ रहे थे। गुरु नानक साहिब धर्म की अधोगति देखकर बहुत दुखी थे।

भाई लहिणा जी ने बाबर के हमले से उपजी तबाही को स्वयं अपनी आंखों से देखा। भाई लहिणा जी को महमूद गजनवी तथा मोहम्मद गौरी द्वारा की गई तबाही और भारतीय औरतों की बेइज्जती अभी तक याद थी। देश में इस्लामी कानून लागू था। हिंदुओं के साथ भेदभाव किया जाता था। राज्य कर्मचारी भ्रष्ट थे। धार्मिक गुरु भी धर्म की मर्यादा का पालन नहीं कर रहे थे। अनेक सम्प्रदाय उत्पन्न हो गए थे और वे सर्वसाधारण को धार्मिक एवं सामाजिक आडंबरों में फंसा रहे थे। गुरु नानक साहिब ने इस अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाई। गुरु अंगद साहिब जी की बाणी में इस आवाज की गूंज सुनाई देना आवश्यक था। गुरु अंगद साहिब अपनी बाणी में निरंजन-भक्ति के अतिरिक्त उस समय की वर्ण-व्यवस्था, वैदिक तथा अवैदिक धर्मों के क्रिया-कलापों की ओर संकेत करते हैं। उन्होंने समकालीन जीवन के सभी अंगों का वर्णन थोड़े श्लोकों में करके अपने साहित्यिक धर्म का निर्वाह किया।

भाई लहिणा जी देवी-भक्त थे और प्रति वर्ष ज्वालामुखी माता के दर्शन को अनेक लोगों के संग जाते थे। उन्होंने हिंदू धार्मिक साहित्य, जैसे वेद, शास्त्र, स्मृतियां, पुराण, रामायण तथा महाभारत आदि पुस्तकों का अध्ययन अवश्य किया होगा। इन्होंने दूसरे धर्मों को, जैसे जैन, बौध, चरपट, गोरख आदि योगियों, नाथों की बाणी को पढ़ा और सुना। इन्होंने भक्त जैदेव जी, भक्त नामदेव जी, भक्त कबीर जी आदि भक्तों और संतों की बाणियों का मनन किया। सूफी-संतों की महफिलों में इन्हें जाने का मौका मिला या वे इनके दर्शन से परिचित जरूर थे।

भाई लहिणा जी सच्चे जिज्ञासु थे। उनके हृदय में परमार्थ की लगन थी। एक दिन जब

*१२०५, अर्बन इस्टेट, फेज-१, जलंधर

भाई लहिणा जी सुबह स्नान कर रहे थे तो उन्हें भाई जोध जी के दर्शन हुए। तब भाई जोध जी गुरु नानक साहिब जी की बाणी 'आसा दी वार' का पाठ कर रहे थे। जब भाई लहिणा जी ने इस बाणी को सुना तो उनके ज्ञान-कपाट खुल गए। उनके मन में गुरु नानक साहिब के दर्शन की इच्छा प्रबल हो गई। सन् १५३२ में भाई लहिणा जी गुरु नानक साहिब को करतारपुर में मिले। इस मिलन का भाई लहिणा जी पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि उन्होंने देवी-दर्शन का विचार त्याग दिया। भाई लहिणा जी अपना घर-बार त्याग कर गुरु-चरणों में टिक गए। सन् १५३२ से १५३९ तक गुरु-भक्ति तथा साधु-सेवा में लगे रहे। गुरु जी की आज्ञा का पालन करना, उनकी इच्छा को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी तथा सिमरन करना ही भाई लहिणा जी का काम था। जैसे-जैसे वे गुरु-सेवा में परिपक्व होते गए गुरु नानक साहिब का विश्वास उन पर बनता गया। अंत में श्री गुरु नानक देव जी ने सन् १५३९ में भाई लहिणा जी को गुरगद्दी सौंप कर 'अंगद' बना दिया। श्री गुरु नानक देव जी ने श्री गुरु अंगद देव जी को एक पोथी सौंपी जिसमें उनकी अपनी बाणी थी तथा उन संतों और भक्तों की बाणी भी थी जिनको वे मिले थे और उनकी बाणी ने उन्हें प्रभावित किया था।

श्री गुरु अंगद देव जी की विचारधारा के सभी पक्ष वही थे जो गुरु नानक साहिब की विचारधारा के थे। अकाल पुरख, गुरु-नाम, जीवात्मा, माया, कर्म, सदाचार सम्बंधी संकेत श्री गुरु अंगद देव जी की बाणी में प्राप्त होते हैं। ६३ श्लोकों में गुरु जी ने बहुत कुछ दे दिया है। आपकी विचारधारा के दो पक्ष हैं--

१) दार्शनिक २) सांसारिक

अकाल पुरख : श्री गुरु अंगद देव जी ने मूल-मंत्र के अनुसार ही अकाल पुरख को चित्रित किया है। उन्होंने ईश्वर को 'प्यार, दाता, कर्त्ता, खसम, कंत' आदि नामों से सम्बोधित किया है। ज्योति तथा कर्त्ता उसके विशेष गुण माने जाते हैं। ज्योति ज्ञान का प्रतीक है तथा बाकी ओअंकार की सत्ता के लक्षण हैं।

उनकी बाणी में ईश्वर के लिए 'खसम' तथा 'कंत' का प्रयोग बहुत अधिक हुआ है। कहीं-कहीं ईश्वर को 'साहिब' कहा गया है। 'रूप' उसकी सुंदरता को दर्शाता है। 'अगम' ईश्वर की निर्गुण अवस्था का प्रतीक है। कहीं-कहीं 'अगम' शबद 'सगुण ईश्वर' के लिए आया है, किंतु सत्य उसकी परिभाषा है। वो 'आदि, जगादि, है भी सच' वाली हस्ती है। 'निरंजन' निर्लेपता का प्रतीक है। 'परम सत्ता' का यह संकल्प बनता है कि वह सत्य-स्वरूप है, निर्गुण और सगुण है, सर्वव्यापक तथा निर्लेप है। वह कर्त्ता, भर्त्ता और हर्ता है। वह प्रेम-स्वरूप है, अथाह सुंदर है, सत्‌चित्त एवं आनंद रूप है। वह मनुष्य को प्यार करता है तथा मनुष्य के प्रेम के वश में है। ईश्वर का यह सारा चित्रण मूल-मंत्र की सीमा में है।

गुरु : 'गुरु' स्वयं गुरमुख है। वह प्रभु के सामने है। वह ईश्वर को देखता है। फिर वह अपने शिष्यों को ईश्वर के दीदार करवाता है। गुरु पूर्ण है और वह अपने तप से मनुष्य को कुंदन बना देता है। गुरु अंधेरे को दूर करता है और उसके शबद-साधक के अहम् को काट देते हैं और उसे अमृत प्रदान करते हैं। 'गुरु' में अकाल पुरख अपनी ज्योति रखता है। वह मानवता को अपनी अमृत-बाणी तथा अपनी तपस्या के बल पर अपने शिष्य को अज्ञान के अंधेरे में से निकाल कर प्रभु-प्रकाश की ओर ले जाता है। गुरु के बिना प्रभु-प्राप्ति असंभव है।

नाम-सिमरन : नाम का मार्ग बड़े संयम का मार्ग है। नाम-मार्ग स्व-पड़ताल का मार्ग है।

गुरु नानक साहिब के मार्ग पर चलना नाम-भक्ति है। नाम हठयोग नहीं है, भय का मार्ग है। नाम-भक्ति प्रभु-भय में विचरना है। एक के प्रति समर्पित हो जाना नाम-सिमरन है। नाम-सिमरन मन में अमृत-संचार करता है। 'नानक' नाम अमृत है। जिन लोगों ने उसका सिमरन किया वे भवसागर को पार कर गए। वास्तव में 'नाम' सत्य है और 'सतिनाम' ही मनुष्य को सत्य से अभेद करता है। श्री गुरु अंगद देव जी की नाम-सिमरन की धारणा भी मूल-मंत्र का अनुसरण है।

नाम-सिमरन आत्म-समर्पण का जीवन है और आठों पहर उसके रंग में रंगे रहना है। नाम-सिमरन व्यक्ति के जीवन को पूर्ण बना देता है और सांसारिक पदार्थों से जीवन को बहुत ऊंचा उठा देता है। यहां 'सवाल-जवाब' नहीं केवल 'सलाम' है। नाम-सिमरन करने से जीवन ईश्वर की आज्ञा में आ जाता है। इस प्रकार उन्होंने अपने दर्शन द्वारा 'गुरु' तथा ईश्वर-भक्ति के द्वारा अपने भीतर के अमृत को प्राप्त करने का मार्ग बताया है। गुरमति विचारधारा में ये विचार नए नहीं थे किन्तु इनको श्री गुरु अंगद देव जी ने जिस ढंग से प्रस्तुत किया वह मौलिक था। गुरु-कृपा से साधक को दैहिक और भौतिक दोनों सुख मिलते हैं।

इन्होंने अपने दार्शनिक सिद्धांतों में संचालक-गुरु जी का पूरा अनुसरण किया है। इन्होंने गुरु-भक्ति तथा सेवा के परिणाम भी बताए। इन्होंने श्री गुरु नानक देव जी की शब्दावली का ही प्रयोग किया है। श्री गुरु अंगद देव जी ने श्री गुरु नानक देव जी की बाणी तथा उनके सिद्धांतों की व्याख्या भी प्रारंभ कर दी थी।

कविता

दर्पण

बाहर से जैसा जो होता, वैसा ही दिखलाता दर्पण।
पर आकृति में छिपी प्रकृति को, प्रकट नहीं कर पाता दर्पण।
जब तक रहते सम्मुख तब तक, साथ सभी के रहता है,
हटते ही प्रतिबिंब समूचा तत्क्षण, स्वतः मिटाता दर्पण।
औरों को छलने को सजता और संवरता जो उसका,
मिथ्या आत्मप्रदर्शन पढ़कर, मन ही मन मुसकाता दर्पण।
ठकुर सुहाती कभी न कहता, पग-पग सावधान है करता,
स्वार्थ-रहित निश्छल साथी का, नाता सदा निभाता दर्पण।
मनवीणा में सुखद स्मृति की, तान छेड़ता कभी-कभी,
हृदय-फलक पर दुखों के कभी, चित्र खींच जाता दर्पण।
"हाथों से हम रोक रखेंगे काल चक्र को" जो कहते,
उनकी नासमझी पर हर दम, व्यंग्य-बाण बरसाता दर्पण।
प्रभु से यदि सुंदरता पाई, वैसे सुंदर कर्म भी करना,
बूढ़े हो जग को अनुभव से, ज्योतित करे सिखाता दर्पण।
अकाल पुरख की अनंतता, व्यापकता, विराटता का,
और निरंतर गति का प्रतिपल, सबको बोध कराता दर्पण।
ले अतीत से संजीवन रस, वर्तमान शृंगार करे,
भावी की उज्जवल आशाएं, उर में सदा जगाता दर्पण।



-डॉ. दादूराम शर्मा, सेवानिवृत्त प्राध्यापक, महाराज बाग, भैरोगंज, सिवनी (म. प्र.)-४८०६६१

श्री गुरु अंगद देव जी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

*-डॉ मधु बाला**

सिक्ख मत के दूसरे गुरु श्री गुरु अंगद देव जी की महिमा अपर अपार है। आपका जन्म ३१ मार्च, १५०४ ई को मत्ते दी सरां, मुक्तसर में हुआ। आपके पिता का नाम बाबा फेरूमल और माता का नाम दया कौर था। आपके बचपन का नाम 'लहिणा' था। आपकी प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा के विषय में भले ही प्रमाणिक सामग्री उपलब्ध नहीं है तथापि आप एक सम्पन्न परिवार में पैदा हुए, अत: आपने तत्कालीन प्रारंभिक शिक्षा अवश्य प्राप्त की होगी। आपका विवाह खडूर साहिब के पास संघर गांव के निवासी श्री देवी चंद खत्री की सुपुत्री बीबी खीवी जी के साथ सन् १५१९ में हुआ। इनकी चार संतानें हुईं। सन् १५२४ में बाबा दासू जी, सन् १५२७ में बाबा दातू जी, सन् १५२८ में बीबी अमरो जी तथा सन् १५३४ में बीबी अनोखी जी पैदा हुईं।

भाई लहिणा जी के पिता बाबा फेरूमल जी देवी के भक्त थे। उनकी भक्ति के फलस्वरूप आप भी देवी के भक्त बन गए। प्रति वर्ष आप देवी-दर्शन के लिए जाया करते थे। एक दिन अमृत वेला में किसी सिक्ख को 'आसा की वार' का पाठ करते सुन बहुत प्रभावित हुए तथा श्री गुरु नानक देव जी को मिलने की इच्छा से अपने साथियों का संग छोड़कर गुरु जी के पास रुक गए। बाद में आप उनके अनन्य भक्त बन गए। सन् १५३२ से लेकर १५३९ तक आपने श्री गुरु नानक देव जी की तन, मन, श्रद्धा और प्रेम से सेवा की।

सन् १५३९ में गुरगद्दी सौंपने से पहले श्री गुरु नानक देव जी ने अनेक परीक्षाएं लीं जिनमें भाई लहिणा जी उत्तीर्ण हुए, जैसे आधी रात के समय वस्त्रों की धुलाई, कांसे का कटोरा कीचड़ में फेंकना, मृत चूहिया को मकान से हटाना और सबसे अंतिम परीक्षा थी 'मुर्दा खाना'। जंगल में सफेद वस्त्र में लिपटे मुर्दे को देख जब गुरु जी ने कहा कि यह मुर्दा खाओ तो वहां खड़े सिक्ख चुपचाप एक-दूसरे का मुंह ताकने लगे और भाई लहिणा जी मुर्दे के पास जाकर खड़े हो गए तथा विनम्र भाव से बोले कि "हे सच्चे पातशाह! सिर की तरफ से खाऊं या पैरों की तरफ से?" गुरु जी ने कहा, "पैरों की तरफ से।" जब भाई लहिणा जी ने चादर उठाई तो वहां कुछ भी नहीं था।

इस प्रकार की परीक्षा के बाद भाई लहिणा जी को गुरगद्दी के योग्य मानकर १७ आषाढ़ सन् १५३९ को उन्हें गुरगद्दी पर विराजमान किया। गुरु जी ने उन्हें आलिंगन में लेकर कहा, "पुरखा! तू हमारे अंग से लगकर अंगद हो गया है। अब से तू 'लहिणा' नहीं 'अंगद देव' है। जो तुमने लेना था सो लेकर अंगद (मेरा रूप ही) हो गया है।

कृतित्व : श्री गुरु अंगद देव जी की बाणी आकार की दृष्टि से सीमित है परन्तु भाव की दृष्टि से गंभीर है। श्री गुरु नानक देव जी ने गुरगद्दी तो इन्हें सौंपी ही, साथ ही गुरु-परंपरा

**आई-१०९, गली नं: ५, मजीठिआ इन्क्लेव, पटियाला-१४७००५, फोन : ०१७५-३२००९४६*

एवं अपनी बाणी का संचार भी इन्हें सौंप दिया। विषय की समानता के साथ-साथ शब्दावली की भी समानता दिखाई देती है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में आपके कुल ६३ श्लोक मिलते हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की प्रथम पावन बीड़ का सम्पादन करते समय श्री गुरु अरजन देव जी ने आपकी बाणी को विभिन्न वारों की पउड़ियों के साथ संकलित कर दिया। इन श्लोकों में पाप-पुण्य, स्वर्ग-नरक, चतुर-सुजान, प्यार-जीवन, संसार, कर्म-धर्म, वर्णाश्रम, आवागमन का जिक्र किया है। आपकी बाणी इस प्रकार है:

सिरीरागु की वार	-	२ श्लोक
माझ की वार	-	१२ श्लोक
आसा की वार	-	१५ श्लोक
सोरठि की वार	-	१ श्लोक
सूही की वार	-	११ श्लोक
रामकली की वार	-	७ श्लोक
मारू की वार	-	१ श्लोक
सारंग की वार	-	९ श्लोक
मलार की वार	-	५ श्लोक

श्री गुरु अंगद देव जी ने सर्वप्रथम अहंकार का त्याग करने पर बल दिया है। यह एक ऐसा रोग है जिसका इलाज भी इसी में है :

हउमै दीरघ रोगु है दारू भी इसु माहि ॥
(पन्ना ४६६)

जात-पात का खंडन : गुरु जी फरमान करते हैं कि वर्णाश्रम व्यवस्था एक इंसानी प्रक्रिया है। अपनी उच्च जाति का अहंकार करना व्यर्थ है क्योंकि फल की प्राप्ति कर्म के आधार पर होती है न कि वर्ण के आधार पर:

चंगिआईआ बुरिआईआ वाचे धरमु हदूरि ॥
करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि ॥
(पन्ना १४६)

परमात्मा से विमुखता मनुष्य को अंधा बना देती है। जिसकी आंखें नहीं हैं उसे अंधा कहना उचित नहीं, क्योंकि वास्तव में तो वह व्यक्ति अंधा है जो परमात्मा के हुक्म अनुसार नहीं चलता:

सो किउ अंधा आखीऐ जि हुकमहु अंधा होइ ॥
नानक हुकमु न बुझई अंधा कहीऐ सोइ ॥
(पन्ना ९५४)

गुरु की महत्ता को बताते हुए कहा है कि अध्यात्म के मार्ग पर केवल सच्चा गुरु ही साधक की जिज्ञासा को शांत कर सकता है, उसको मायाजाल से मुक्त करके सत्य-स्वरूप परमात्मा के दर्शन करवा सकता है। वास्तविक ज्ञान का प्रकाश गुरु के पास ही है। ऐसे गुरु के अभाव में घोर अंधकार का प्रसार होता है:

--जे सउ चंदा उगवहि सूरज चड़हि हजार ॥
एते चानण होदिआं गुर बिनु घोर अंधार ॥
(पन्ना ४६३)

--गुर बिनु कोइ न उतरसि पारि ॥
(पन्ना ८६४)

--गुर बिनु मोख मुकति किउ पाईऐ ॥
(पन्ना १०४१)

--गुरु जहाजु खेवटु गुरू गुर बिनु तरिआ न कोइ ॥ *(पन्ना १४०१)*

ऐसे अनेक प्रसंग हैं जहां गुरु का महत्व दर्शाया गया है। परमात्मा की अरदास में झुकने वाले मस्तक की ही सार्थकता है :

जो सिरु सांई ना निवै सो सिरु दीजै डारि ॥
(पन्ना ८९)

जो रोग और दवा दोनों को पहचानता है वही असली वैद्य है :

नानक परखे आप कउ ता पारखु जाणु ॥
रोगु दारू दोवै बुझै ता वैदु सुजाणु ॥
(पन्ना १४८)

मनुष्य जैसे कर्मों के बीज बोता है उसमें

वैसा ही फल लगता है, परंतु कई बार मनुष्य बुरे कर्म करता हुआ भी अच्छे फल की कामना करता है जो कि सर्वथा व्यर्थ है :

बीजे बिखु मंगै अंम्रितु वेखहु एहु निआउ ॥
(पन्ना ४७४)

सारा संसार विषय-विकारों से ग्रसा है, आधिदैविक, आधिभौतिक, आधिदैहिक तीनों तापों से ग्रस्त है। केवल एक गुरु है जो सब प्रकार के पापों से मुक्त है :

जो जो दीसै सो सो रोगी ॥
रोग रहित मेरा सतिगुरु जोगी ॥ (पन्ना ११४०)

श्री गुरु अंगद देव जी की बाणी की सरलता एवं अर्थ की गंभीरता ध्यान आकर्षित करती है। आप जी द्वारा उच्चारण किये पावन कथनों में लोकोक्ति बनने की समर्थता उनकी सबसे बड़ी विशेषता है। आपकी बाणी का अधिकतर भाग श्रद्धालुओं की जिह्वा का रस बन कर प्रवाहित हो रहा है। उदाहरण के लिए एक अत्यंत सरल पंक्ति प्रस्तुत है :

नानक अंधा होइ कै रतना परखण जाइ ॥
(पन्ना ९५४)

इसका साधारण अर्थ है कि कोई व्यक्ति अपनी सामर्थ्य से बढ़कर अथवा अपनी मर्यादा, सीमा और स्थिति को न जानता हुआ ऐसा कार्य करने का प्रयत्न करता है जिसकी सामर्थ्य उसमें है ही नहीं, जबकि यदि हम किसी भी कार्य का उदाहरण लें तो उत्तर नकारात्मक ही आएगा क्योंकि व्यक्ति की सामर्थ्य तो है ही नहीं, व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता।

"करे करावै आपै आप" कथन में मनुष्य की कार्य-शक्ति कहां है? जो कार्य होता है, मनुष्य करता है, केवल उस परमात्मा की शक्ति की प्रेरणा से। परमात्मा की इच्छा से, उसकी इच्छा के बिना तो प्राणी सांस तक नहीं, ले सकता फिर कार्य करना तो बहुत दूर की बात है।

निष्कर्षत: श्री गुरु अंगद देव जी की बाणी सारगर्भित है जिसमें मानवीय मूल्यों का सर्वत्र प्रसार है। श्लोक बहुत छोटा काव्य रूप है तथापि उनके विचारों की वेगशीलता इतनी सघन है कि उसमें विशाल एवं गूढ़ रहस्य उसी प्रकार छिपे हुए हैं जैसे कि खानों में बहुमूल्य मणियां। केवल उनको परखने वाले पारखी की ही आवश्यकता है। 

कविता

पंछी की पुकार

लकड़ी काटनहार से, पंछी कहे पुकार।
तनिक वार को रोक के, मन में करो विचार।
बात हमारी ध्यान से, सुन ले काटनहार।
हरी-भरी हर डाल ने, बचा रखा संसार।
हरे-भरे ये झाड़ हैं, धरती मां के चीर।
जिनकी खातिर आ रहा, नील गगन से नीर।
सारे जग की श्वास है, करती इनमें वास।
यों पेड़ों के पास है, जीवन का विश्वास।
बड़ी सम्पदा दे रहे, बिना लिये कुल मोल।
ऐसे पावन पेड़ हैं, धरती पर अनमोल।
जैसा मेरा घोंसला, तैसा यह संसार।
तिनका-तिनका कर रहा, अपना कार-विहार।
सोच, समझ अरु देख ले, तरु काटन के सार।
यों भैय्या तू कर रहा, खुद के ऊपर वार। 

-श्री राधेश्याम सेन 'भुजंग', शिव मंदिर के पास, मंगली पेठ, सिवनी (म. प्र.)-४८०६६१

रोगु दारू दोवै बुझै ता वैदु सुजाणु

-डॉ. देवेंद्रपाल कौर*

संसार में धर्म नामक बहुमूल्य हीरा न होता तो इस दुनिया में न जाने कितना भयंकर हत्याकांड मच रहा होता। यह कल्पना ही दुखदायक प्रतीत होती है। मानव-संस्कृति को प्रफुल्लित करने में धर्म का बहुत बड़ा योगदान है। चिरंतन मानव-मूल्य ही इस मानव-संस्कृति के नियायम तत्व हैं। हमारी संस्कृति में वृद्धों की सेवा करना, अनुशासन, निष्ठापूर्वक कर्त्तव्य-पालन आदि मानवीय गुण हैं। संसार में जब सेवा-भावना का उत्कर्ष होता है तो संसार स्वर्ग बन जाता है। सेवा में छल-कपट को कोई स्थान नहीं देना चाहिए। सेवा से जीवन सर्वगुण-सम्पन्न बन जाता है।

श्री गुरु अंगद देव जी ने पूर्ण आस्था से श्री गुरु नानक देव जी की सेवा की। इसी सच्ची सेवा से प्रसन्न होकर ज्योति-जोत समाने से पूर्व श्री गुरु अंगद देव जी को गुरगद्दी का उत्तराधिकारी घोषित किया। यदि श्री गुरु नानक देव जी ऐसा न करते तो आज सिक्ख पंथ का अस्तित्व कुछ और ही होता। गुरगद्दी सौंपने की इस परंपरा ने सिक्ख पंथ को नवीन दिशा प्रदान की।

गुरु नानक साहिब के पश्चात उनके सपुत्र बाबा सिरीचंद ने अपना एक अलग मत स्थापित कर लिया जिसका नाम 'उदासी मत' रखा। इस उदासी मत का श्री गुरु अंगद देव जी ने डटकर विरोध किया। परमात्मा से विमुख होने वालों को श्री गुरु अंगद देव जी कहते हैं :

जिनी चलणु जाणिआ से किउ करहि विथार ॥
चलण सार न जाणनी काज सवारणहार ॥
(पन्ना ७८७)

इस समय श्री गुरु अंगद देव जी ने हिम्मत से काम लेते हुए लोगों को सिक्ख धर्म के सिद्धांतों की रक्षा करने और इसके अस्तित्व को बनाए रखने के लिए प्रेरित किया। डॉ. गोकुल चंद नारंग 'Transformation of Sikhism' में लिखते हैं कि "दूसरे गुरु द्वारा किए गए कार्यों के फलस्वरूप ही काफी हद तक एक नई सम्पदा की उत्पत्ति हुई और सिक्खों में एक विशेष प्रकार के संगठन के बीज बोए गए।" इस संगठन को बनाए रखने के लिए श्री गुरु अंगद देव जी ने 'पंगत' (लंगर) और 'संगत' को निश्चित रूप प्रदान किया। 'पंगत' द्वारा अतिथि-सत्कार की प्रथा प्रारंभ करने और 'संगत' द्वारा सबको एकत्रित करने का संदेश दिया। इस संगत में सभी धर्मों के लोग इकट्ठे बैठकर गुरु जी के उपदेश सुनते थे।

श्री गुरु अंगद देव जी गुरु नानक साहिब के सच्चे श्रद्धालु एवं शिष्य रहे थे। उन्होंने सच्ची लग्न से सेवा की। इसी कारण गुरगद्दी को प्राप्त किया तभी तो गुरु अंगद देव जी कहते हैं:

नानक परखे आप कउ ता पारखु जाणु ॥
रोगु दारू दोवै बुझै ता वैदु सुजाणु ॥
(पन्ना १४८)

'गुरु' एक सच्चा पारखी होता है जो अपनी कुशलता से जौहरी के समान अपने शिष्य की

**१०५-सी, प्रोफेसर कालोनी, सामने पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला-१४७००२*

परीक्षा करता है। जैसे एक अच्छा वैद्य सही ढंग से रोग की पहचान करके उसका उपचार करता है उसी प्रकार से गुरु शिष्य को परखकर उसे ज्ञान का उपदेश देता है। जब कोई सेवक पूर्ण निष्ठा से अपने स्वामी की सेवा करता है तब उसकी सच्ची लगन के सामने किसी प्रकार की आपत्ति नहीं आती :

एह किनेही चाकरी जितु भउ खसम न जाइ ॥
नानक सेवकु काढीऐ जि सेती खसम समाइ ॥
(पन्ना ४७५)

"हे नानक! सच्चा सेवक वही है जो अपने स्वामी में समा जाए।" सच्ची सेवा उसे सबसे अलग करके एक अमूल्य हीरा बना देती है। सेवा एक ऐसा उत्तम कार्य है जिससे मन विनम्र रहता है, अहंकार का विष मन में नहीं फूटता और मनुष्य परमात्मा के नजदीक हो जाता है। सेवा करना वह कार्य है जिससे सुख प्राप्त होता है, संतुष्टि और शांति मिलती है। श्री गुरु अंगद देव जी ने सेवा, सिमरन और आत्म-रस में सारा जीवन लगा दिया। उस परमात्मा को प्राप्त करने के लिए सच्ची लगन की आवश्यकता है। यह सच्ची लगन तभी संभव होगी जब हम अपने आपको उस परमात्मा में समर्पित कर देंगे। समर्पित तभी कर पाएंगे यदि अच्छे कर्म करेंगे, तभी हउमै जैसे दीर्घ रोग से बाहर आएंगे। तभी तो गुरु जी कहते हैं :

एह किनेही दाति आपस ते जो पाईऐ ॥
नानक सा करमाति साहिब तुठै जो मिलै ॥
(पन्ना ४७४-७५)

अर्थात् वह कैसी दात या उपलब्धि है जो मनुष्य को अपने कर्मों के फल के रूप में मिलती है। हे नानक! सच्ची उपलब्धि तो वह है जो परमात्मा को संतुष्ट करने से प्राप्त होती है। कहने का भाव है कि मानव को सत्य-कर्म करके उस प्रभु को प्रसन्न करना चाहिए।

श्री गुरु अंगद देव जी अपनी बाणी में कहते हैं कि सत्य-स्वरूप परमात्मा की आज्ञा के बिना मानव न तो सांसारिकता से मुक्त हो सकता है और न ही इस संसार रूपी सागर से पार उतर सकता है :

नानक गुरमुखि जाणीऐ जा कउ आपि करे परगासु ॥ *(पन्ना ५१७)*

गुरु जी कहते हैं कि जिस गुरमुख अर्थात् गुरु के अनुयायी को वह परमात्मा जान लेता है उसके हृदय में वह स्वयं ही ज्ञान की रोशनी कर देता है भाव यह है कि परमात्मा गुरु को माध्यम बनाकर प्राणी को ज्ञान प्रदान करता है अर्थात् गुरु उसके रोग को समझकर ही उसकी दवा-दारू करता है।

गुरु जी मानव को यही संदेश देते हैं कि उसे निरंतर भक्ति-रस का पान करना चाहिए अर्थात् जब तक साधक परमात्मा से सच्ची लौ नहीं लगाता तब तक वह परमात्मा को प्राप्त नहीं करता। सच्ची लौ लगाना ही परमात्मा की सच्ची भक्ति है। श्री गुरु अंगद देव जी ने अपनी बाणी द्वारा मानव-संस्कृति को उत्साहित किया। मानव-जीवन में वास्तविक उन्नति का आधार चरित्र की उन्नति ही है। चरित्र से तात्पर्य सदाचार, सद्व्यवहार बाणी की निर्मलता और सरलता, परोपकार, नि:स्वार्थ सेवा का भाव, प्राणियों पर दया और गुणों से है। हमारी संस्कृति की विचार-भूमि उदारवादी एवं समन्वयात्मक है। यदि हम अपने चरित्र की पवित्रता को कायम रखेंगे तो वह परम पिता भी समझदार वैद्य की तरह हमारी रक्षा करेंगे। इस प्रकार श्री गुरु अंगद देव जी अपने आचरण का आदर्श संसार के हित के लिए उत्तराधिकार के रूप में छोड़ गये हैं। 

श्री गुरु अंगद देव जी की चरण-छोह प्राप्त ऐतिहासिक स्थान

*-बीबा मनमोहन कौर**

श्री गुरु अंगद देव जी का जन्म पंजाब में जिला श्री मुक्तसर के गांव मत्ते दी सरां, जिसको आजकल सराय नागा कहा जाता है, में पिता श्री फेरूमल और माता दया कौर (सभराई) के गृह में हुआ। आपकी शादी गांव संघर के श्री देवीचंद मरवाहा की सपुत्री खीवी जी के साथ हुई। आपके गृह दो सपुत्र-भाई दातू जी, भाई दासू जी और दो सपुत्रियां-बीबी अमरो जी, बीबी अनोखी जी का जन्म हुआ। श्री गुरु नानक देव जी ने भाई लहिणा जी को अपना उत्तराधिकारी बना उनका नाम 'अंगद' रख उनको गुरगद्दी सौंप दी। श्री गुरु अंगद देव जी ने अपने जीवन-काल के दौरान समाज-सुधार के लिए, जात-पात, छुआ-छूत को खत्म करने के लिए, लंगर-पंगत की मर्यादा आरंभ की, जिसकी सेवा की जिम्मेदारी उन्होंने अपनी सुपत्नी माता खीवी जी को दी। इसके अलावा उन्होंने एक नए नगर खडूर साहिब की भी स्थापना की और यहां शारीरिक तंदरुस्ती के लिए मल्ल अखाड़े (व्यायामशाला) कायम किए। खडूर साहिब के अलावा आप जी ने एक अन्य नगर गोइंदवाल का निर्माण भी श्री (गुरु) अमरदास जी से करवाया। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में आप जी के ६३ श्लोक अंकित हैं। आप श्री गुरु अमरदास जी को गुरगद्दी की बख्शिश कर ज्योति-जोत समा गए। अपने जीवन-काल के दौरान आप जहां कहीं भी गए, आपके आगमन की याद को सदीवी बनाये रखने के लिए वहीं पर गुरुद्वारा साहिबान सुशोभित किए गए हैं। श्री गुरु अंगद देव जी की याद में सुशोभित गुरुद्वारा साहिबान के बारे में जानकारी प्राप्त करते हुए पहले श्री मुक्तसर जिले के बारे में भी जानते हैं।

श्री मुक्तसर साहिब जिला पंजाब के नए बने जिलों में से एक है। यह बठिंडा-फाजिल्का रेलवे लाइन पर बठिंडा से ७५ किलोमीटर और फाजिल्का से ४८ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। सड़की मार्ग से यह बठिंडा से ५५ किलोमीटर तथा फिरोजपुर से ६० किलोमीटर की दूरी पर है। श्री मुक्तसर साहिब मोगा-अबोहर सड़क (नेशनल हाईवे नं: १६) पर कोटकपुरा से ३२ और मलोट से २९ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। गांव सराय नागा मुक्तसर-कोटकपूरा सड़क पर मुक्तसर तथा कोटकपुरा के मध्य (१६ किलोमीटर की दूरी पर) तथा बरीवाला रेलवे स्टेशन से २ किलोमीटर दूर है।

गुरुद्वारा जन्म-स्थान पातशाही दूसरी, सराय नागा : गांव सराय नागा में श्री गुरु अंगद देव जी का जन्म हुआ। यहां श्री गुरु अंगद देव जी के जन्म की पावन याद में गुरुद्वारा साहिब सुशोभित है जो 'गुरुद्वारा जन्म-स्थान पातशाही दूसरी' के नाम से प्रसिद्ध है। सराय नागा गांव की श्री अमृतसर से दूरी १५० किलोमीटर है। उल्लेखनीय है कि इस गांव में श्री गुरु नानक देव जी तथा श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की याद में भी एक गुरुद्वारा साहिब सुशोभित है।

**८३६३, गली नं: २, गुरु रामदास नगर, सुलतानविंड रोड, श्री अमृतसर।*

खडूर साहिब : खडूर साहिब पंजाब के नए बने जिला तरनतारन की एक तहसील है। यह ब्यास-गोइंदवाल रेलवे लाइन पर ब्यास से २२ किलोमीटर और गोइंदवाल साहिब से ६ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह श्री अमृतसर से ४३ और तरनतारन से १९ किलोमीटर दूर है। जलंधर से श्री अमृतसर जाते समय श्री अमृतसर से १० किलोमीटर पहले स्थित जंडियाला नामक नगर से बायीं तरफ के लिए सड़क खडूर साहिब को जाती है और यहां से खडूर साहिब की दूरी लगभग १५ किलोमीटर है। खडूर साहिब एक ऐसी पावन धरती है जिसको श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के अलावा अन्य सभी गुरु साहिबान की पावन चरण-छोह प्राप्त है। इसी गांव में श्री गुरु अंगद साहिब जी की शादी हुई थी। श्री गुरु नानक देव जी से गुरगद्दी की बख्शिश के उपरांत उनकी आज्ञा के अनुसार ही श्री गुरु अंगद देव जी ने खडूर साहिब में निवास कर इस धरती को धर्म-प्रचार का केंद्र बना यहां पर १५५२ ई: तक निवास किया। इसी जगह श्री गुरु अंगद देव जी ने श्री गुरु अमरदास जी को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर गुरगद्दी की बख्शिश की। इस नगर में श्री गुरु अंगद देव जी के अलावा श्री गुरु नानक देव जी और श्री गुरु अमरदास जी के ऐतिहासिक यादगारी स्थान भी सुशोभित हैं। खडूर साहिब में सुशोभित गुरुद्वारा साहिबान की सेवा-संभाल का कार्य कार सेवा वाले बाबा सेवा सिंघ जी द्वारा किया जा रहा है। खडूर साहिब में विद्यमान गुरुद्वारा साहिबान का वर्णन निम्नांकित है:

१) गुरुद्वारा तप असथान श्री गुरु अंगद देव जी : श्री गुरु नानक देव जी की याद में सुशोभित गुरुद्वारा तपिआना साहिब जी के बिल्कुल सामने ही यह गुरुद्वारा सुशोभित है जहां पर श्री गुरु अंगद देव जी अकाल पुरख की आराधना किया करते थे।

२) गुरुद्वारा श्री दरबार साहिब, (अंगीठा साहिब) : गुरुद्वारा श्री दरबार साहिब (अंगीठा साहिब) उस स्थान पर सुशोभित है जहां श्री गुरु अंगद देव जी के अकाल ज्योति में लीन होने के उपरांत उनका अंतिम संसकार किया गया था। गुरुद्वारा साहिब के नजदीक श्री गुरु अंगद देव जी की सपुत्री बीबी अमरो जी का ऐतिहासिक कुआं भी मौजूद है।

३) गुरुद्वारा माई विराई जी : सिक्ख इतिहास के अनुसार जब श्री गुरु नानक देव जी ने श्री गुरु अंगद देव जी को गुरगद्दी के लिए चुना तो श्री गुरु अंगद देव जी कुछ समय के एकांतवास के लिए खडूर साहिब आ गए। यहां पर वे अपने घर न जाकर माई विराई (भिराई) के घर में रहे। यहीं पर बाबा बुड्ढा जी की अगुवाई में आई संगत को बाबा जी की विनती पर श्री गुरु अंगद देव जी ने दर्शन देकर निहाल किया था। इस गुरुद्वारा साहिब की नई इमारत का निर्माण १९८० ई में हुआ है।

४) गुरुद्वारा साहिब मल्ल अखाड़ा : गुरुद्वारा साहिब मल्ल अखाड़ा उस जगह पर सुशोभित है जहां श्री गुरु अंगद देव जी गांव खडूर के बच्चों को मल्ल अखाड़े में कुश्ती आदि का अभ्यास कराया करते थे। श्री गुरु अंगद देव जी ने इस स्थान पर ही गुरमुखी लिपि के प्रचार और प्रसार के लिए पाठशाला की स्थापना की थी और गुरमुखी लिपि का बाल-बोध (किताबचा) बनवाया था। आजकल यहां श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के पाठ की संथिआ (शुद्ध पठन का अभ्यास कराना) दी जाती है।

गुरुद्वारा साहिब पातशाही दूसरी तथा छठी, हरीके : हरीके जिला तरनतारन की तहसील

पट्टी का गांव है। ब्यास व सतलुज दरिया के संगम-स्थान के किनारे बसे इस गांव को 'हरीके पत्तन' भी कहा जाता है। यह रेलवे स्टेशन मखू से ८ किलोमीटर और श्री अमृतसर से ६० किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। मत्ते दी सरां से गांव संघर आकर बसने के बाद श्री गुरु अंगद देव जी परिवार सहित कुछ समय के लिए गांव हरीके में भी रहे। यहां पर उनका कामकाज कुछ खास न चल सकने के कारण वे परिवार लेकर पुन: गांव संघर लौट गए। इस गांव में छठी पातशाही श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के आगमन का भी समाचार मिलता है। इसलिए इस गांव में श्री गुरु अंगद देव जी तथा श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी की याद को बनाए रखने हेतु गुरुद्वारा साहिब सुशोभित है। गुरुद्वारा साहिब की नई इमारत का निर्माण-कार्य बाबा दया सिंघ सुरसिंघ वालों की देखरेख में किया जा रहा है।

गुरुद्वारा साहिब पातशाही दूसरी, खान छपड़ी

खान छपड़ी जिला तरनतारन का एक गांव है जो डाकघर फतेहाबाद से ५ किलोमीटर और रेलवे स्टेशन तरनतारन से १९ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह एक छोटा-सा गांव है, जिसको श्री गुरु अंगद देव जी, श्री गुरु अमरदास जी, श्री गुरु अरजन देव जी और श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने अपनी पवित्र चरण-छोह की बख्शिश की है।

ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार श्री गुरु अंगद देव जी के खडूर साहिब के निवास के समय जब एक बार गांव में अकाल पड़ गया तो एक तपा योगी, जो गुरु अंगद साहिब के व्यक्तित्व से जलता था, ने गांव वालों को कहा कि श्री गुरु अंगद देव जी के गांव छोड़ जाने के बाद ही गांव में बारिश होगी। जब श्री गुरु अंगद देव जी को पता चला तो वे बाबा बुड्ढा जी को साथ लेकर खडूर साहिब छोड़ कर खानपुर की टिब्बी (टीला) पर चले गए। जब फिर भी बारिश न हुई तो लोगों को अपनी गलती का अहसास हुआ। तब बाबा अमरदास जी, जो गोइंदवाल से खडूर साहिब आए थे, ने लोगों को श्री गुरु अंगद देव जी से क्षमा-याचना के लिए प्रेरित किया। तब गांव वालों ने खानपुर की टिब्बी पर पहुंच कर श्री गुरु अंगद देव जी से क्षमा-याचना की और गुरु साहिब को वापिस खडूर साहिब आकर रहने के लिए विनती की। ऐतिहासिक स्रोत बताते हैं कि श्री गुरु अरजन देव जी एक बार जब खानपुर आए थे तो वे गांव के एक गरीब किसान भाई हीमां की छपरी में रुके थे, जिस कारण इस गांव का नाम खानपुर से खानपुर छपरी (छपड़ी) प्रसिद्ध हो गया। गुरुद्वारा साहिब की मौजूदा इमारत का निर्माण १९७० ई में हुआ।

गुरुद्वारा श्री गुरु अंगद देव जी, भरोवाल

भरोवाल तहसील खडूर साहिब, जिला तरनतारन का एक ऐतिहासिक गांव है। यह तरनतारन के पूर्व की ओर १५ किलोमीटर दूर तरनतारन-गोइंदवाल मार्ग पर स्थित है। रेलवे स्टेशन तरनतारन यहां से १६ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस गांव में श्री गुरु अंगद देव जी खानपुर छपड़ी से खडूर साहिब वापिस जाते समय जिस स्थान पर रुके थे उस स्थान पर गुरु साहिब के आगमन की याद में गुरुद्वारा साहिब सुशोभित है, जिसको पहले 'गुरुआणा' साहिब कहा जाता था लेकिन आजकल यह गुरुद्वारा श्री गुरु अंगद देव जी के नाम से प्रसिद्ध है। गुरुद्वारा साहिब की मौजूदा इमारत का निर्माण सन् १९८० ई में हुआ।



मां की महानता

*-स. जगदीश सिंघ कलानौर**

छोटा-सा शब्द 'मां' पूरे ब्रह्मांड की विशालता अपनी कोख में समोये बैठा है। हमारा गीत-संगीत, रस्म-ओ-रिवाज, हमारा धर्म, विज्ञान या लोकयान भी मां बिना अधूरे हैं। मां प्रकृति की कृति का अनुपम शाहकार है। कुदरत ने मां के हृदय को मोह-ममता, सेवा-साधना, सब्र-सिदक अथवा धैर्य एवं सहन-शक्ति, तप-त्याग जैसे दैवी गुणों के साथ मालामाल किया है।

मां की छत्र-छाया के तले ही बच्चे की शख्सियत का विकास होता है। कोख से कब्र तक किसी न किसी प्रकार से मां हमारे अंग-संग रहती हुई हमारी सहायता करने हेतु सदैव उपस्थित रहती है। बुजुर्ग आयु में भी किसी सिर पर आ गिरे संकट के समय 'हाय मां' स्वत: ही मुंह से निकल जाता है। मां का तसव्वुर ही दिल की डगमगाती नैया को संभालने के लिए पर्याप्त है।

वैसे मां पुत्री के लिए भी कोई बेगानी नहीं होती परंतु पुत्र के लिए मां की ममता का आवेश तो चर्म सीमा को स्पर्श करता है। पुत्र आज्ञाकारी हो तो मां फूली नहीं समाती। इसके विपरीत यदि पुत्र कपुत्र भी निकल आए फिर भी मां की ममता में कोई कमी नहीं आती। किसी की काली करतूतों के कारण जब सब रिश्ते-नाते मुंह मोड़ जाते हैं तो उसको कुल लोकाई दुत्कार देती है तब भी संसार में मात्र एक 'मां' ही है जो पुत्र को सीने के साथ लगाती है और प्यार से अपने भटके बच्चे को पुन: सुमार्ग पर लाने हेतु हर संभव प्रयास करती है। पिता-पुत्र सम्बंधों में कशीदगी के समय पिता की छुरी जैसी तीखी नजरों के आगे भी मां की ममता ढाल बनकर खड़ी हो जाती है। पुत्र किसी भी सीमा तक बिगड़ जाए, मां की आशा फिर भी कायम रहती है। मां का हृदय कहता है कि उसका लाडला एक न एक दिन नेकी की राह पर पुन: लौट आएगा तथा उसकी कोख की लाज रख लेगा।

माताएं गुरबत में स्वयं भूख सह लेती हैं, रोग-सोग के साथ जद्दोजहद करती हैं, संयुक्त परिवार वाले ससुराल घर की धौंस अथवा अकड़ झेलती हैं, परंतु अपने पुत्रों के लालन-पालन में कोई कमी, जहां तक वश चले, नहीं रहने देतीं। पुत्रों की खातिर भर यौवन का विधवापन जैसा क्रूर संताप भी दरगुजर करके मां सहन् कर जाती है। रब को मानवी रूप में सिर्फ मां में से ही ढूंढा जा सकता है। मां बिना प्यार के अर्थ नहीं मिलते, हमारा रब हमसे रूठ जाता है और भरी दुनिया सूनी-सूनी-सी लगने लगती है।

दुनिया भर के अनेकों चिंतकों तथा कवियों ने मां की महिमा में अपनी कलम बेरोक-टोक चला कर 'वाह-वाह' अर्जित की है। साधारण लेखक भी जब मां की बात प्रारंभ करता है तो उसकी कलम में न जाने कहां से रवानी आ जाती है। यह मां की महानता का प्रत्यक्ष प्रमाण ही तो है। जब कभी प्रो. मोहन सिंघ जैसा सक्षम

**सरकारी हाई स्कूल, छोहण (गुरदासपुर)। मो: ९८७२७-६५४९०*

शायर मां का गुणगान करता है तो कोई अलाही नाद छेड़ता है :

मां वरगा घणछावां बूटा, मैनूं नजर न आए।
लै के जिस तों छां उधारी, रब्ब ने सवरग बनाए।

वे भी दिन होते हैं जब मां का पल दो पल का विछोड़ा भी बच्चों के लिए असहनीय होता है। दूर से आती मां को छूने के लिए दौड़ें लगाई जाती हैं--'मां मेरी है', 'मां मेरी है' के निश्छल झगड़े होते हैं। फिर वे भी दिन आते हैं जब मां ढलती शाम बन जाती है तथा पुत्र शिखर दोपहरा। मां अपने फर्जों से फारिग होती है तो पुत्रों के फर्जों की परख शुरू होती है। पुत्रों में पुन: झगड़े होते हैं, लेकिन ये झगड़े बचपन वाले निश्छल झगड़े नहीं बल्कि छल-कपट तथा स्वार्थ वाले झगड़े होते हैं। हर पुत्र कहता सुनाई देगा, 'मां तेरी है! मां तेरी है!' ऐसी स्थिति में मां की ममता का सम्मान कैसे टूटता है यह तो मां का हृदय ही जानता होगा।

नये-निवेले निर्माण हो रहे वृद्ध-घर अथवा वृद्ध-आश्रम हमारे पदार्थक विकास की साक्षी तो देते हैं परंतु साथ-साथ हमारी नैतिक गिरावट की चुगली भी किये जाते हैं। कहीं बसते-रसते पुत्र माता-पिता को वृद्ध-घरों के सहारे छोड़ दें और कहीं वृद्ध दंपत्ति को बांट-बिखेर कर दिनों-महीनों की बारियां बांध कर रखा जाए। ये नये जमाने की नयी बलामतों की अलामतें नहीं तो और क्या है? गुजरे भले वक्त में लोग ऐसा रूखापन तो पालतू भैंसों, गायों या बैलों के साथ भी नहीं किया करते थे। उनका कहना था-"हमने इनका दूध पीया है, इनकी कमाई खाई है, अब अंत में इनकी सेवा-संभाल करना हमारा धर्म है।"

पैसे के प्रताप वाले वर्तमान समय में कई बड़े-बड़े अफसर-पुत्र माताओं को महंगे-महंगे अस्पतालों में दाखिल करा आते हैं और उनकी सेवा-संभाल का दायित्व डॉक्टरों, नरसों तथा नौकरों-चाकरों को थमा कर स्वयं अपने घरों में आकर 'परिवार' सहित सुख की नींद सोते हैं। क्या उनकी रूह को शांति आ सकती है? धन-संपदा का प्रभाव कितना भी तेज हो, मां की हाथों से की सेवा के प्रताप से वह सदैव फीका ही रहेगा। जब हम लोग आज बीमार मां से 'कीटाणुओं' के भय से भयभीत होकर दूरी बनाये रखते हैं तो हम भूल जाते हैं कि 'भय के कीटाणु' 'बीमारी के कीटाणुओं' से कहीं अधिक घातक सिद्ध होते हैं। ऐसे भय, स्वार्थ, ऐसी डरपोकता, अकृतघ्नता तथा अकड़पन की छाया हमारे तन-मन को रोगी और हमारी शख्सियत को बौना बनाये रखती है।

धन-संपदा, ऐश्-ओ-आराम तथा झूठी प्रसिद्धि की हवस की अंधी दौड़ में शामिल होकर हमने वस्तुत: घरेलू शांति गंवा ली है। दुनिया की कोई सौगात, दुनिया का कोई भी रुतबा या सम्मान मां की आशीष के सामने तुच्छ है।

मां की महानता को आत्मसात करके अपने हाथों से मां की सेवा में तत्पर रहना ही नेक नीयत की सही तर्जमानी है। समाज-सेवा का पहला पाठ भी मां-सेवा से ही आरंभ होता है।



खुली आंख से सोना

-डॉ. नरेश*

आपको अद्‌भुत लगेगा, यदि मैं कहूं कि आप काफी देर खुली आंखों से भी सोते हैं और बहुत-से काम आप सुप्तावस्था में ही करते रहते हैं। ये कर्म क्योंकि आपने नींद में किए होते हैं, इसलिए आपको यह पता भी नहीं चलता कि आपने इन कर्मों को क्यों या कब किया है। कभी, किसी समय, अपने को ध्यान से देखें। हो सकता है, इसी समय यह लेख पढ़ते हुए आपका पैर हिल रहा हो या आप अपने बालों में उंगलियां फेर रहे हों। क्यों हिला रहे हैं पांव को आप? या क्यों उंगलियां फेर रहे हैं बालों में? आपका उत्तर होगा, कहां, मैं कहां हिला रहा हूं पांव या कहां फेर रहा हूं बालों में उंगलियां? आप झूठ नहीं बोल रहे हैं। वास्तव में, आपको पता ही नहीं कि आपने कब पांव हिलाना या बालों में उंगलियां फेरना शुरू कर दिया और कब से यही करते चले आ रहे हैं।

इसका कारण स्पष्ट है कि पत्रिका पढ़ते समय आप सो रहे थे। आपकी आंखें खुली थीं लेकिन आप निद्रा में थे। निद्रा में, अनजाने में, आप क्या करते रहे हैं, इसका बोध ही नहीं था आपको। ऐसी अवस्थाओं में से दिन में कितनी ही बार गुजरते हैं आप। सड़क पर चले जा रहे हैं, हाथों की मुद्राएं बना रहे हैं। कोई आपसे पूछे, इसका प्रयोजन? आपको तो पता ही नहीं कि कब आपने हाथों को घुमाना शुरू कर दिया था।

पत्रिका पढ़ रहे हैं आप। अभी पिछले पृष्ठ पर जो कुछ पढ़ा था, याद है आपको? पढ़ते-पढ़ते भूल जाते हैं आप कि क्या पढ़ा था। पन्ने उलटकर विश्वास करना चाहते हैं कि जो इस समय दिमाग में आ रहा है, वह सचमुच ही इस पत्रिका में पढ़ा था आपने। गुरबाणी का पाठ करती हुई स्त्रियां प्राय: बीच-बीच में बहू को आग पर रखे दूध का ध्यान रखने की हिदायत देती रहती हैं; व्यर्थ में चल रहे नल को बंद करने या बाहर वाला दरवाजा ठीक से बंद करने का या फोन सुनने का आदेश देती रहती हैं। क्षमा करना, गुरबाणी का पाठ तो वास्तव में वे सुप्तावस्था में ही कर रही होती हैं, जागृत अवस्था में तो उनका सारा ध्यान घर-गृहस्थी के कामों में पड़ा होता है।

यदि आप नहाने के बाद पाठ करने के आदी हैं तो कभी हिसाब लगाकर देखें कि क्या आपके जीवन में एक भी दिन ऐसा आया है कि पाठ करते समय आपका दिमाग मात्र पाठ पर ही केंद्रित रहा हो, अन्यत्र कहीं न दौड़ा हो? पाठ करते-करते आप अपने दिन भर के क्रिया-कलाप का निर्णय कर लेते हैं। दफ्तर पहुंचते ही किसे फोन करना है, किसे पत्र लिखना है, किससे मिलने का समय निश्चित करना है, किसे घर पर बुलाना है आदि-आदि के फैसले पाठ के दौरान ही कर जाते हैं आप। लेकिन वस्तुत: पाठ तो कर ही रहे होते हैं आप इस दौरान, परन्तु होता यह है कि यदि आपको अचानक बीच में टोक दिया जाए तो यह तक आपको याद नहीं होता कि पाठ की किस पंक्ति पर थे आप। इसी से आप क्रुद्ध हो उठते हैं पाठ में से बुलाए जाने पर। क्रोध का कारण यह नहीं होता कि आपकी आत्मा ब्रह्मानंद में डूबी हुई थी और बुलाने वाले ने अचानक उसका रस भंग कर दिया बल्कि यह कि अब सारा पाठ शुरू से करना होगा क्योंकि याद ही नहीं कहां तक पढ़ लिया था। तात्पर्य यह कि आपका पाठ सुप्तावस्था में हो रहा था, जागृतावस्था में तो आप दिन भर के कामों की सूची बना रहे थे। कम से कम गुरबाणी-पाठ या नाम-सिमरन करते समय हम खुली आंख से न सोएं, प्रभु हम पर ऐसी कृपा बनाएं!



*१६९, सेक्टर-१७, पंचकूला-१३४१०९ (हरियाणा)

पुस्तक-समीक्षा

पुस्तक : जपु जी साहिब : विचार व्याख्या *प्रकाशक : स. भुपिंदर सिंघ (कालड़ा)*
लेखिका : डॉ. मनजीत कौर *पृष्ठ : ११९*
दूरभाष : ०१४१-२६५०३७०, मोः ०९९२९७६२५२३ *मूल्य : रु १२५.००*

'जपु जी साहिब : विचार व्याख्या' हिंदी भाषा तथा देवनागरी लिपि में रचित एक गंभीर चिंतन-मनन रूप उद्देश्यपूर्ण कृति है। सिक्ख धर्म के संस्थापक गुरु नानक साहिब जी महाराज की पावण बाणी 'जपु' को सर्वप्रिय रूप में 'जपु जी साहिब' के नाम से ख्याति प्राप्त है। गुरु साहिब की समस्त पावन बाणी दैवी आवेश रूप में उच्चारण की गई है। 'जपु जी साहिब' गुरु ग्रंथ साहिब की प्रथम बाणी है। यह अमृत-संचार की भी प्रथम बाणी है और सिक्ख नित्तनेम की भी प्रथम बाणी है। यह पावन बाणी गुरु-काल से गुरसिक्खों को कंठस्थ बाणी के रूप में अपनी व्यापक सर्वप्रियता का प्रमाण प्रस्तुत करती है। गुरु-काल से ही इस बाणी पर गुरु-घर के प्रमाणिक चिंतकों ने इस बाणी का तत्व-सार साधारण पाठकों और आध्यात्मिक जिज्ञासुओं की जिज्ञासा का प्रतिउत्तर देते हुए प्रस्तुत करने की चेष्टा की है। आधुनिक काल में गैरसिक्ख चिंतक भी इस बाणी के अध्यापन-विश्लेषण की ओर आकृष्ट हुए दृश्टव्य होते हैं। इस संदर्भ में डॉ. मनजीत कौर द्वारा इस पावन बाणी की विचार-व्याख्या, इस व्यापक परिपाटी रूप श्रृंखला का ही एक हिस्सा मानी जा सकती है।

डॉ. मनजीत कौर ने जपु जी साहिब के विचार की व्याख्या पूर्णतः एक निष्ठावान श्रद्धालु की हैसीयत से भावावेश रूप में की है। यह इस दार्शनिक बाणी के विचार-तत्व को पाठकों तक अत्यंत सरल एवं सरस, सुंदर एवं मनोरम शैली में पहुंचाने का एक सफल प्रयास है। लेखिका ने अपने हार्दिक भाव-प्रवाह तथा विचार प्रवाह के साथ-साथ प्रो. साहिब सिंघ, प्रिं. तेजा सिंघ, ज्ञानी शेर सिंघ और ज्ञानी हरबंस सिंघ आदि प्रमाणिक तथा प्रसिद्धि-प्राप्त विद्वानों की खोज व अध्ययन का खुलासा भी पाठकों के सन्मुख करने का उद्यम किया है। चूंकि यह मात्र सटीक नहीं बल्कि व्याख्या है इसलिए इसमें श्री गुरु ग्रंथ साहिब की और पावन बाणी को भी आवश्यकता अनुरूप कलमबद्ध किया है जो एक कारगर युक्ति तो है ही साथ-साथ लेखिका की इस अद्वितीय ग्रंथ के प्रति बेहद निर्मल श्रद्धा-भावना की भी द्योतक है। श्रद्धा के भावावेश में विचार स्पष्टता को कहीं भी आंखों से ओझल नहीं किया गया। इसके साथ-साथ लोकप्रचलित विचार प्रवाह से भी लाभ लेने का लेखिका का पैंतरा पूर्णतः उपयोगी है। कुल मिलाकर यह पुस्तक बेहद प्रशंसा की पात्र है फिर भी यह छुपाना सही न होगा कि गुरबाणी में कहीं-कहीं पर रही मामूली-सी त्रुटियां सजग पाठकों को स्वाभाविक ही रड़केंगी। 'गुरमति ज्ञान' के पाठकों के लिए चाहे यह विचार-व्याख्या अपरिचित नहीं फिर भी उनके लिए इसको पुस्तक रूप में प्राप्त करना अपनी प्रकार का लाभदायक सुकर्म होगा। सर्वसाधारण हिंदी पाठकों, व्याख्यानकारों और सिक्ख धर्म के विचार-तत्व की प्राप्ति की अभिलाषा रखने वालों के लिए यह पुस्तक एक उपयोगी तथा अमूल्य निधि है। लेखिका के इस उद्यम की हार्दिक प्रशंसा करनी उचित होगी।



ख़बरनामा

अमृतधारी सिक्ख को अदालत में जाने से रोकना सिक्खों की भावनाओं से खिलवाड़

अमृतसर। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने पाकिस्तान में एक अमृतधारी सिक्ख स. अजीत सिंघ को कृपाण पहने होने के कारण लाहौर हाई कोर्ट में दाखिल होने से रोके जाने सम्बंधी छपी खबर पर तीखा प्रतिक्रम प्रकट करते हुए कहा कि पाकिस्तानी सुरक्षा अधिकारियों की इस कार्यवाही से सिक्खों की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंची है जिससे सिक्खों में भारी आक्रोष पाया जा रहा है।

यहां से जारी एक प्रेस विज्ञप्ति में उन्होंने कहा कि कृपाण अमृतधारी सिक्खों की शख्सियत का अभिन्न अंग है और वे इसे किसी भी हालत में शरीर से अलग नहीं कर सकते। उन्होंने कहा कि पड़ोसी देश पाकिस्तान के अस्तित्व में आने से पहले से वहां के निवासियों का भारतीय लोगों के सभ्याचार तथा रस्मों-रिवाज के साथ-साथ सिक्खों की धार्मिक रीतियों से भली-भांति परिचित होने के बावजूद भी ऐसा करने से जाहिर है कि यह सब पाकिस्तान में बसते अल्पसंख्यक सिक्खों को तंग-परेशान करने की भावना से किया जा रहा है। उन्होंने इस घटना की जोरदार निंदा करते हुए भारत के प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंघ को लिखे पत्र में मांग की है कि वे पाकिस्तान में बसते अल्पसंख्यक सिक्खों की धार्मिक स्वतंत्रता को कायम रखने के लिए पाकिस्तान सरकार से शीघ्र बात करें।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने भाई सुरिंदर सिंघ रागी के देहांत पर शोक व्यक्त किया

अमृतसर। जून १९८४ में श्री हरिमंदर साहिब पर हुए फौजी हमले के दौरान भी श्री हरिमंदर साहिब में कीर्तन की सेवा जारी रखने वाले रागी भाई सुरिंदर सिंघ पटना साहिब वाले के देहांत पर शिरोमणि गु: प्र: कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने गहरा शोक व्यक्त किया है। भाई सुरिंदर सिंघ ने १९७५ से १९८७ तक श्री हरिमंदर साहिब में कीर्तन करने की सेवा निभाई। जत्थेदार अवतार सिंघ ने अरदास की है कि अकाल पुरख भाई सुरिंदर सिंघ को अपने चरणों में निवास बख्शे तथा उनके परिवार को भी उनके भांति पंथक-सेवा में जुटे रहने का बल प्रदान करे।



प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, अमृतसर से प्रकाशित किया। संपादक स. सिमरजीत सिंघ। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-०१-२०११